प्रबोधिनी

कक्षा 9 (हिंदी)

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर

पाठ्य पुस्तक निर्माण समिति

पुस्तक – प्रबोधिनी (हिंदी) कक्षा–9

संयोजक :– डॉ. नरेन्द्र कुमार पानेरी, व्याख्याता

श्री गोविन्द गुरु राजकीय महाविद्यालय, बाँसवाड़ा

सदस्यगण :– 1. राकेश कुमार शर्मा, व्याख्याता

श्री सन्त सुन्दरदास राजकीय महाविद्यालय, दौसा

2. कमल किशोर शर्मा, व्याख्याता

राजकीय वरिष्ठ उपाध्याय संस्कृत विद्यालय, भरतपुर

3. महेश चन्द्र शर्मा, वरिष्ठ अध्यापक

राजकीय वरिष्ठ उपाध्याय संस्कृत विद्यालय,

कुण्ड गेट, सावर, अजमेर

4. मिश्रीलाल प्रजापति, सचिव,

आदर्श शिक्षण संस्थान, जोधपुर

5. श्रीमती यशोदा दशोरा, प्रधानाध्यापिका

राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय,

प्रतापनगर , उदयपुर

आभार

सम्पादक मंडल एवं माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर उन सभी लेखकों का आभार एवं कृतज्ञता व्यक्त करता है जिनके अमूल्य सृजन एवं विचार इस पुस्तक में सम्मिलित किये गये हैं।

यद्यपि इस पुस्तक में मुद्रित समस्त सामग्री का स्वत्वाधिकार का ध्यान रखा गया है फिर भी यदि कुछ अंश रह गये हों तो यह सम्पादक मंडल इसके लिए खेद व्यक्त करता है। ऐसे स्वत्वाधिकारी से सूचित होने पर हमें प्रसन्नता होगी।

पाठ्यक्रम समिति

पुस्तक – प्रबोधिनी (हिंदी) कक्षा–9

संयोजक – डॉ. आशीष सिसोदिया, सहायक आचार्य
हिंदी विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

सदस्य –

1. डॉ. दीपिका विजयवर्गीय, व्याख्याता
राजकीय स्नातकोत्तर महिला कॉलेज, चौमूं जिला–जयपुर

2. डॉ. नवीन नन्दवाना, सहायक आचार्य हिन्दी विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

3. श्री संजय कुमार शर्मा
डाइट , हनुमानगढ़

4. श्री रमाशंकर शर्मा, व्याख्याता
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, धौलपुर

5. श्री अशोक कुमार शर्मा, वरिष्ठ अध्यापक
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, रलावता, अजमेर

6. श्री महेश चन्द्र शर्मा, वरिष्ठ अध्यापक
राजकीय वरिष्ठ उपाध्याय संस्कृत विद्यालय, कुण्डगेट, सावर, अजमेर

अभीष्ट

'प्रबोधिनी' माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान हेतु कक्षा नवमीं के हिन्दी विषय हेतु निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुरूप तैयार की गई है। 'हिन्दी भाषा' अपने सामर्थ्य में वृद्धि करते हुए विश्व में सम्पर्क भाषा के रूप मे तीव्रता से प्रसारित हो रही है। ऐसी स्थिति में स्वाभाविक है कि अपने प्रदेश के विद्यालयों के विद्यार्थी हिन्दी भाषा के व्यवहार में विशेष दक्षता अर्जित करें। भाषा के साथ पुस्तक में संकलित विषय–वस्तु के माध्यम से विद्यार्थियों में आत्मबल, त्याग, बलिदान, निःस्वार्थ सेवा, जीव–दया के साथ राष्ट्र भक्ति की भावना पुष्ट करने का प्रयास किया गया है।

साहित्य जीवन को दिशा प्रदान करता है। इसी आधार पर सरस एवं सरल विषय–वस्तु के प्रतिनिधि लेखकों और कवियों की रचनाओं के उन अंशों को संकलित किया गया है, जो विद्यार्थियों को सचेष्ट कर समाज और राष्ट्र के नवोन्मेष हेतु अभीष्ट कर्म–पथ पर अग्रसर कर सकें। विषय–वस्तु एवं भाषायी शिक्षण के साथ शिक्षक की अभिप्रेरणा की व्यापक सम्भावना इस पुस्तक में है। सामयिक सन्दर्भों में संस्कृति और मानवीय मूल्यों से सम्पन्न व्यक्तित्व के विकास की दृष्टि से पुस्तक उपादेय सिद्ध होगी।

प्रस्तुत संकलन में गद्य–पद्य भाग इस तरह से संजोए गए है कि पठन सामग्री समग्रभावेन हिन्दी साहित्य का लघु चित्रण प्रत्यक्ष कर सके।

गद्य साहित्य की प्रचलित अधिकांश विधाओं से सम्बद्ध अध्यायों का संकलन कर साहित्य की विविध विधाओं की सामान्य जानकारी परोक्ष रूप से उपलब्ध करायी गयी है। काव्य खण्ड में कालक्रम से प्रमुख कवियों के काव्यांशों के माध्यम से प्रवृत्ति बोध एवं कवि की विशिष्टताओं को अभिव्यंजित कर विद्यार्थियों को साहित्य के आनन्दमय अभिप्रेरित स्वरूप के प्रति आकृष्ट किया गया है।

हमारा प्रयत्न रहा है कि पुस्तक के पाठ निर्दोष बनें, फिर भी मानवीय दुर्बलता वश कुछ दोष सुविज्ञ शिक्षकों एवं जिज्ञासु विद्यार्थियों के ध्यान में आयें तो उनका परामर्श सहर्ष अनुकरणीय एवं स्वागत योग्य रहेगा।

'प्रबोधिनी' में संकलित सभी रचनाकारों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए विद्यार्थियों में सर्वांगीण अभीष्ट के पल्लवन हेतु यह पाठ्य पुस्तक प्रस्तुत है।

सम्पादक मण्डल

हिंदी पाठ्यक्रम

विषय कोड : 01

समय 3.15 घंटे **पूर्णांक : 100**

अधिगम क्षेत्र	अंक
अपठित बोध	05
रचना	15
व्यावहारिक व्याकरण	15
पाठ्यपुस्तक– प्रबोधिनी	65

खण्ड–1

अपठित बोध **05 अंक**

(क) अपठित गद्यांश 2½

(ख) अपठित पद्यांश 2½

खण्ड–2

रचना **15 अंक**

निबन्ध लेखन 10

पत्र लेखन (प्रार्थना पत्र, शिकायती पत्र, पारिवारिक पत्र, संवेदना पत्र) 05

खण्ड–3

व्यावहारिक व्याकरण **15 अंक**

संज्ञा, सर्वनाम 02

संधि, उपसर्ग, प्रत्यय 05

पर्यायवाची, विलोम शब्द 02

शब्द शुद्धि 02

वर्ण विचार एवं आक्षरिक खंड 02

लिंग, वचन 02

खण्ड–4

पाठ्यपुस्तक–प्रबोधिनी **65 अंक**

(क) 1 व्याख्या गद्य भाग से (विकल्प सहित) 08

(ख) 1 व्याख्या पद्य भाग से (विकल्प सहित) 08

(ग) 2 निबन्धात्मक प्रश्न (1 गद्य एवं 1 पद्य भाग से विकल्प सहित) $2 \times 5 = 10$

(घ) 6 लघूत्तरात्मक प्रश्न (3 गद्य एवं 3 पद्य भाग से) 6 x 3=18

(ड) 4 अति लघूत्तरात्मक प्रश्न (2 गद्य एवं 2 पद्य भाग से) 4 x 2=8

(च) किन्हीं दो रचनाकारों का परिचय (कवि एवं लेखक) 2 x 4=8

(छ) सड़क सुरक्षा से सम्बन्धित दो प्रश्न 05
(पहला दो अंक तथा दूसरा तीन अंक)

निर्धारित पुस्तक :

प्रबोधिनी – माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

DIKSHA

DIKSHA ऐप कैसे डाउनलोड करें ?

विकल्प 1 : अपने मोबाइल ब्राउजर पे **diksha.gov.in/app** टाइप करें।
विकल्प 2 : अपने एंड्राइड मोबाइल के Google Playstore पर Diksha NCTE खोजे और ''डाउनलोड'' बटन को दबा कर app को Install करें।

मोबाइल पर QR कोड का उपयोग कर डिजिटल पाठ्य सामग्री कैसे प्राप्त करें

DIKSHA ऐप लॉन्च करें | ऐप अनुमतियों को स्वीकारें | उपयुक्त उपयोगकर्ता प्रोफाइल का चयन करें

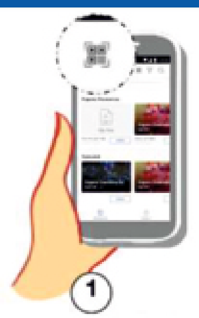

1. पाठ्य पुस्तकों में QR कोड स्कैन करने के लिए DIKSHA ऐप में दिए गए QR कोड आइकॉन को टेप करें।

2. डिवाइस को QR कोड की दिशा में इंगित करें और QR कोड के ऊपर केंद्रित करें।

3. सफल स्कैन पर, QR कोड से जुड़ी डिजिटल पाठ्य सामग्री सूचीबद्ध है।

कम्प्यूटर पर DIAL कोड का उपयोग कर डिजिटल पाठ्य सामग्री कैसे प्राप्त करें

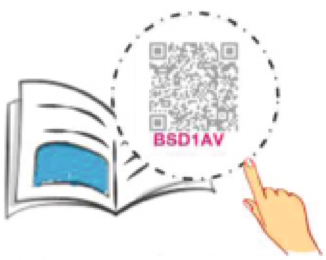

1. पाठ्यपुस्तक में QR के नीचे 6 अंकों का एक कोड रहता है जिसे DIAL कोड कहते हैं।

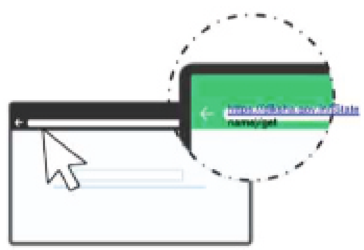

2. ब्राउजर पर diksha.gov.in/rj/get टाइप करें।

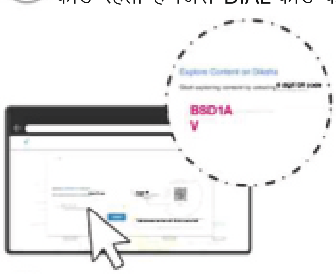

3. सर्च बार में 6 अंकों का DIAL कोड टाइप करें।

4. सभी उपलब्ध पाठ्य सामग्री की सूची देखिए और किसी भी नए पाठ्य सामग्री को क्लिक करें और देखे।

राज्य के अधिकारियों और शिक्षकों के संवर्ग ने तकनीकी नवाचार को एक वास्तविकता बनाने के लिए बहुत प्रयास किए है। कुछ मूल्यवान योगदानकर्ताओं के नाम इस QR कोड के साथ प्रदान किए गए है। योगदानकर्ताओं की सूची देखने हेतु उपयुक्त निर्देशों का प्रयोग करते हुए इस QR कोड स्कैन करें।

I6CS4R

अनुक्रम

गद्य खण्ड

1.	युवाओं से – स्वामी विवेकानन्द	–	2
2.	नींव की ईंट – रामवृक्ष बेनीपुरी	–	8
3.	छोटा जादूगर– जयशंकर प्रसाद	–	12
4.	दीनों पर प्रेम– वियोगी हरि	–	18
5.	भोलाराम का जीव– हरिशंकर परसाई	–	23
6.	गिल्लू – महादेवी वर्मा	–	30
7.	दीपदान– रामकुमार वर्मा	–	36
8.	नदी, आस्था और कुम्भ– डॉ. श्रीराम परिहार	–	57
9.	अभ्यर्पण– संकलित	–	64
10.	कैलास मानसरोवर– तरुण विजय	–	71
11.	प्रेरक–जीवन – संकलित	–	76

पद्य खण्ड

1.	कबीर– साखी, पद	–	85
2.	सूरदास– बाल लीला, वृन्दावन लीला	–	88
3.	तुलसीदास– केवट का भाग्य	–	91
4.	बिहारी– नीति, भक्ति के दोहे	–	95
5.	मीराँ– कृष्णानुराग के पद	–	99
6.	रहीम– भक्तिपरक बरवै, दोहे	–	102
7.	माखनलाल चतुर्वेदी– अभिलाषा	–	105
8.	श्यामनारायण पाण्डेय– पूजन	–	108
9.	रामधारी सिंह दिनकर– श्रीकृष्ण का दूत कार्य	–	111
10.	सुभद्रा कुमारी चौहान– मेरा जीवन	–	116
11.	सूर्यमल्ल मीसण– वीर नारी	–	119
	विशेष खण्ड– सड़क सुरक्षा	–	123

गद्य खण्ड

पाठ–1

युवाओं से

स्वामी विवेकानन्द

I7RU1H

जन्म –12 जनवरी 1863 ई.
मृत्यु – 04 जुलाई 1902 ई.

लेखक परिचय–

आधुनिक युग के द्रष्टा, युवा संन्यासी के रूप में भारतीय संस्कृति की सुगन्ध विदेशों में बिखेरने वाले साहित्य, दर्शन और इतिहास के विद्वान स्वामी विवेकानन्द का मूल नाम नरेन्द्रनाथ दत्त था। युवावस्था में नरेन्द्रनाथ पाश्चात्य दार्शनिकों के निरीश्वर भौतिकवाद तथा ईश्वर के अस्तित्व में दृढ़ भारतीय विश्वास के कारण गहरे द्वन्द्व से गुजर रहे थे, तभी बंगाल में काली माँ के अनन्य उपासक पूज्य रामकृष्ण परमहंस की दिव्य दृष्टि ने उन्हें ईश्वर की सर्वोच्च अनुभूति का मार्ग प्रशस्त किया। रामकृष्ण परमहंस ने नरेन्द्र को आत्म दर्शन कराकर विवेकानंद बना दिया।

विवेकानंद बड़े स्वप्न दृष्टा थे। उन्होंने एक ऐसे समाज की कल्पना की थी जिसमें धर्म या जाति के आधार पर मनुष्य–मनुष्य में कोई भेद नहीं रहे। उन्होंने वेदान्त की मानवतावादी व्याख्या कर मानववाद का प्रचार किया। स्वामी जी ने अमेरिका के शिकागो में सन् 1893 में आयोजित ''विश्व धर्म महासभा'' में भारत की ओर से सनातन धर्म का प्रतिनिधित्व कर –

''मेरे अमरीकी भाइयों एवं बहनों !''

सम्बोधन से अपने व्याख्यान को प्रारम्भ कर श्रोताओं का सहज आकर्षण अपनी ओर कर लिया। भारत का अध्यात्म से परिपूर्ण वेदान्त दर्शन सम्पूर्ण विश्व में विवेकानंद की वक्तृता के कारण ही प्रतिष्ठित हो सका। स्वामी विवेकानन्द का जन्म दिन 12 जनवरी 'राष्ट्रीय युवा दिवस' के रूप में मनाया जाता है। उनके द्वारा स्थापित रामकृष्ण मिशन आज भी विवेकानन्द के विचारों को प्रसारित कर रहा है।

मुख्य रचनाएँ– योग, राजयोग, ज्ञानयोग।

पाठ परिचय

संकलित पाठ में स्वामी विवेकानन्द के व्याख्यान के माध्यम से भारत के नवयुवकों को चरित्र निर्माण की शिक्षा देते हुए उन्हें राष्ट्र के नव निर्माण के लिए प्रेरित किया है । वर्तमान में युवाओं को शारीरिक दृष्टि से मजबूत, निर्भय तथा ऐसे नवयुवकों की आवश्यकता है जो अपने आप में अपनी शक्ति में विश्वास करते हो । विवेकानन्द की दृष्टि से नास्तिक वह है जो अपने आप में विश्वास नहीं करता । भारत के राष्ट्रीय आदर्श त्याग और सेवा को अपना कर गरीबों, भूखों और पीड़ितों की सेवा में

अपने को अर्पित करना ही राष्ट्र की सबसे बड़ी सेवा है। राष्ट्र भक्ति कोरी भावना नहीं है, उसका आधार विवेक और प्रेम है जिसकी अभिव्यक्ति विवेकपूर्ण कार्य करते हुए बाहरी भेदभाव को भूल कर हर एक मनुष्य से प्रेम करने में देखी जा सकती है। विवेकानन्द के उपदेश का ध्येय वाक्य है, 'उठो, जागो और तब तक रूको नहीं, जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाये। व्याख्यान का अंश होने के कारण यह निबंध 'सम्बोधन' शैली में लिखा गया है।

युवाओं से

मेरी आशा, मेरा विश्वास नवीन पीढ़ी के नवयुवकों पर है । उन्हीं से, मैं अपने कार्यकर्ताओं का निर्माण करूँगा । वे एक केन्द्र से दूसरे केन्द्र का विस्तार करेंगे – और इस प्रकार हम धीरे–धीरे समग्र भारत में फैल जायेंगे । भारतवर्ष का पुनरूत्थान होगा, पर वह शारीरिक शक्ति से नहीं, वरन् आत्मा की शक्ति द्वारा । वह उत्थान विनाश की ध्वजा लेकर नहीं, वरन् शांति और प्रेम की ध्वजा से ।

भारत के राष्ट्रीय आदर्श हैं– त्याग और सेवा । आप इन धाराओं में तीव्रता उत्पन्न कीजिए और शेष सब अपने आप ठीक हो जायेगा । तुम काम में लग जाओ फिर देखोगे, इतनी शक्ति आयेगी कि तुम उसे संभाल न सकोगे । दूसरों के लिए रत्ती–भर सोचने, काम करने से भीतर की शक्ति जाग उठती है । दूसरों के लिए रत्ती–भर सोचने से धीरे–धीरे हृदय में सिंह का सा बल आ जाता है । तुम लोगों से मैं इतना स्नेह करता हूँ, परंतु यदि तुम लोग दूसरों के लिए परिश्रम करते–करते मर भी जाओ, तो भी यह देखकर मुझे प्रसन्नता ही होगी।

केवल वही व्यक्ति सबकी अपेक्षा उत्तम रूप से कार्य करता है, जो पूर्णतया निःस्वार्थ है, जिसे न तो धन की लालसा है, न कीर्ति की और न किसी अन्य वस्तु की ही और मनुष्य जब ऐसा करने में समर्थ हो जायेगा, तो वह भी एक बुद्ध बन जायेगा, उसके भीतर से ऐसी शक्ति प्रकट होगी, जो संसार की अवस्था को सम्पूर्ण रुप से परिवर्तित कर सकती है ।

हमेशा बढ़ते चलो ! मरते दम तक गरीबों और पददलितों के लिए सहानुभूति यही हमारा आदर्श वाक्य है । वीर युवकों ! बढ़े चलो ! ईश्वर के प्रति आस्था रखो । दुखियों का दर्द समझो और ईश्वर से सहायता की प्रार्थना करो । वह अवश्य मिलेगी ।

तुम लोग ईश्वर की संतान हो, अमर आनंद के भागी हो, पवित्र और पूर्ण आत्मा हो। अतएव तुम कैसे अपने को जबरदस्ती दुर्बल कहते हो ? उठो, साहसी बनो, वीर्यवान होओ। सब उत्तरदायित्व अपने कंधे पर लो– यह याद रखो कि तुम स्वयं अपने भाग्य के निर्माता हो । तुम जो कुछ बल या सहायता चाहो, सब तुम्हारे ही भीतर विद्यमान है।

एक बात पर विचार करके देखिए, मनुष्य नियमों को बनाता है या नियम मनुष्य को बनाते हैं ? मनुष्य रूपया पैदा करता है या रूपया मनुष्य को पैदा करता है ? मनुष्य कीर्ति और नाम पैदा करता है या कीर्ति और नाम मनुष्य पैदा करते हैं ? मेरे मित्रों, पहले मनुष्य बनिए, तब आप देखेंगे कि वे

सब बाकी चीजें स्वयं आपका अनुसरण करेंगी । परस्पर के घृणित द्वेषभाव को छोड़िए और सदुद्देश्य, सदुपाय एवं सत्साहस का अवलम्बन कीजिए। आपने मनुष्य जाति में जन्म लिया है, तो अपनी कीर्ति यहीं छोड़ जाइए ।

हमें केवल मनुष्यों की आवश्यकता है, और सब कुछ हो जायेगा, किन्तु आवश्यकता है वीर्यवान, तेजस्वी, श्रद्धासम्पन्न और अन्त तक कपटरहित नवयुवकों की। इस प्रकार के सौ नवयुवकों से संसार के सभी भाव बदल दिये जा सकते हैं और सब चीजों की अपेक्षा इच्छाशक्ति का अधिक प्रभाव है। इच्छाशक्ति के सामने और सब शक्तियाँ दब जायेंगी, क्योंकि इच्छाशक्ति साक्षात् ईश्वर से निकलकर आती है। विशुद्ध और दृढ़ इच्छाशक्ति सर्वशक्तिमान है ।

मैंने तो नवयुवकों का संगठन करने के लिए जन्म लिया है । यहीं क्या, प्रत्येक नगर में, सड़कों पर और जो मेरे साथ सम्मिलित होने को तैयार है, मैं चाहता हूँ कि इन्हें अप्रतिहत गतिशील तरंगों की भाँति भारत में सब ओर भेजूँ, जो दीन–हीनों एवं पददलितों के पर–सुख, नैतिकता, धर्म एवं शिक्षा उड़ेल दें और इसे मैं करूँगा ।

मैं सुधार में विश्वास नहीं करता , मैं विश्वास करता हूँ स्वाभाविक उन्नति में। मैं अपने को ईश्वर के स्थान पर प्रतिष्ठित कर अपने समाज के लोगों के सिर पर यह उपदेश "तुम्हें इस भाँति चलना होगा, दूसरे प्रकार नहीं" मढ़ने का साहस नहीं कर सकता । मैं तो सिर्फ उस गिलहरी की भाँति होना चाहता हूँ जो श्री रामचंद्र जी के पुल बनाने के समय थोड़ा बालू देकर अपना भाग पूरा कर संतुष्ट हो गयी थी । यही मेरा भी भाव है ।

लोग स्वदेश–भक्ति की चर्चा करते हैं । मैं स्वदेश–भक्ति में विश्वास करता हूँ। पर स्वदेश–भक्ति के सम्बन्ध में मेरा एक आदर्श है । बड़े काम करने के लिए तीनों चीजों की आवश्यकता होती है । बुद्धि और विचार शक्ति हम लोगों की थोड़ी सहायता कर सकती है । वह हमको थोड़ी दूर अग्रसर करा देती है और वहीं ठहर जाती है । किंतु हृदय के द्वारा ही महाशक्ति की प्रेरणा होती है, प्रेम असंभव को संभव कर देता है । जगत् के सब रहस्यों का द्वार प्रेम ही है ।

अतः मेरे भावी संस्कार को, मेरे भावी देशभक्तों, तुम हृदयवान बनो । क्या तुम हृदय से समझते हो कि देव और ऋषियों की करोड़ों संतान पशुतुल्य हो गयी हैं ? क्या हृदय में अनुभव करते हो कि करोड़ों आदमी आज भूखे मर रहे हैं और वे कई शताब्दियों से इस भाँति भूखों मरते आ रहे हैं? क्या तुम समझते हो कि अज्ञात के काले बादल ने सारे भारत को आच्छन्न कर लिया है ? क्या तुम यह सब समझकर कभी अस्थिर हुए हो ?

क्या तुम कभी इससे अनिंद्रित हुए हो ? क्या वह तुम्हारे हृदय के स्पन्दन से कभी मिली है ? क्या उसने कभी तुम्हें पागल बनाया है ? क्या कभी तुम्हें निर्धनता और नाश का ध्यान आया है ? क्या तुम अपने नाम, यश, सम्पत्ति यहाँ तक कि अपने शरीर को भी भूल गये हो ? क्या तुम ऐसे हो गये हो ? यदि हो, तो जानो कि तुमने स्वदेश भक्ति की प्रथम सीढ़ी पर पैर रखा है ।

उठो, जागो, स्वयं जागकर औरों को जगाओ । अपने मनुष्य जन्म को सफल करो । **''उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत''**– उठो, जागो और तब तक रूको नहीं, जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाय ।

जो अपने आप में विश्वास नहीं करता, वह नास्तिक है । प्राचीन धर्मों ने कहा है, वह नास्तिक है जो ईश्वर में विश्वास नहीं करता । नया धर्म कहता है, वह नास्तिक है जो अपने आप में विश्वास नहीं करता ।

यह एक बड़ी सच्चाई है, शक्ति ही जीवन और कमजोरी ही मृत्यु है। शक्ति परम सुख है, जीवन अजर–अमर है, कमजोरी कभी न हटने वाला बोझ और यंत्रणा है, कमजोरी ही मृत्यु है।

सबसे पहले हमारे तरूणों को मजबूत बनना चाहिए । धर्म इसके बाद की वस्तु है। मेरे तरूण मित्रो शक्तिशाली बनो, मेरी तुम्हें यही सलाह है । तुम गीता के अध्ययन की अपेक्षा फुटबाल खेल के द्वारा ही स्वर्ग के अधिक समीप पहुँच सकोगे । ये कुछ कड़े शब्द हैं, पर मैं उन्हें कहना चाहता हूँ, क्योंकि तुम्हें प्यार करता हूँ । मैं जानता हूँ कि काँटा कहाँ चुभता है ? मुझे इसका कुछ अनुभव है । तुम्हारे स्नायु और मांसपेशियाँ अधिक मजबूत होने पर तुम गीता अधिक अच्छी तरह समझ सकोगे । तुम, अपने शरीर में शक्तिशाली रक्त प्रवाहित होने पर, श्रीकृष्ण के तेजस्वी गुणों और उनकी अपार शक्ति को अधिक समझ सकोगे । जब तुम्हारा शरीर मजबूती से तुम्हारे पैरों पर खड़ा रहेगा और तुम अपने को ''मनुष्य'' अनुभव करोगे, तब तुम उपनिषद् और आत्मा की महानता को अधिक अच्छा समझ सकोगे ।

मैं अब तक के धर्मों को स्वीकार करता हूँ और उन सबकी पूजा करता हूँ। मैं उनमें से प्रत्येक के साथ ईश्वर की उपासना करता हूँ , वे स्वयं चाहे किसी भी रूप में उपासना करते हों । मैं मुसलमानों की मस्जिद में जाऊँगा, मैं ईसाइयों के गिरिजा में क्रास के सामने घुटने टेककर प्रार्थना करूँगा, मैं बौद्ध–मंदिरों में जाकर बौद्ध और उनकी शिक्षा की शरण लूँगा । मैं जंगल में जाकर हिन्दुओं के साथ ध्यान करूँगा, जो हृदयस्थ ज्योतिस्वरूप परमात्मा को प्रत्यक्ष करने में लगे हुए हैं ।

शिक्षा विविध जानकारियों का ढेर नहीं है, जो तुम्हारे मस्तिष्क में ठूँस दिया गया है और जो आत्मसात हुए बिना वहाँ आजन्म पड़ा रहकर गड़बड़ मचाया करता है । हमें उन विचारों की अनुभूति कर लेने की आवश्यकता है, जो जीवन–निर्माण, मनुष्य निर्माण तथा चरित्र निर्माण में सहायक हों । यदि आप केवल पाँच ही परखे हुए विचार आत्मसात् कर उनके अनुसार अपने जीवन और चरित्र का निर्माण कर लेते हैं, तो आप पूरे संग्रहालय को कंठस्थ करने वाले की अपेक्षा अधिक शिक्षित हैं ।

अपने भाइयों का नेतृत्व करने का नहीं, वरन् उनकी सेवा करने का प्रयत्न करो। नेता बनने की इस क्रूर उन्मत्तता ने बड़े–बड़े जहाजों को इस जीवनरूपी समुद्र में डुबो दिया है।

मैं तुम सबसे यही चाहता हूँ कि तुम आत्म–प्रतिष्ठा, दलबंदी और ईर्ष्या को सदा के लिए छोड़ दो। तुम्हें पृथ्वी–माता की तरह सहनशील होना चाहिए । यदि तुम ये गुण प्राप्त कर सको, तो संसार तुम्हारे पैरों पर लौटेगा ।

शब्दार्थ

पुनरुत्थान – फिर से उठना	घृणित – घृणा उत्पन्न करने योग्य
सदुपाय – अच्छा उपाय	मढ़ने – दूसरों पर आरोपित करना
आच्छन्न – ढ़का हुआ	उन्मत्तता – पागल पन

अभ्यासार्थ–प्रश्न

वस्तुनिष्ठ–प्रश्न

1. शिकागो विश्वधर्म महासभा में स्वामीजी ने कब व्याख्यान दिया था ।

   क. 1893 ई   ख. 1897 ई

   ग. 1889 ई   घ. 1901 ई

2. विवेकानन्द के गुरु का नाम क्या था ?

   (क) रामानन्द   (ख) शंकराचार्य

   (ग) राम कृष्ण परमहंस   (घ) नरेन्द्र नाथ

अतिलघूत्तरात्मक–प्रश्न

3. विवेकानन्द की दृष्टि में भारत के पुनरूत्थान का सर्वश्रेष्ठ आधार क्या हो सकता है?
4. विवेकानन्द व्यक्ति के लिए शक्ति प्राप्त करने का सुलभ स्रोत क्या मानते हैं ?

लघूत्तरात्मक–प्रश्न

5. ''मैं तो सिर्फ उस गिलहरी की भाँति होना चाहता हूँ जो श्री रामचन्द्र जी के पुल बनाने के समय थोड़ा बालू देकर अपना भाग पूरा कर संतुष्ट हो गयी थी । यही मेरा भी भाव है ।'' इस पंक्ति से विवेकानन्द क्या स्पष्ट करना चाहते हैं ?
6. स्वदेश भक्ति से सामान्य अर्थ क्या लिया जाता है ? विवेकानन्द के विचार इससे किस प्रकार भिन्न है ? स्पष्ट कीजिए ।
7. विवेकानन्द तरूणों को शारीरिक दृष्टि से अधिक शक्तिशाली बनने को प्राथमिकता देते हैं । इसके पीछे उनके क्या तर्क हैं ?
8. धर्म के बारे में आप विवेकानन्द को उदार दृष्टिकोण वाला मानते हैं या संकीर्ण ? युक्तियुक्त उत्तर दीजिए ।
9. निम्नांकित शब्दों का विग्रह करते हुए समास बताइए–

   पददलित, इच्छाशक्ति, दीन–हीन, पृथ्वीमाता, परहित, श्रद्धासम्पन्न, अजर–अमर

निबन्धात्मक–प्रश्न

10. आज की शिक्षा में आप क्या कमियाँ अनुभव करते हैं ? उनमें सुधार लाने के लिए आप विवेकानन्द के विचारों से क्या सहायता लेना चाहेंगे ?

11. निम्नाकिंत की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

(क) बुद्धि और विचार शक्ति हम लोगों की थोड़ी सहायता कर सकते हैं। वह हमको थोड़ी दूर अग्रसर करा देती है और वहीं ठहर जाती है किन्तु हृदय के द्वारा ही महाशक्ति की प्रेरणा होती है । प्रेम असंभव को संभव कर देता है ।

(ख) यह एक बड़ी सच्चाई है, शक्ति ही जीवन है और कमजोरी मृत्यु है। शक्ति परमसुख है, जीवन अजर–अमर है, कमजोरी कभी न हटने वाला बोझ और यंत्रणा है, कमजोरी ही मृत्यु हैं।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की उत्तरमाला

1. क
2. ग

•••

पाठ–2

नींव की ईंट

I81Q3J

रामवृक्ष बेनीपुरी

जन्म– 1899 ई.

मृत्यु– 1968 ई.

लेखक परिचय

राष्ट्रीय आन्दोलनों में सक्रिय सहभागी, विचारक, चिन्तक और पत्रकार रामवृक्ष बेनीपुरी शुक्लोत्तर युग के प्रसिद्ध साहित्यकार थे। भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में आठ वर्ष जेल में व्यतीत करने के साथ ही समाचार पत्रों के माध्यम से राष्ट्रीय जागरण का कार्य करते रहे। इनका जन्म बिहार के मुजफ्फरपुर जिले के बेनीपुरी नामक गाँव में हुआ था। गाँधी जी और जयप्रकाश नारायण से प्रभावित हो, अध्ययन को छोड़कर पूर्णतया स्वाधीनता आन्दोलन में सक्रिय रहे। उनकी रचनाओं में जेल के अनुभव के साथ देशप्रेम, साहित्य प्रेम, त्याग की महत्ता, साहित्यकारों के प्रति जो सम्मान का भाव दर्शाया गया है, वह अविस्मरणीय है। उनका साहित्य, चिन्तन को निर्भीक तथा कर्म को तेज बनाता है।

कृतियाँ

पतितों के देश में, चिता के फूल, कैदी की पत्नी, गेहूँ और गुलाब, माटी, जंजीरें और दीवारें (संस्मरण और निबन्ध) अम्बपाली, सीता की माँ, संघमित्रा, तथागत, अमरज्योति (नाटक) विद्यापति की पदावली (सम्पादन), जयप्रकाश नारायण (जीवनी)

पाठ परिचय

प्रस्तुत ललित निबन्ध भारत के नवनिर्माण की पृष्ठभूमि में देश के नवयुवकों को कर्मठता, त्याग व निःस्वार्थ भावना का संदेश तथा उद्बोधन देता है। राष्ट्र की उन्नति का भवन युगों तक लाखों–करोड़ों नवयुवकों के सतत् त्याग और निर्माण भावना की नींव पर बनता, सँवरता और भव्य बनता है। इस सत्य की ओर इंगित करते हुए लेखक भारत के नवयुवकों को मात्र 'उपभोग' की मनोवृति त्यागकर निर्माण की मनोवृति अपनाने की प्रेरणा दे रहा है।

पाठ की अनुच्छेद–योजना विशेषतः ध्यान आकृष्ट करती है। एक–एक विचार भावपूर्ण वाक्यों में अभिव्यक्त किए गए हैं और ऐसे एक–एक दो–दो वाक्य अनुच्छेद बनाते हैं, किन्तु वे पाठक को बहुत कुछ सोचने विचारने के लिए उत्प्रेरित करते हैं।

नींव की ईंट

वह जो चमकीली, सुन्दर, सुदृढ़ इमारत है, वह किस पर टिकी है ? इसके कंगूरे को आप देखा करते हैं। क्या कभी आपने इसकी नींव की ओर भी ध्यान दिया है ? दुनिया चमक देखती है, ऊपरी आवरण देखती है, आवरण के नीचे जो ठोस सत्य है, उस पर कितने लोगों का ध्यान जाता है ? ठोस सत्य सदा शिवम् है, किन्तु यह हमेशा ही सुन्दरम् भी हो, यह आवश्यक नहीं हैं। सत्य कठोर होता है, कठोरता और भद्दापन,साथ–साथ जन्मा करते है, जिया करते हैं।

हम कठोरता से भागते हैं, भद्देपन से मुख मोड़ते हैं, इसलिए सत्य से भी भागते हैं। नहीं तो हम इमारत के गीत, नींव के गीत से प्रारम्भ करते । वह ईंट धन्य है, कट–छँटकर कंगूरे पर चढ़ती है और बरबस लोगों को अपनी और आकृष्ट करती है किन्तु धन्य है वह ईंट, जो जमीन से सात हाथ नीचे जाकर गड़ गई और इमारत की पहली ईंट बनी। क्योंकि इसी पहली ईंट पर, उसकी मजबूती और पुख्तापन पर सारी इमारत की अस्ति–नास्ति निर्भर है।

उस ईंट को हिला दीजिए, कंगूरा बेतहाशा जमीन पर आ रहेगा। कंगूरे के गीत गाने वालों आओ, अब नींव के गीत गाएँ।

वह ईंट जो जमीन में इसलिए गड़ गई कि दुनिया को इमारत मिले, कंगूरा मिले।

वह ईंट जो सब ईटों से ज्यादा पक्की थी, यदि ऊपर लगी होती तो कंगूरे की शोभा सौगुनी कर देती। किन्तु उसने देखा,कि इमारत की पायेदारी उसकी नींव पर निर्भर होती है, इसलिए उसने अपने को नींव में अर्पित किया।

वह ईंट, जिसने अपने को सात हाथ जमीन के अन्दर इसलिए गाड़ दिया कि इमारत जमीन के सौ हाथ ऊपर जा सके। वह ईंट, जिसने अपने लिए अंधकूप इसलिए कबूल किया कि ऊपर के उसके साथियों को स्वच्छ हवा मिलती रहे।

वह ईंट जिसने अपना अस्तित्व इसलिए विलीन कर दिया कि संसार एक सुन्दर सृष्टि देखे।

सुन्दर सृष्टि! सुन्दर सृष्टि हमेशा ही बलिदान खोजती है, बलिदान ईंट का हो या व्यक्ति का। सुन्दर इमारत बने, इसलिए कुछ पक्की–पक्की लाल ईंटों को चुपचाप नींव में जाना है।

सुन्दर समाज बने, इसलिए कुछ तपे–तपाये लोगों को मौन–मूक शहादत का लाल सेहरा पहनना है।

शहादत और मौन मूक! जिस शहादत को शोहरत मिली, जिस बलिदान को प्रसिद्धि प्राप्त हुई, यह इमारत का कंगूरा है – मंदिर का कलश है।

हाँ, शहादत और मौन–मूक ? समाज की आधारशिला यही होती है। ईसा की शहादत ने ईसाई धर्म को अमर बना दिया, आप कह लीजिए कि मेरी समझ में, ईसाई धर्म को अमर बनाया उन लोगों ने, जिन्होंने उस धर्म के प्रचार में अपने को अनाम उत्सर्ग कर दिया।

उसमें से कितने जिन्दा जलाये गए, कितने सूली पर चढ़ाये गए, कितने वन की खाक छानते जंगली जानवरों के शिकार हुए, कितने उससे भी भयानक जन्तु की भूख प्यास का शिकार हुए।

किन्तु ईसाई धर्म उन्हीं के पुण्य–प्रताप से फल–फूल रहा है।

ये नींव की ईंट थे, गिरजाघर के कलश उन्हीं की शहादत से चमकते हैं।

आज हमारा देश आजाद हुआ सिर्फ उनके बलिदानों के कारण नहीं, जिन्होंने इतिहास में स्थान पा लिया है।

देश का शायद ही ऐसा कोना हो, जहाँ कुछ ऐसे दधीचि नहीं हुए जिनकी हड्डियों के दान ने ही विदेशी वृत्रासुर का नाश किया।

हम जिसे देख नहीं सकें, वह सत्य नहीं है– यह है मूढ़ धारणा। ढूँढने से सत्य मिलता है। हमारा काम है, धर्म है, ऐसी नींव की ईंटों की ओर ध्यान देना।

सदियों के बाद नये समाज की सृष्टि की ओर हमने पहला कदम बढ़ाया है। इस नये समाज के निर्माण के लिए ही हमें नींव की ईंट चाहिए।

अफ़सोस! कँगूरा बनने के लिए चारों ओर होड़ा–होड़ी मची है, नींव की ईंट बनने की कामना लुप्त हो रही है।

सात लाख गाँवों का नव निर्माण। हजारों शहरों और कारखानों का निर्माण। कोई शासक इसे सम्भव नहीं कर सकता। जरूरत है ऐसे नौजवानों की, जो इस काम में अपने को चुपचाप खपा दें। जो एक नई प्रेरणा से अनुप्राणित हों, एक नई चेतना से अभिभूत, जो शाबाशी से दूर हो, दल बन्दियों से अलग।

जिनमें कंगूरा बनने की कामना न हो, कलश कहलाने की जिनमें वासना भी न हो। सभी कामनाओं से दूर–सभी वासनाओं से दूर।

उदय के लिए आतुर हमारा समाज चिल्ला रहा है– हमारी नींव की ईंट किधर है?

देश के नौजवानों को यह चुनौती है ?

शब्दार्थ

आवरण – परदा	शहादत –बलिदान
कंगूरा – शिखर	शोहरत – प्रसिद्धि
लाल सेहरा – त्याग	मौन–मूक – शब्दरहित, पूर्णतया प्रसिद्धि रहित

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. नींव की ईंटों को धन्य क्यों माना गया है?

   (क) लाल रंग होने के कारण (ख) सुन्दर होने के कारण

   (ग) आधार शिला बनने के कारण (घ) ठोस होने के कारण

2. सुन्दर सृष्टि हमेशा क्या खोजती है?

   (क) अभ्यास (ख) दौलत

   (ग) बलिदान (घ) मक्कारी

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

3. लेखक के अनुसार देश को आज़ाद कराने का श्रेय किसे मिलना चाहिए?
4. हमें सत्य की खोज के लिए किस ओर ध्यान देने के लिए लेखक ने प्रेरित किया है ?
5. नींव की ईंट और कंगूरा शब्द किन–किन लोगों के सूचक हैं ?
6. निम्न शब्दों के अर्थ भेद बताइए–

   (क) निर्वाण–निर्माण (ख) आवरण–आमरण

   (ग) कामना–वासना (घ) इमारत–इबारत

लघूत्तरात्मक प्रश्न–

7. "हम जिसे देख नहीं सके, वह सत्य नहीं है, यह मूढ़ धारणा है।" लेखक ने ऐसा क्यों कहा ?
8. 'कँगूरा बनने की होड़ा–होड़ी मची है।" लेखक ने इस कथन के माध्यम से क्या इंगित किया है ?
9. 'सुन्दर सृष्टि हमेशा बलिदान खोजती है।' इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।

निबन्धात्मक प्रश्न–

10. 'उदय के लिए आतुर हमारा समाज चिल्ला रहा है– हमारी नींव की ईंट किधर है?' कथन के आलोक में वर्तमान में समाज की युवाओं से क्या अपेक्षा है? स्पष्ट कीजिए।
11. 'नींव की ईंट' पाठ के आधार पर नींव की ईंट के लक्ष्यार्थ को स्पष्ट कीजिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की उत्तर माला

1. ग
2. ग

•••

पाठ–3

छोटा जादूगर

I8AL57

जयशंकर प्रसाद

जन्म– 1890 ई.

मृत्यु– 1937 ई.

लेखक परिचय

जयशंकर प्रसाद एक युग प्रवर्तक रचनाकार थे, जिन्होंने एक साथ कविता, नाटक, कहानी और उपन्यास के क्षेत्र में हिन्दी को गौरवान्वित करने वाली कृतियों का सृजन किया। आधुनिक हिन्दी साहित्य के इतिहास में प्रसाद का गौरव अक्षुण्ण है। काशी के प्रसिद्ध 'सूंघनी साहू' परिवार में जन्म, आरम्भिक शिक्षा और जीवन समृद्धता से प्रारम्भ हुआ, किन्तु 17 वर्ष की उम्र में प्रसाद पर आपदाओं का पहाड़ टूट पड़ा। प्रसाद ने धीरता और गम्भीरता से विषमताओं का सामना किया।

प्रसाद के साहित्य में प्रकृति के सचेतन रूप के साथ–साथ मानव के लौकिक व पारलौकिक जीवन की जैसी विविधतापूर्ण झाँकी प्रस्तुत की गयी है, वैसी आधुनिक युग के अन्य किसी कवि में नहीं मिलती है। कवि के रूप में वे निराला, पन्त, महादेवी के साथ छायावाद के चौथे स्तम्भ के रूप में प्रतिष्ठित हुए। नाट्य लेखन में स्वर्णिम इतिहास को आधार बनाकर गौरवशाली भारतवर्ष का रेखांकन कर उस समय के जनमानस में आत्म चेतना का संचार किया। कहानी और उपन्यास के माध्यम से मानवीय करूणा और भारतीय मनीषा के अनेकानेक अनावृत पक्षों का उद्घाटन किया।

कृतियाँ

कानन कुसुम, महाराणा का महत्त्व, झरना, आँसू, लहर, कामायनी (काव्य), स्कदगुप्त, चन्द्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी, जनमेजय का नागयज्ञ, राज्यश्री (नाटक), छाया, प्रतिध्वनि, आकाशदीप, आंधी, इन्द्रजाल (कहानी संग्रह), कंकाल, तितली, इरावती (उपन्यास) ।

पाठ परिचय –

प्रस्तुत कहानी का मुख्य पात्र एक छोटा लड़का है । जो अपनी असहाय अवस्था में आजीविका के लिए जादू के करतब दिखाता है तथा लेखक के सामने भी अपनी कला का प्रदर्शन करता है । अपनी दीन स्थिति में भी किसी के सामने हाथ न फैलाकर जीवन के संघर्षों का साहस के साथ मुकाबला करके स्वाभिमान पूर्वक जीवन जीने का प्रयास करता है । बाल सुलभ करूणा के साथ दायित्व बोध इस बालक के माध्यम से प्रसाद ने कहानी में जीवन्त किया है। छोटा जादूगर के नाम से सम्बोधित करने को कहना उस लड़के की अपने कर्म के प्रति दृढ़ता और निष्ठा का परिचायक है। इसी कारण मुख्य पात्र की विपन्नावस्था में भी पाठकों के मन में सहानुभूति से अधिक आदर की भावना उत्पन्न होती है । कहानी मानवीय संवेदनाओं को झंकृत करने में भाव एवं भाषा की दृष्टि से समर्थ है।

छोटा जादूगर

(1)

''कार्निवाल' के मैदान में बिजली जगमगा रही थी । मैं खड़ा था फुहारे के पास, जहाँ एक लड़का चुपचाप शरबत पीनेवालों को देख रहा था । उसके गले में फटे कुरते के ऊपर से एक मोटी–सी सूत की रस्सी पड़ी थी और जेब में कुछ ताश के पत्ते थे । उसके मुँह पर गम्भीर विषाद के साथ धैर्य की रेखाएँ थीं । मैं उसकी ओर न जाने क्यों आकर्षित हुआ!

''मैंने पूछा, क्यों जी, तुमने इसमें क्या देखा ?''

''मैंने सब देखा है। यहाँ चूड़ी फेंकते हैं। खिलौनों पर निशाना लगाते हैं । तीर से नम्बर छेदते हैं। मुझे तो खिलौने पर निशाना लगाना अच्छा मालूम हुआ । जादूगर तो बिल्कुल निकम्मा है । उससे अच्छा तो ताश का खेल मैं ही दिखा सकता हूँ।'' उसने बड़ी प्रगल्भता से कहा ।

मैंने पूछा, ''और उस पर्दे में क्या हैं ? वहाँ तुम क्यों गये थे ?''

''नहीं, वहाँ मैं नहीं जा सकता । टिकट लगता हैं ।''

मैंने कहा, ''तो चलो, मैं वहाँ पर तुमको ले चलूँ ।''

उसने कहा– ''वहाँ जाकर क्या कीजिएगा ? चलिए निशाना लगाया जाये।''

मैंने उससे सहमत होकर कहा– ''तो फिर चलो, पहले शरबत पी लिया जाये।''

हम दोनों शरबत पीकर निशाना लगाने चले। राह में ही उससे पूछा, ''तुम्हारे और कौन हैं ? ''

''माँ और बाबूजी। ''

''उन्होंने तुमको यहाँ आने के लिये मना नहीं किया ?''

''बाबूजी जेल में हैं ।''

''क्यों ?''

''देश के लिये'', वह गर्व से बोला ।

''और तुम्हारी माँ। ''

''वह बीमार है ।''

''और तुम तमाशा देख रहे हो?''

उसके मुँह पर तिरस्कार की हँसी फूट पड़ी । उसने कहा, तमाशा देखने नहीं, दिखाने आया हूँ । कुछ पैसे ले जाऊँगा, तो माँ को पथ्य दूँगा । मुझे शरबत न पिलाकर आपने मेरा खेल देखकर मुझे कुछ दे दिया होता, तो मुझे अधिक प्रसन्नता होती।''

मैं आश्चर्य से उस तेरह–चौदह वर्ष के बालक को देखने लगा ।

''हाँ, मैं सच कहता हूँ, बाबूजी ! माँ बीमार है, इसलिये मैं नहीं गया ।''

''कहाँ ?''

''जेल में । जब कुछ लोग खेल–तमाशा देखते ही हैं, तो मैं क्यों न दिखाकर माँ की दवा करूँ और अपना पेट भरूँ ?

मैंने उससे कहा– अच्छा, चलो निशाना लगाया जाये । हम दोनों उस जगह पर पहुँचे, जहाँ खिलौने को गेंद से गिराया जाता था । मैंने बारह टिकट खरीद कर उस लड़के को दे दिये ।

वह निकला पक्का निशानेबाज, उसकी कोई गेंद खाली नहीं गयी ।

देखने वाले दंग रह गये । उसने बारह खिलौनों को बटोर लिया, लेकिन उठाता कैसे। कुछ मेरे रूमाल में बाँधे, कुछ जेब में रख लिये ।

(2)

कलकत्ता के सुरम्य बोटेनिकल उद्यान में, लाल कमलिनी से भरी हुई, एक छोटी झील के किनारे घने वृक्षों की छाया में अपनी मंडली के साथ बैठा हुआ, मैं जलपान कर रहा था। इतने में वह छोटा जादूगर दिखाई पड़ा । मस्तानी चाल से झूमता हुआ आकर कहने लगा ।

''बाबूजी नमस्ते । आज कहिए तो खेल दिखाऊँ ? ''

''नहीं जी, अभी हम लोग जलपान कर रहे हैं ।''

''फिर इसके बाद क्या गाना बजाना होगा, बाबूजी ।''

''नहीं जी– तुमको ''मैं क्रोध में कुछ और कहने जा रहा था । श्रीमती ने कहा, ''दिखलाओ जी, तुम तो अच्छे आये । भला कुछ मन तो बहले।'' मैं चुप हो गया क्योंकि श्रीमती की वाणी में माँ की सी वह मिठास थी, जिसके सामने किसी भी लड़के को रोका नहीं जा सकता । उसने खेल आरम्भ किया ।

उस दिन कार्निवाल के सब खिलौने उसके खेल में अपना अभिनय करने लगे। बिल्ली रूठने लगी । भालू मनाने लगा । बंदर घुड़कने लगा । गुड़िया का ब्याह हुआ। गुड्डा वर काना निकला । लड़के की वाचालता से ही अभिनय हो रहा था । सब हँसते–हँसते लोट–पोट हो गये ।

ताश के पत्ते लाल हो गये । फिर अब काले हो गये । गले की सूत की डोरी टुकड़े–टुकड़े होकर जुड़ गयी । लट्टू अपने आप नाच रहे थे । मैंने कहा, ''अब हो चुका। अपना खेल बटोर लो, हम लोग भी अब जायेंगे ।''

श्रीमती जी ने धीरे से एक रुपया दे दिया । वह उछल पड़ा । मैंने कहा 'लड़के'

''छोटा जादूगर कहिये, यह मेरा नाम है । इसी से मेरी जीविका है।''

मैं कुछ बोलना ही चाहता था कि श्रीमती जी ने कहा, ''अच्छा, तुम इस रुपये से क्या करोगे?''

''पहले भर–पेट पकौड़ी खाऊँगा । फिर एक सूती चादर लूँगा ।''

मेरा क्रोध अब लौट आया । मैं अपने पर बहुत क्रुद्ध होकर सोचने लगा, ओह! कितना स्वार्थी हूँ मैं ! उसके एक रुपया पाने पर मैं ईर्ष्या करने लगा था न !

वह नमस्कार करके चला गया ! हम लोग कुंज देखने के लिए चले । रह–रह कर छोटे जादूगर का स्मरण होता था । सचमुच वह एक झोंपड़ी के पास चादर कन्धे पर डाले खड़ा था। मैंने मोटर रोककर उससे पूछा, ''तुम यहाँ कहाँ?''

''मेरी माँ यहीं है न ! अब उसे अस्पताल वालों ने निकाल दिया ।'' मैं उतर गया । उस झोंपड़ी में देखा, तो एक स्त्री चिथड़ों में लिपटी काँप रही थी ।

छोटे जादूगर ने कम्बल ऊपर डालकर उसके शरीर से लिपटते हुए कहा, ''माँ।''

मेरी आँखों से आँसू निकल पड़े ।

(3)

एक दिन कलकत्ते के उस उद्यान को फिर देखने की इच्छा से मैं अकेले ही चल पड़ा । दस बज चुके थे । मैंने देखा कि उस निर्मल धूप में सड़क के किनारे एक कपड़े पर छोटे जादूगर का रंग–मंच सजा था । मोटर रोक कर उतर पड़ा । वहाँ बिल्ली रूठ रही थी, भालू मनाने चला था । ब्याह की तैयारी थी । पर यह सब होते हुए भी जादूगर की वाणी में प्रसन्नता की तरी नहीं थी मानों उसके रोयें रो रहे थे । मैं आश्चर्य से देख रहा था । खेल हो जाने पर पैसा बटोर कर उसने भीड़ में मुझे देखा । वह जैसे क्षण भर के लिये स्फूर्तिमान् हो गया। मैंने उसकी पीठ थपथपाते हुए पूछा, ''आज तुम्हारा खेल जमा क्यों नहीं ?''

''माँ ने कहा था कि आज तुरन्त चले आना । मेरी घड़ी समीप है।'' अविचल भाव से उसने कहा ।

''तब भी तुम खेल दिखाने आये !'' मैंने कुछ क्रोध से कहा । उसने कहा, ''क्यों नहीं आता ? ''

और कुछ कहने में जैसे वह अपमान का अनुभव कर रहा था । क्षण भर में मुझे अपनी भूल मालूम हो गयी । उसके झोले को गाड़ी में फेंककर उसे भी बिठाते हुए मैंने कहा, ''जल्दी करो।'' मोटरवाला मेरे बताये हुए पथ पर चल पड़ा ।

कुछ ही मिनट में झोंपडे के पास पहुँचा । जादूगर दौड़कर झोपड़े में माँ–माँ पुकारते हुए घुसा । मैं भी पीछे था । किन्तु स्त्री के मुँह से, 'बे..............................' निकलकर रह गया । उसके दुर्बल हाथ उठकर रह गये । जादूगर उससे लिपटकर रो रहा था, मैं स्तब्ध था । उस उज्ज्वल धूप में समग्र संसार जैसे जादू–सा मेरे चारों ओर नृत्य करने लगा ।

शब्दार्थ –

कार्निवाल– जनता के मनोरंजन की, मेले के ढंग की योजना है जिसमें खेल, व्यायाम के अद्भुत प्रदर्शन, जादू के खेलों तथा गीत, नृत्य और अभिनय आदि का समावेश रहता है । इसमें कई तरह के टिकट लगते हैं ।

विषाद– दुःख	प्रगल्भता –गम्भीरता, तीक्ष्ण दृष्टि
तिरस्कार– अपमान, अनादर	पथ्य– रोगी के लिए सुपाच्य भोजन
सुरम्य– बहुत सुन्दर	कमलिनी–छोटे कमल
मस्तानी– मतवाली	घुड़कने–क्रोध से डराने का हाव–भाव
वाचालता– बात करने में निपुणता	जीविका–भरण–पोषण का साधन
कुंज–पौधों या लताओं से ढका हुआ स्थान	चिथड़ों–फटे पुराने वस्त्र
स्फूर्तिमान– ऊर्जावान	अविचल –स्थिर, अटल

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. छोटा जादूगर के पिता जेल में क्यों थे ?

   क. चोरी के कारण ख. मारपीट के कारण

   ग देश के लिए घ नशे के कारण

2. निशाना लगाकर छोटा जादूगर ने कितने खिलौने बटोर लिए ?

   क. दस ख. आठ

   ग. तेरह घ. बारह

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

3. 'कार्निवाल' क्या है ? समझाइए

4. ''जब कुछ लोग खेल–तमाशा देखते ही हैं तो मै क्यों न दिखाकर अपना पेट भरूँ।''

   I. ये शब्द किसने और किससे कहे ?

   II वह खेल दिखाकर क्यों अपनी जीविका चलाता था ?

5. मैंने उसकी पीठ थपथपाते हुए पूछा – ''आज तुम्हारा खेल जमा क्यों नहीं?''

   I किसने, किससे और कहाँ पूछा ?

   II उसने क्या उत्तर दिया ?

   III उसके बाद क्या घटना घटित हुई ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

6. बताइये कि इस पाठ का शीर्षक 'छोटा जादूगर' कहाँ तक उपयुक्त है ? क्या आप इसके लिए कोई दूसरा उपयुक्त शीर्षक दे सकते हैं ?

7 निम्नलिखित मुहावरों का स्वरचित वाक्यों में प्रयोग कीजिए :–

   हँसी फूट पड़ना, दंग रहना, हँसते–हँसते लोट–पोट होना, पीठ थपथपाना, पैसे बटोरना ।

8. निम्नलिखित शब्दों का एक–एक पर्यायवाची शब्द दीजिए :–

निशाना, विषाद्, तिरस्कार, अभिनय ।

9 रेखांकित शब्दों के व्याकरण की दृष्टि से शब्द भेद बताइये :–

छोटे जादूगर ने कम्बल ऊपर डालकर उसके शरीर से लिपटते हुए कहा ''माँ''

निबन्धात्मक प्रश्न

10. छोटे जादूगर में आपको जो गुण दिखलाई पड़ते है, उन्हें उदाहरण देकर बताइये।

11 I. इस कहानी में कहानीकार का क्या उद्‌देश्य छिपा हुआ है ?

II इस कहानी से आप क्या प्रेरणा ग्रहण कर सकते हैं ?

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की उत्तरमाला

1. (ग)
2. (घ)

•••

पाठ–4

दीनों पर प्रेम

I8JH6U

वियोगी हरि

जन्म– 1895 ई.

मृत्यु– 1988 ई.

लेखक परिचय

प्रतिभा सम्पन्न वियोगी हरि की रुचि बाल्यकाल से ही साहित्य और दर्शन में थी, जिसे बाबू पुरुषोत्तम दास टंडन के सम्पर्क से विशेष प्रोत्साहन मिला। गाँधी जी से प्रभावित होकर अस्पृश्यता निवारण की दिशा में 1920 में कानपुर के 'प्रताप' में एक लेख माला लिखी थी।

इन्होंने गाँधी जी द्वारा प्रवर्तित 'हरिजन सेवक' के सम्पादन का कार्य भी सम्भाला और तभी से हरिजन सेवक संघ से घनिष्ठ सम्बन्ध हो गया। वियोगी हरि के सामाजिक विचार सुधारवादी और कबीर आदि सन्तों की भाँति खण्डनात्मक है। उनके गद्य गीत, चिन्तन प्रधान एवं व्यंग्यात्मक है।

गद्य भाषा अलंकृत, काव्यात्मक, लाक्षणिक और मिश्रित है। वियोगी हरि आधुनिक ब्रजभाषा के प्रमुख कवि, हिन्दी के सफल गद्यकार और समाजसेवी हैं। वर्ण्य विषय के अनुरूप हिन्दी संस्कृत की काव्योक्तियाँ उद्धृत कर उन्होंने अपने निबन्धों को प्रभावशाली बनाया है।

कृतियाँ

साहित्य विहार, वीर सतसई, मेवाड़ केसरी, प्रेम शतक, प्रेम पथिक, सन्त–वाणी, वीर विरुदावली, चरखे की गूँज, संक्षिप्त सूर सागर, सन्त–सुधासार ।

पाठ परिचय

प्रस्तुत निबन्ध में लेखक ने दीन–दुखियों की सेवा को ही ईश्वर सेवा सिद्ध किया है। जो लोग बड़े–बड़े उपासना गृह बनाकर चमक–दमक पूर्ण रीति से ईश्वर की पूजा करते हैं और दीनों के दु:ख –दर्द को सुनकर उनसे घृणा करते हैं, उनकी भक्ति को ईश्वर स्वीकार नहीं करता है। ईश्वर दीनबन्धु है, वह दरिद्र–नारायण है। जो लोग उसे लक्ष्मी–नारायण ही समझते हैं, वे उसके रहस्य से परिचित नहीं हैं। इस विषय में अनेक उद्धरण देते हुए लेखक ने आस्तिकों को दीनों से प्रेम करने की प्रेरणा दी है।

लेखक के कहने का अभिप्राय यह है कि केवल नाम के आस्तिक बनने से कुछ भी नहीं सध पाता, जब तक अपनी आस्तिकता को दु:खियों की सेवा और सहायता में चरितार्थ न किया जाए।

दीनों पर प्रेम

हम नाम के ही आस्तिक हैं। हर बात में ईश्वर का तिरस्कार करके ही हमने आस्तिक की ऊँची उपाधि पाई है। ईश्वर का नाम दीनबन्धु है। यदि हम वास्तव में आस्तिक हैं, ईश्वर भक्त हैं तो हमारा यह पहला धर्म है कि दीनों को प्रेम से गले लगाएँ, उनकी सहायता करें, उनकी सेवा करें, उनकी शुश्रूषा करें।

तभी तो दीनबन्धु ईश्वर हम पर प्रसन्न होगा। पर हम ऐसा कब करते हैं ? हम तो दीन–दुर्बलों को ठुकराकर ही आस्तिक या दीन–बन्धु भगवान के भक्त आज बन बैठे हैं। दीन–बन्धु की ओट में हम दीनों का खासा शिकार खेल रहे हैं। कैसे अद्वितीय आस्तिक हैं हम, न जाने क्या समझकर हम अपने कल्पित ईश्वर का नाम दीन बन्धु रखे हुए हैं, क्यों इस रद्दी नाम से उस लक्ष्मी–कान्त का स्मरण करते हैं :

दीननि देख घिनात जे, नहिं दीननि सो काम।
कहा जानि ते लेत है, दीनबन्धु को नाम।।

यह हमने सुना अवश्य है कि त्रिलोकेश्वर श्री कृष्ण की मित्रता और प्रीति सुदामा नाम के एक दीन दुर्बल ब्राह्मण से थी। यह भी सुना है कि भगवान यदुराज ने महाराज दुर्योधन का अतुल आतिथ्य अस्वीकार कर बड़े प्रेम से गरीब विदुर के यहाँ साग–भाजी का भोग लगाया था। पर ये बातें चित्त पर कुछ बैठती नहीं हैं। रहा हो, कभी ईश्वर का दीनबन्धु नाम पुरानी, सनातनी बात है, कौन काटे ? पर हमारा भगवान दीनों का भगवान नहीं है।

हरे, हरे! वह उन घिनौनी कुटियों में रहने जाएगा? रत्न जड़ित स्वर्ण–सिंहासन पर विराजने वाला ईश्वर उन भुक्कड कँगालों के कटे–फटे कंबलों पर बैठने जाएगा? वह मालपुआ और मोहन भोग लगाने वाला भगवान उन भिखारियों की रूखी–सूखी रोटी खाने जाएगा ? कभी नहीं हो सकता । हम अपने बनवाए हुए विशाल राजमन्दिर में उन दीन–दुर्बलों को आने भी नहीं देंगे। उन पतितों और अछूतों की छाया तक हम अपने खरीदे हुए खास ईश्वर पर न पड़ने देंगे। दीन–दुर्बल भी कहीं ईश्वर भक्त होते सुने हैं ? ठहरो, ठहरो, यह कौन गा रहा है ? ठहरो, जरा सुनो, वाह! तब यह खूब रहा :

मैं ढूँढता तुझे था, जब कुंज और वन में,
तू खोजता मुझे था, तब दीन के वतन में।
तू आह बन किसी की मुझको पुकारता था,
मैं था तुझे बुलाता संगीत में, भजन में।

तो क्या हमारे श्री लक्ष्मी–नारायण, जो 'दरिद्रनारायण' हैं ? इस फ़कीर की सदा से तो यही मालूम हो रहा है। तो क्या हम भ्रम में थे ? अच्छा, अमीरों के शाही महलों में वह पैर भी नहीं रखता ?

मेरे लिए खड़ा था, दुखिया के द्वार पर तू,
मैं बाट जोहता था तेरी, किसी चमन में।
हज़रत खड़े भी, कहाँ होने गये ?

बेबस गिरे हुओं के तू बीच में खड़ा था,

मैं स्वर्ग देखता था, झुकता कहाँ चरण में।।

तो क्या उस दीनबन्धु को अब यही मंजूर है कि हम अमीर लोग धन दौलत को लात मारकर उसकी खोज में दीन–हीनों की झोपड़ियों की खाक छानते फिरें?

× × × ×

दीन–दुर्बलों को अपने असह्य अत्याचारों की चक्की में पीसने वाला धनी परमात्मा के चरणों तक कैसे पहुँच सकता है? धनान्ध को स्वर्ग का द्वार दिखेगा ही नहीं, महात्मा ईसा का यह वचन क्या असत्य है ?

"यदि तू सिद्ध पुरुष होना चाहता है तो जो कुछ धन दौलत तेरे पास हो, वह सब बेचकर कँगालों को दे दे। तुझे अपना खज़ाना स्वर्ग में सुरक्षित रखा मिलेगा। तब, आ और मेरा अनुयायी हो जा। मैं तुझसे सच कहता हूँ कि धनवान के स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने की अपेक्षा ऊँट का सुई के छेद में से निकल जाना कहीं आसान है। सहजो बाई भी यही बात कह रही है :

बड़ा न जाने साहिब के दरबार ।

द्वारे ही सूं सहजो मोटी मार।।

किसानों और मजदूरों की टूटी–फूटी झोंपड़ियों में ही प्यारा गोपाल बंशी बजाता मिलेगा। वहाँ जाओ उसकी मोहिनी छवि निरखो। जेठ–बैशाख की कड़ी धूप में मजदूर के पसीने की टपकती हुई बूँदों में उस प्यारे राम को देखो। दीन–दुर्बलों की निराशा भरी आँखों में उस प्यारे कृष्ण को देखो। किसी धूल भरे हीरे की कणी में उस सिरजनहार को देखो । जाओ, पतित, अछूत की छाया में उस बिहारी को देखो।

× × × ×

तुम न जाने उसे कहाँ खोज रहे हो ? अरे भाई! वहाँ वह कहाँ मिलेगा ? इन मन्दिरों में वह राम न मिलेगा, इन मस्जिदों में अल्लाह का दीदार मुश्किल है। इन गिरजों में कहाँ परमात्मा का वास है ? इन तीनों में वह मालिक रमने का नहीं। गाने बजाने से भी वह रीझने का नहीं। अरे! इन सब चटक मटक में वह कहाँ ? वह दुखियों की आह में मिलेगा। गरीबों की भूख में मिलेगा। दीनों के दुःख में मिलेगा। वहाँ तुम खोजने आते नहीं, यहाँ व्यर्थ फिरते हो।

दीनबन्धु का निवास स्थान दीन हृदय है। दीन हृदय ही मन्दिर है, दीन हृदय ही गिरजा है। दीन दुर्बल की दिल दुखाना भगवान का मन्दिर ढहाना है। दीन को सताना सबसे भारी धर्म–विद्रोह है। दीन की आह समस्त धर्म–कर्म को भस्मसात् कर देने वाली है। सन्त कवि मलूकदास ने कहा है –

दुखिया जनि कोई दूखिये दुखियै अति दुःख होय।

दुखिया रोई सब गुड़ माटी होय।।

दीनों को सताकर, उनकी आह से कौन मूर्ख अपने जीवन को नारकीय बनाना चाहेगा, कौन ईश्वर–विद्रोह करने का दुस्साहस करेगा ? गरीब की यह आह भला कभी निष्फल जा सकती है –

तुलसी हाय गरीब की, कबहुं न निष्फल न जाय।
मरे बैल की चाम सों, लौह भस्म ह्वै जाय।।

और की बात नहीं जानते, पर जिसके हृदय में थोड़ा सा भी प्रेम है, वह दीन– दुर्बलों को कभी सता ही नहीं सकता। प्रेमी, निर्दय कैसे हो सकता है उसका उदार हृदय तो दया का आगार होता है। दीनों को वह अपनी प्रेममयी दया का सबसे बड़ा और पवित्र पात्र समझता है। दीन के सकरुण नेत्रों में उसे अपने प्रेम देव की मनमोहिनी मूर्ति का दर्शन अनायास प्राप्त हो जाता है। दीन की मर्मभेदिनी आह में उस पागल को अपने प्रियतम का मधुर आह्वान सुनाई देता है। उधर वह अपने दिल का दरवाजा दीन–हीनों के लिए रात–दिन खोले खड़ा रहता है और उधर परमात्मा का हृदय द्वार उस दीन–प्रेमी का स्वागत करने को उत्सुक रहा करता है।

प्रेमी का हृदय दीनों का भवन है, दीनों का हृदय दीनबन्धु भगवान का मन्दिर है और भगवान का हृदय प्रेमी का वास–स्थान है। प्रेमी के हृदय में दरिद्र–नारायण ही एक मात्र प्रेम–पात्र है। दरिद्र सेवा ही सच्ची ईश्वर सेवा है। दीन–दयालु ही आस्तिक है, ज्ञानी है, भक्त है और प्रेमी है। दीन दुखियों के दर्द का मर्मी ही महात्मा है। गरीबों की पीर जानने–हारा ही सच्चा पीर है। कबीर ने कहा है :

कबिरा सोई पीर है , जो जाने पर पीर
जो पर पीर न जानई, सो काफिर बेपीर।।

शब्दार्थ

आस्तिक–ईश्वर में विश्वास रखने वाले,	जोहना– इन्तजार करना,
अद्वितीय– जिसके समान दूसरा कोई न हो,	तिरस्कार–अनादर,
घिनात–घृणा या नफरत करना,	आतिथ्य–अतिथि का सत्कार,
रत्न जड़ित– रत्नों से जड़ा हुआ,	दीदार–दर्शन,
असह्य– जो सहन न किया जा सके,	आगार–भण्डार।

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. ईश्वर का असली निवास कहाँ है?

   क. मन्दिर–मस्ज़िद में — ख. अमीरों के महलों में

   ग. दीन–दुःखियों के झोंपड़ों में — घ. धार्मिक समारोहों में

2. हमारे कल्पित ईश्वर का नाम क्या है?

क. दीन–बन्धु　　　　ख. लक्ष्मी नारायण

ग. त्रिलोकपति　　　　घ. रसिक बिहारी

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

3. 'हम नाम के आस्तिक है।' लेखक ने ऐसा क्यों कहा है?

4. दीनों की सेवा न करने वाले व्यक्ति को लेखक आस्तिक क्यों नहीं मानता है?

5. संधि विच्छेद कीजिये–

त्रिलोकेश्वर, अत्याचार, परमात्मा, महात्मा।

6 निम्नलिखित सामासिक पदों का विग्रह कीजिये तथा समास का नाम बतलाइये

दीन–दुःखी, दीन–बन्धु, रत्नजड़ित, स्वर्ण–सिंहासन, ईश्वरभक्त, दरिद्र– नारायण, धन–दौलत, धर्म–कर्म , टूटी–फूटी, राज–मन्दिर ।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

7. धनी व्यक्ति के स्वर्ग–प्रवेश के बारे में महात्मा ईसा के क्या विचार है ?

8. अब ''लक्ष्मी–नारायण'' को ''दरिद्र–नारायण'' बनाना ही पड़ेगा, क्यों और किस प्रकार ?

9. 'दीन–दुर्बल' का दिल दुःखाना भगवान का मन्दिर ढहाना है।' लेखक के उक्त विचार की समीक्षा कीजिए ?

10. 'मरे बैल की चाम सों लौह भस्म ह्वै जाय'। 'मरे बैल के चमड़े' से 'लोहे के भस्म' होने के कथन का क्या आशय है ?

निबन्धात्मक प्रश्न

11. 'दरिद्र की सेवा ही सच्ची सेवा है' लगभग 200 शब्दों में अपने विचार व्यक्त कीजिए।

12. भावार्थ स्पष्ट कीजिए –

I　　दीन–दुःखियों के दर्द का मर्मी ही महात्मा है।

II　　दीन–बन्धु की ओट में हम दीनों का खासा शिकार खेल रहे हैं।

III　　प्रेमी का उदार हृदय तो दया का आगार होता है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की उत्तरमाला

1 ग

2 क

पाठ–5

भोलाराम का जीव

I8TD8H

हरिशंकर परसाई

जन्म – 1924

मृत्यु – 1995

लेखक परिचय

हरिशंकर परसाई हिन्दी के पहले रचनाकार हैं, जिन्होंने व्यंग्य को विधा का दर्जा दिलाया और उसे हल्के–फुल्के मनोरंजन की परम्परागत परिधि से उबार कर समाज के सामयिक प्रश्नों से जोड़ा। उनकी व्यंग्य रचनाएँ हमारे मन में गुदगुदी ही पैदा नहीं करतीं, बल्कि हमें उन सामाजिक वास्तविकताओं के सामने खड़ा करती हैं, जिनसे किसी भी व्यक्ति का अलग रह पाना असम्भव है। सामाजिक पाखंड और रूढ़िवादी जीवन मूल्यों की खिल्ली उड़ाते हुए, उन्होंने सदैव विवेक और विज्ञान सम्मत दृष्टि को सकारात्मक रूप में प्रस्तुत किया है । उनकी भाषा शैली में खास किस्म का अपनापन है, जिससे पाठक लेखक के साथ एकात्मकता का अनुभव करता है।

कृतियाँ

हँसते हैं रोते हैं, जैसे उनके दिन फिरे, भोलाराम का जीव, रानी नागफनी की कहानी, भूत के पाँव पीछे, तट की खोज, वैष्णव की फिसलन, सदाचार का ताबीज, विकलांग श्रद्धा का दौर।

पाठ परिचय –

लेखक ने अपने एक परिचित रिटायर्ड कर्मचारी की दुःख पूर्ण यथार्थ घटना से प्रेरित होकर इस कहानी की रचना की । कहानी का कथानक इतना है कि– 'भोलाराम के जीव की तलाश स्वर्ग में हो रही है, मगर उसका जीव यमदूत को चकमा देकर अपनी पेंशन की फाइल में घुस गया। जीव की तलाश करते हुए नारद आते हैं और साहब को घूस में अपनी वीणा देकर दबी फाइल निकलवाते हैं। फाइल में चिपके भोलाराम के जीव से स्वर्ग चलने के लिए कहते हैं। मगर भोलाराम का जीव कहता है कि मैं तो अपनी पेंशन की दरख्वास्तों में ही चिपके रहना चाहता हूँ।''

कहानी सौन्दर्य कथानक में न होकर उसके सहारे उभारे गए तीखे रिमार्क और चुटीले व्यंग्य के माध्यम से शासकीय ढाँचे की लाल फीता शाही, घूसखोरी और क्रूरता को उजागर करने का प्रयत्न किया है।

भारत की समाज व्यवस्था और प्रशासन तन्त्र का चित्रण इस कहानी में कुशलता और मार्मिकता के साथ किया गया। उसमें मार्मिकता में सनी मानवीय संवेदना भी है और तीखे व्यंग्य से तिलमिला देने वाली गम्भीर चोटें भी।

भोला राम का जीव

ऐसा कभी नहीं हुआ था................

धर्मराज लाखों वर्षों से असंख्य आदमियों को कर्म और सिफारिश के आधार पर स्वर्ग या नरक में निवास स्थान 'अलॉट' करते आ रहे थे, पर ऐसा कभी नहीं हुआ था।

सामने बैठे चित्रगुप्त बार–बार थूक से पन्ने पलट कर रजिस्टर देख रहे थे। गलती पकड़ में नहीं आ रही थी। आखिर उन्होंने खीजकर रजिस्टर इतने जोर से बन्द किया कि मक्खी चपेटे में आ गई। उसे निकालते हुए वह बोले महाराज रिकॉर्ड सब ठीक है। भोलाराम के जीव ने पाँच दिन पहले देह त्यागी और यमदूत के साथ इस लोक के लिए रवाना भी हुआ, पर यहाँ अभी तक नहीं पहुँचा।

धर्मराज ने पूछा, ''और वह दूत कहाँ है ?'' ''महाराज वह भी लापता है।''

इसी समय द्वार खुले और एक यमदूत बहुत बदहवास–सा वहाँ आया। उसका मौलिक कुरूप चेहरा परिश्रम, परेशानी और श्रम के कारण और भी अधिक विकृत हो गया था। उसे देखते ही चित्रगुप्त चिल्ला उठे, अरे! तू कहाँ रहा इतने दिन? भोलाराम का जीव कहाँ है?

यमदूत हाथ जोड़कर बोला, ''दया–निधान मैं कैसे बताऊँ कि क्या हो गया? आज तक मैंने धोखा नहीं खाया था, पर इस बार भोलाराम का जीव मुझे चकमा दे गया। पाँच दिन पहले जब जीव ने भोलाराम की देह त्यागी, तब मैंने उसे पकड़ा और इस लोक की यात्रा आरम्भ की। नगर के बाहर ज्यों ही मैं उसे लेकर एक तीव्र वायु तरंग पर सवार हुआ, त्योंही मेरे चंगुल से छूटकर वह न जाने कहाँ चला गया। इन पाँचों दिनों में मैंने सारा ब्रह्माण्ड छान डाला, पर उसका कहीं पता नहीं चला।''

धर्मराज क्रोध से बोले, ''मूर्ख, जीवों को लाते–लाते बूढ़ा हो गया। फिर भी एक मामूली बूढ़े आदमी के जीव ने तुझे चकमा दे दिया।''

दूत ने सिर झुकाकर कहा, ''महाराज! मेरी सावधानी में बिल्कुल कसर नहीं थी, मेरे इन अभ्यस्त हाथों से अच्छे–अच्छे वकील भी नहीं छूट सके, पर इस बार तो कोई इन्द्रजाल हो गया।''

चित्रगुप्त ने कहा, ''महाराज आजकल पृथ्वी पर इस प्रकार का व्यापार बहुत बना है। लोग दोस्तों को फल भेजते हैं और रास्ते में ही रेल्वे वाले उड़ा लेते हैं। हौजरी के पार्सलों के मोजे रेल्वे अफसर पहनते हैं। मालगाड़ी के डिब्बे के डिब्बे रास्ते में कट जाते हैं। एक बात और हो रही है। राजनीतिक दलों के नेता विरोधी नेता को उड़ाकर कहीं बन्द कर देते हैं। कहीं भोलाराम के जीव को भी तो किसी विरोधी ने, मरने के बाद भी खराबी करने के लिए नहीं उड़ा लिया?''

धर्मराज ने व्यंग्य से चित्रगुप्त की ओर देखते हुए कहा, ''तुम्हारी भी रिटायर होने की उम्र आ गई। भोलाराम जैसे नगण्य, दीन आदमी से किसी को क्या लेना देना?''

इसी समय कहीं से घूमते–फिरते नारद मुनि वहाँ आ गये। धर्मराज को गुम–सुम बैठे देख बोले– ''क्यों धर्मराज! कैसे चिन्तित बैठे हैं ? क्या नरक में निवास स्थान की समस्या अभी हल नहीं हुई ?''

धर्मराज ने कहा, ''वह समस्या तो कभी की हल हो गई मुनिवर! नरक में पिछले सालों में बड़े गुणी कारीगर आ गये हैं। कई इमारतों के ठेकेदार, जिन्होंने पूरे पैसे लेकर रद्दी इमारतें बनायीं। बड़े–बड़े इंजीनियर आ गये हैं, जिन्होंने ठेकेदार से मिलकर भारत की पंचवर्षीय योजना का पैसा खाया। ओवरसीयर हैं, जिन्होंने उन मजदूरों की हाजिरी भर कर पैसा हड़पा, जो कभी काम पर गये ही नहीं।''

इन्होंने बहुत जल्दी नरक में कई इमारतें तान दी हैं। यह समस्या तो हल हो गई। भोलाराम नाम के एक आदमी की पाँच दिन पहले ही मृत्यु हो गई। उसके जीव को यह दूत यहाँ ला रहा था कि जीव इसे रास्ते में चकमा देकर भाग गया। इसने सारा ब्रह्माण्ड छान डाला, पर वह कहीं नहीं मिला। अगर ऐसा होने लगा तो पाप–पुण्य का भेद ही मिट जायेगा।''

नारद ने पूछा, ''उस पर इन्कमटैक्स तो बकाया नहीं था? हो सकता है, उन लोगों ने रोक लिया हो।''

चित्रगुप्त ने कहा, ''इन्कम होती तो टैक्स होता,..................भुखमरा था।''

नारद बोले, ''मामला बड़ा दिलचस्प है अच्छा, मुझे उसका नाम पता तो बतलाओ! मैं पृथ्वी पर जाता हूँ।''

चित्रगुप्त ने रजिस्टर देखकर बताया, ''भोलाराम नाम था उसका, जबलपुर शहर के धमापुर मुहल्ले में नाले के किनारे एक डेढ़ कमरे के टूटे–फूटे मकान में वह परिवार समेत रहता था। उसके एक स्त्री थी, दो लड़के और एक लड़की, उम्र लगभग पैंसठ साल। सरकारी नौकर था, पाँच साल पहले रिटायर हो गया था।

मकान का किराया उसने एक साल से नहीं दिया था । इसलिए मकान मालिक उसे निकालना चाहता था कि इतने में भोलाराम ने संसार ही छोड़ दिया। आज पाँचवाँ दिन है। बहुत सम्भव है कि अगर मकान मालिक वास्तविक मकान मालिक है, तो उसने भोलाराम के मरते ही उसके परिवार को निकाल दिया होगा। इसलिए आपको परिवार की तलाश में काफी घूमना पड़ेगा।''

नारद भोलाराम के नगर में पहुँच गए।

माँ बेटी के सम्मिलित क्रन्दन से ही नारद भोलाराम का मकान पहचान गये।

द्वार पर जाकर उन्होंने आवाज लगाई, नारायण! नारायण! लड़की ने देखकर कहा– ''आगे जाओ महाराज!''

नारद ने कहा, ''मुझे भिक्षा नहीं चाहिए। मुझे भोलाराम के बारे में कुछ पूछताछ करनी है। अपनी माँ को जरा बाहर भेजो, बेटी !''

भोलाराम की पत्नी बाहर आयी। नारद ने कहा, ''माता भोलाराम को क्या बीमारी थी?''

''क्या बताऊँ? गरीबी की बीमारी थी। पाँच साल हो गये पेन्शन पर बैठे, पर पेन्शन अभी तक नहीं मिली। हर दस पन्द्रह दिन में एक दरख्वास्त देते थे, पर वहाँ से या तो जवाब नहीं आता था और आता तो यही कि तुम्हारी पेन्शन पर विचार हो रहा है। इन पाँच सालों में मेरे सब गहने बेच कर

हम लोग खा गये। फिर बर्तन बिके। अब कुछ नहीं बचा था। फाके होने लगे थे। चिन्ता में घुलते–घुलते और भूख से मरते–मरते दम तोड़ दिया।''

नारद ने कहा, '' क्या करोगी, माँ ? .... उनकी इतनी ही उम्र थी।''

''ऐसा तो मत कहो, महाराज! उम्र तो बहुत थी। पचास साठ रुपया महीना पेन्शन मिलती, तो कहीं कुछ काम करके गुजारा हो जाता। पर क्या करें पाँच साल नौकरी से बैठे हो गये और अभी तक कोई कौड़ी नहीं मिली।''

दुःख की कथा सुनने की फुरसत नारद को थी ही नहीं । वह अपने मुद्दे पर आये और बोले, ''माँ यह बताओ कि यहाँ किसी से क्या उनका विशेष प्रेम था, जिसमें उनका जी लगा हो ?''

पत्नी बोली, ''लगाव तो महाराज, बाल बच्चों से ही होता है।''

''नहीं, परिवार के बाहर भी हो सकता है, मेरा मतलब कोई स्त्री...?''

स्त्री ने गुर्राकर नारद की ओर देखा। बोली, ''बको मत, महाराज साधु हो, कोई लुच्चे–लफंगे नहीं हो। ज़िन्दगी भर उन्होंने किसी दूसरी स्त्री को आँख उठाकर भी नहीं देखा ।''

नारद हँसकर बोले, ''तुम्हारा सोचना ठीक ही है। यह भ्रम अच्छी गृहस्थी का आधार है। अच्छा, माता मैं चला।''

व्यंग्य समझने की असमर्थता ने नारद को सती के क्रोध की ज्वाला से बचा लिया।

स्त्री ने कहा,'' महाराज, आप तो साधु हैं, सिद्ध पुरुष हैं। कुछ ऐसा नहीं कर सकते कि उनकी रुकी हुई पेन्शन मिल जाय। इन बच्चों का पेट कुछ दिन भर जायेगा।''

नारद को दया आ गई थी। वह कहने लगे,'' साधुओं की कौन बात मानता है? मेरा यहाँ कोई मठ तो है नहीं । फिर भी मैं सरकारी दफ्तर जाऊँगा और कोशिश करूँगा।''

वहाँ से चलकर नारद सरकारी दफ्तर पहुँचे। जहाँ पहले ही कमरे में बैठे बाबू से उन्होंने भोलाराम के बारे में बातें की । उस बाबू ने उन्हें ध्यानपूर्वक देखा और बोला, ''भोलाराम ने दरख्वास्तें तो भेजी थीं, पर उन पर वजन ही नहीं रखा था, इसलिए कहीं उड़ गई होंगी।''

नारद ने कहा, ''भाई यहाँ तो बहुत से पेपरवेट रखे हैं । इन्हें क्यों नहीं रख दिया ?''

बाबू हँसा, ''आप साधु हैं, आपको दुनियादारी समझ में नहीं आती। दरख्वास्तें पेपरवेट से नहीं दबती .... खैर, आप उस कमरे में बैठे बाबू से मिलिए।''

नारद उस बाबू के पास गये। उसने तीसरे के पास भेजा, तीसरे ने चौथे के पास, चौथे ने पाँचवे के पास। जब नारद पच्चीस–तीस बाबुओं और अफसरों के पास घूम आये, तब एक चपरासी ने कहा, ''महाराज! आप क्यों इस झंझट में पड़ गये। आप अगर साल भर भी यहाँ चक्कर लगाते रहें, तो भी काम नहीं होगा। आप तो सीधे बड़े साहब से मिलिये। उन्हें खुश कर लिया तो अभी काम हो जायेगा।''

नारद बड़े साहब के कमरे में पहुँचे। बाहर चपरासी ऊँघ रहा था, इसलिए उन्हें किसी ने छेड़ा नहीं। उन्हें एकदम बिना विजिटिंग कार्ड के आया देख, साहब बड़े नाराज हुए । बोले, ''इसे कोई मन्दिर–वन्दिर समझ लिया है क्या? धड़धड़ाते चले आये चिट क्यों नहीं भेजी?''

नारद ने कहा, ''कैसे भेजता ? चपरासी तो सो रहा है ?''

''क्या काम है ?'' साहब ने रौब से पूछा।

नारद ने भोलाराम का पेन्शन–केस बतलाया।

साहब बोले, ''आप हैं वैरागी दफ्तरों के रीति–रिवाज नहीं जानते। असल में भोलाराम ने गलती की। भाई यह भी एक मन्दिर है। यहाँ भी दान करना पड़ता है, भेंट चढ़ानी पड़ती है। आप भोलाराम के आत्मीय मालूम होते हैं। भोलाराम की दरख्वास्तें उड़ रहीं हैं। उन पर वजन रखिये।''

नारद ने सोचा कि फिर यहाँ वजन की समस्या खड़ी हो गई। साहब बोले, ''भई सरकारी पैसे का मामला है। पेन्शन का केस बीसों दफ्तरों में जाता है। देर लग ही जाती है। हजारों बार एक ही बात को हजार जगह लिखना पड़ता है, तब पक्की होती है। जितनी पेन्शन मिलती है, उतनी कीमत की स्टेशनरी लग जाती है। हाँ जल्दी भी हो सकती है, मगर............................''. साहब रुके।

नारद ने कहा, ''मगर क्या ? ''

साहब ने कुटिल मुस्कान के साथ कहा, ''मगर वजन चाहिये। आप समझे नहीं। जैसे, आपकी सुन्दर वीणा है, इसका भी वजन भोलाराम की दरख्वास्त पर रखा जा सकता है। मेरी लड़की गाना–बजाना सीखती है। यह मैं उसे दूँगा। साधुओं की वीणा तो बड़ी पवित्र होती है। लड़की जल्दी संगीत सीख गई, तो उसकी शादी हो जायेगी।''

नारद अपनी वीणा छिनते देखकर जरा घबराये। पर फिर संभल कर उन्होंने वीणा टेबल पर रख कर कहा, ''यह लीजिये। अब जरा जल्दी उसकी पेन्शन का आर्डर निकाल दीजिये।''

साहब ने प्रसन्नता से उन्हें कुर्सी दी, वीणा को एक कोने में रखा और घण्टी बजाई। चपरासी हाजिर हुआ।

साहब ने हुक्म दिया, ''बड़े बाबू से भोलाराम के केस की फाइल लाओ।''

थोड़ी देर बाद चपरासी भोलाराम की सौ–ड़ेढ सौ दरख्वास्तों से भरी फाइल लेकर आया। उसमें पेंशन के कागजात भी थे। साहब ने फाइल पर नाम देखा और निश्चित करने के लिए पूछा, ''क्या नाम बताया साधुजी आपने।''

नारद ने समझा कि कुछ ऊँचा सुनता है। इसलिए जोर से बोले, ''भोलाराम।''

सहसा फाइल में से आवाज आयी, ''कौन पुकार रहा है मुझे, पोस्टमैन है क्या ? पेंशन का आर्डर आ गया?''

साहब डरकर कुर्सी से लुढ़क गये। नारद भी चौंके। पर दूसरे ही क्षण बात समझ गये। बोले, ''भोलाराम! तुम क्या भोलाराम के जीव हो?''

''हाँ'' आवाज आयी।

नारद ने कहा, ''मैं नारद हूँ। मैं तुम्हें लेने आया हूँ। चलो, स्वर्ग में तुम्हारा इन्तजार हो रहा है।''

आवाज आयी, ''मुझे नहीं जाना। मैं तो पेंशन की दरख्वास्तों में अटका हूँ। यहीं मेरा मन लगा है। मैं अपनी दरख्वास्तें छोड़कर नहीं जा सकता ....!''

शब्दार्थ

खीज़कर– नाराज़ होकर	लापता– गायब हो जाना
बदहवास– होश में नहीं होना	अभ्यस्त– अभ्यास से कुशल
नगण्य– गिनती के योग्य न होना	दरख्वास्त– प्रार्थना पत्र
क्रन्दन– दुःख से रोने का स्वर	दफ्तर–कार्यालय

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. ''तुम्हारी भी रिटायर होने की उम्र आ गयी'' का क्या अर्थ है?
   (क) तुम बूढ़े हो गये हो।
   (ख) तुम्हारी अक्ल मारी गई है।
   (ग) तुम बेसमझी की बातें करते हो।
   (घ) तुम्हारी श्रम से बचने की आदत हो गई है।
2. ''इन्द्रजाल होना'' मुहावरे का क्या अर्थ है?
   (क) भयभीत होना
   (ख) धोखा होना
   (ग) आश्चर्य होना
   (घ) गर्व होना।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

3. कमरे में नारद के एकदम चले जाने पर साहब क्यों नाराज हुए ?
4. भोलाराम के मरने का सही कारण क्या था ?
5. 'पर ऐसा कभी नहीं हुआ था,'' वह कौन सी घटना थी ?
6. साहब ने बड़े बाबू से भोलाराम के केस की फाइल कब मँगवायी?
7. फाइल में से जो आवाज आई वह किसकी आवाज थी ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

8. ''भोलाराम ने दरख्वास्तें तो भेजी थीं, पर उन पर वजन ही नहीं रखा था, इसलिए कहीं उड़ गई होंगी''। बाबू के इस कथन में वजन शब्द से क्या तात्पर्य है?
9. ''भोलाराम का जीव'' कहानी के स्थान पर दूसरा कोई उपर्युक्त शीर्षक प्रस्तावित कीजिए।

10. भोलाराम का जीव कहाँ गया था ? वहाँ रहने का क्या कारण था ?

निबन्धात्मक प्रश्न

11. ''कहानी का सौन्दर्य कथानक में न होकर उसके सहारे उभारे गये तीखे रिमार्क और चुटीले व्यंग्य में है,'' इस कथन की विवेचना कीजिए।

12. भोलाराम के जीव को ढूँढते हुए यदि नारद जी स्वर्ग से न आते तो कहानी के कथानक में क्या अन्तर हो जाता?

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की उत्तरमाला

1. **ग**

2. **ख**

•••

पाठ–6

गिल्लू

I939A5

महादेवी वर्मा

जन्म– 1907

मृत्यु– 1987

लेखक परिचय –

छायावादी काव्य की वृहद्चतुष्टयी में महादेवी वर्मा हैं। महादेवी के बाल मन पर धर्मपरायण माता हेमरानी देवी का अत्यन्त प्रभाव पड़ा तथा उनके द्वारा ही धार्मिक ग्रन्थों का ज्ञान हुआ। महादेवी कोमल हृदय नारी और रहस्यवादी भावना से ओत–प्रोत होकर वेदनामय काव्य में लौकिक से भिन्न आध्यात्मिक जगत की सहज संवेद्य अनुभूति को अभिव्यक्त करती हैं।

काव्यात्मक अनुभूति की तरह ही गद्य में भी अपनी संवेदनाओं का सजीव चित्र महादेवी ने प्रस्तुत किया है। सामाजिक समस्याओं और अभिशप्त नारी जीवन के जलते प्रश्नों को विचारात्मक निबन्ध से अभिव्यक्त किया है। महादेवी ने जीवन यात्रा में सम्पर्क में आने प्रत्येक चेतन को अपने साहित्य का अवलम्बन प्रत्यक्ष–परोक्ष बनाया है। इसी अभिव्यंजना में 'संस्मरणात्मक–रेखाचित्र' विधा का सहज सृजन आपकी लेखनी से होता है।

कृतियाँ

नीहार, रश्मि, नीरजा, सान्ध्यगीत, दीपशिखा, यामा (काव्य) स्मृति की रेखाएँ , अतीत के चलचित्र (गद्य)

पाठ परिचय

'गिल्लू' संस्मरण के माध्यम से महादेवी ने जीव–जन्तुओं की समझ और संवेदना को अभिव्यंजित किया है। गिल्लू (गिलहरी) का लेखिका के प्रत्येक कार्य के प्रति व्यवहार यह अनुभूति कराता है कि मौन अभिव्यक्ति को समझने के लिए मन को एकाकार करना अपरिहार्य है। इसी कारण गिल्लू की सूक्ष्म संवेदना को लेखिका ने अनुभव किया। इस संस्मरण के माध्यम से लेखिका आधुनिकता और भौतिकवाद से संवेदना शून्य मन को द्रवित कर संवेदनशील बनाने में सहायक है।

गिल्लू

सोनजूही में आज एक पीली कली लगी है। इसे देखकर अनायास ही उस छोटे जीव का स्मरण हो आया, जो इस लता की सघन हरीतिमा में छिपकर बैठता था और फिर मेरे निकट पहुँचते

ही कंधे पर कूदकर मुझे चौंका देता था। तब मुझे कली की खोज रहती थी, पर आज उस लघुप्राण की खोज है।

परन्तु वह तो अब तक इस सोनजूही की जड़ में मिट्टी होकर मिल गया होगा। कौन जाने स्वर्णिम कली के बहाने वही मुझे चौंकाने ऊपर आ गया हो।

अचानक एक दिन सवेरे कमरे से बरामदे में आकर मैंने देखा, दो कौवे एक गमले के चारों ओर चोंचों से छुआ–छुओवल जैसा खेल खेल रहे हैं। यह काकभुशुंडि भी विचित्र पक्षी है– एक साथ समादरित, अनादरित, अति सम्मानित, अति अवमानित।

हमारे बेचारे पुरखे न गरुड़ के रूप में आ सकते हैं, न मयूर के, न हंस के । उन्हें पितृपक्ष में हमसे कुछ पाने के लिए काक बनकर ही अवतीर्ण होना पड़ता है। इतना ही नहीं दूरस्थ प्रियजनों को भी अपने आने का मधु संदेश इनके कर्कश स्वर में ही देना पड़ता है। दूसरी ओर हम कौवा और काँव–काँव करने को अवमानना के अर्थ में ही प्रयुक्त करते हैं। मेरे काकपुराण के विवेचन में अचानक बाधा आ पड़ी, क्योंकि गमले और दीवार की संधि में छिपे एक छोटे से जीव पर मेरी दृष्टि रुक गयी। निकट जाकर देखा, गिलहरी का छोटा सा बच्चा है, जो संभवतः घोंसले से गिर पड़ा है और अब कौवे जिसमें सुलभ आहार खोज रहे हैं।

काकद्वय की चोंचों के दो घाव उस लघुप्राण के लिए बहुत थे, अतः वह निश्चेष्ट–सा गमले से चिपटा पड़ा था।

सबने कहा, कौवे की चोंच का घाव लगने के बाद यह बच नहीं सकता, अतः इसे ऐसे ही रहने दिया जाये।

परन्तु मन नहीं माना–उसे हौले से उठाकर अपने कमरे में लाई, फिर रूई से रक्त पोंछकर घावों पर पेंसिलिन का मरहम लगाया।

रूई की पतली बत्ती दूध से भिगोकर जैसे–तैसे उसके नन्हे से मुँह में लगाई पर मुँह खुल न सका और दूध की बूँदें दोनों ओर ढुलक गई।

कई घंटे के उपचार के उपरान्त उसके मुँह में एक बूँद पानी टपकाया जा सका। तीसरे दिन वह इतना अच्छा और आश्वस्त हो गया कि मेरी अँगुली अपने दो नन्हे पंजों से पकड़कर, नीले काँच के मोतियों जैसी आँखों से इधर–उधर देखने लगा।

तीन–चार मास में उसके स्निग्ध रोएँ, झब्बेदार पूँछ और चंचल चमकीली आँखें सबको विस्मित करने लगीं।

हमने उसकी जातिवाचक संज्ञा को व्यक्तिवाचक का रूप दे दिया और इस प्रकार हम उसे गिल्लू कहकर बुलाने लगे। मैंने फूल रखने की एक हल्की डलिया में रूई बिछाकर उसे तार से खिड़की पर लटका दिया।

वही दो वर्ष गिल्लू का घर रहा। वह स्वयं हिलाकर अपने घर में झूलता और अपनी काँच के मनकों–सी आँखों से कमरे के भीतर और खिड़की से बाहर न जाने क्या देखता–समझता रहता था। परन्तु उसकी समझदारी और कार्यकलाप पर सबको आश्चर्य होता था।

जब मैं लिखने बैठती तब अपनी ओर मेरा ध्यान आकर्षित करने की उसे इतनी तीव्र इच्छा होती थी कि उसने एक अच्छा उपाय खोज निकाला। वह मेरे पैर तक आकर सर्र से परदे पर चढ़ जाता और फिर उसी तेजी से उतरता। उसकी यह दौड़ने का क्रम तब तक चलता जब तक मैं उसे पकड़ने के लिए न उठती। कभी मैं गिल्लू को पकड़कर एक लम्बे लिफाफे में इस प्रकार रख देती कि उसके अगले दो पंजों और सिर के अतिरिक्त सारा लघुगात लिफाफे के भीतर बन्द रहता। इस अद्‌भुत स्थिति में कभी–कभी मेज पर दिवार के सहारे खड़ा रहकर वह अपनी चमकीली आँखों से मेरा कार्यकलाप देखा करता ।

भूख लगने पर चिक–चिक करके मानो वह मुझे सूचना देता और काजू या बिस्किट मिल जाने पर उसी स्थिति में लिफाफे से बाहर वाले पंजों से पकड़कर उसे कुतरता रहता।

फिर गिल्लू के जीवन का प्रथम बंसत आया। नीम–चमेली की गंध मेरे कमरे में हौल–हौले आने लगी। बाहर की गिलहरियाँ खिड़की की जाली के पास आकर चिक–चिक करके न जाने क्या कहने लगी ?

गिल्लू को जाली के पास बैठकर अपनेपन से बाहर झाँकते देखकर मुझे लगा कि इसे मुक्त करना आवश्यक है।

मैंने कीलें निकालकर जाली का एक कोना खोल दिया और इस मार्ग से गिल्लू ने बाहर जाने पर सचमुच ही मुक्ति की साँस ली। इतने छोटे जीव को घर में पले कुत्ते, बिल्लियों से बचाना भी एक समस्या ही थी।

आवश्यक कागज–पत्रों के कारण मेरे बाहर जाने पर कमरा बंद ही रहता है। मेरे कॉलेज से लौटने पर जैसे ही कमरा खोला गया और मैंने भीतर पैर रखा, वैसे ही गिल्लू अपने जाली के द्वार से भीतर आकर मेरे पैर से सिर और सिर से पैर तक दौड़ लगाने लगा। तब से यह नित्य का क्रम हो गया।

मेरे कमरे से बाहर जाने पर गिल्लू भी खिड़की की खुली जाली की राह से बाहर चला जाता और दिन भर गिलहरियों के झुंड का नेता बना हर डाल पर उछलता–कूदता रहता और ठीक चार बजे वह खिड़की से भीतर आकर अपने झूले में झूलने लगता।

मुझे चौंकाने की इच्छा उसमें न जाने कब और कैसे उत्पन्न हो गई थी। कभी फूलदान के फूलों में छिप जाता, कभी परदे की चुन्नट, कभी सोनजुही की पत्तियों में।

मेरे पास बहुत से पशु–पक्षी हैं और उनका मुझसे लगाव भी कम नहीं है, परन्तु उनमें से किसी को मेरे साथ मेरी थाली में खाने की हिम्मत हुई है, ऐसा मुझे स्मरण नहीं आता।

गिल्लू इनमें अपवाद था। मैं जैसे ही खाने के कमरे में पहुँचती, वह खिड़की से निकलकर आँगन की दीवार, बरामदा पार करके मेज पर पहुँच जाता और मेरी थाली में बैठ जाना चाहता। बड़ी कठिनाई से मैंने उसे थाली के पास बैठना सिखाया, जहाँ बैठकर वह मेरी थाली में से एक–एक चावल उठाकर बड़ी सफाई से खाता रहता। काजू उसका प्रिय खाद्य था और कई दिन काजू न मिलने पर अन्य खाने की चीजें या तो लेना बंद कर देता या झूले से नीचे फेंक देता था।

उसी बीच मुझे मोटर दुर्घटना में आहत होकर कुछ दिन अस्पताल में रहना पड़ा। उन दिनों जब मेरे कमरे का दरवाजा खोला जाता गिल्लू अपने झूले से उतरकर दौड़ता और फिर किसी दूसरे को देखकर उसी तेजी से अपने घोंसले में जा बैठता। सब उसे काजू दे आते, परन्तु अस्पताल से लौटकर जब मैंने उसके झूले की सफाई की तो उसमें काजू भरे मिले, जिनसे ज्ञात होता था कि वह उन दिनों अपना प्रिय खाद्य कितना कम खाता रहा।

मेरी अस्वस्थता में वह तकिए पर सिरहाने बैठकर अपने नन्हे–नन्हे पंजों से मेरे सिर और बालों को इतने हौले–हौले सहलाता रहता कि उसका हटना एक परिचारिका के हटने के समान लगता।

गर्मियों में जब मैं दोपहर में काम करती रहती तो गिल्लू न बाहर जाता न अपने झूले में बैठता। उसने मेरे निकट रहने के साथ गरमी से बचने का एक सर्वथा नया उपाय खोज निकाला था। वह मेरे पास रखी सुराही पर लेट जाता और इस प्रकार समीप भी रहता और ठंडक में भी रहता।

गिलहरियों के जीवन की अवधि दो वर्ष से अधिक नहीं होती, अतः गिल्लू की जीवन यात्रा का अंत आ ही गया। दिन भर न उसने कुछ खाया न बाहर गया। रात में अंत की यातना में भी वह अपने झूले से उतरकर मेरे बिस्तर पर आया और ठंडे पंजों से मेरी वही अंगुली पकड़कर हाथ से चिपक गया, जिसे उसने अपने बचपन की मरणासन्न स्थिति में पकड़ा था। पंजे इतने ठंडे हो रहे थे कि मैंने जागकर हीटर जलाया और उष्णता देने का प्रयत्न किया। परन्तु प्रभात की प्रथम किरण के स्पर्श के साथ ही वह किसी और जीवन में जागने के लिए सो गया।

उसका झूला उतारकर रख दिया गया है और खिड़की की जाली बंद कर दी गई है, परन्तु गिलहरियों की नयी पीढ़ी जाली के उस पार चिक–चिक करती ही रहती है और सोनजुही पर बंसत आता ही रहता है।

सोनजुही की लता के नीचे गिल्लू को समाधि दी गई है– इसीलिए भी कि उसे वह लता सबसे अधिक प्रिय थी–इसलिए भी कि उस लघुगात का, किसी वासंती दिन, जूही के पीताभ छोटे फूल में खिल जाने का विश्वास, मुझे संतोष देता है।

<u>शब्दार्थ</u>

आहार– भोजन	हौले से – धीरे से
सुलभ– सरलता से प्राप्त होने वाला	कार्यकलाप– क्रियाएँ
गात– शरीर	लघुप्राण–छोटा सा प्राणी

आश्वस्त– विश्वास रखने वाला	निश्चेष्ट– क्रियाहीन
खाद्य– भोजन	बहिष्कार–बाहर निकालना
परिचारिका– सेविका	उष्णता– गर्मी
सर्वथा– पूरी तरह	लघुगात– छोटा–जीवन
पीताभ–जिसमें पीली आभा निकलती हो।	

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1 'आज उस लघुप्राण की खोज है।' महादेवी वर्मा ने लघुप्राण किसे कहा है?

(क) पीली कली (ख) सोनजूही

(ग) गिल्लू (घ) कौवा

2 मरणासन्न शब्द का अर्थ बताइये।

(क) मरने के लिए आसन (ख) मरने के बाद का आसन

(ग) मृत्यु (घ) मृत्यु निकट होने की स्थिति

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

3 'कौवे' का आह्वान कब किया जाता है और क्यों ?

4 जातिवाचक से व्यक्तिवाचक रूप देने से क्या अभिप्राय है ?

5 लेखिका ने नन्हें से घायल गिलहरी के बच्चे की जान कैसे बचाई ?

6 नन्हा सा गिल्लू गिलहरियों के झुंड का नेता कैसे बना ?

7 विपरीतार्थक शब्द लिखिए

सुलभ, निश्चेष्ट, आवश्यक, लघु–प्राण

लघूत्तरात्मक प्रश्न

8 ''उसकी समझदारी और कार्यकलाप पर सबको आश्चर्य होता था'' गिल्लू के वे कार्यकलाप कौन से थे?

9 गिल्लू को मुक्त करने की आवश्यकता क्यों अनुभव हुई?

10 लेखिका के साथ हुई दुर्घटना के बाद गिल्लू ने अपनी आत्मीयता किस प्रकार प्रकट की?

निबन्धात्मक प्रश्न

11 सोन जुही के पीताभ फूल महादेवी वर्मा को क्या स्मरण कराते हैं और क्यों?

12 वन्य जीवों के संरक्षण के लिए आप क्या करेंगे अपने शब्दों में लिखिए ?

13 अपने पड़ौस के किसी पालतू पशु या पक्षी की आदतों का अवलोकन कर लिखिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की उत्तरमाला

1. **ग**
2. **घ**

पाठ–7
दीपदान

डॉ. रामकुमार वर्मा

I9C5BS

जन्म– 1905 ई.

मृत्यु– 1990 ई.

लेखक परिचय

डॉ. रामकुमार वर्मा आधुनिक हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध कवि, एकांकी–नाटक लेखक और आलोचक हैं। कवि व्यक्तित्व द्विवेदी युगीन प्रवृत्तियों से उदित होकर छायावाद क्षेत्र में मूल्यवान सिद्ध हुआ। नाटककार रामकुमार वर्मा का व्यक्तित्व कवि से अधिक शक्तिशाली और लोकप्रिय सिद्ध हुआ है। नाटककार धरातल से उनका 'एकांकीकार' स्वरूप ही उनकी विशेष महत्ता है और इस दिशा में वे आधुनिक हिन्दी एकांकी के 'जनक' कहे जाते हैं, जो निर्विवाद सत्य है।

डॉ. वर्मा के कृतित्व में एक विशेष धारा ऐतिहासिक एकांकियों की भी विकसित हुई, जिसमें उनकी सांस्कृतिक और साहित्यिक मान्यताओं का सुन्दरतम समन्वय स्थापित हुआ है। इनके एकांकी साहित्य में भारतीय आदर्शों एवं शाश्वत मूल्य– त्याग, करुणा, स्नेह, परोपकार आदि का सुन्दर सन्निवेश हुआ है।

कृतियाँ

वीर हम्मीर, चित्तौड़ की चिता, चित्ररेखा, जौहर (काव्य) कबीर का रहस्यवाद, साहित्य समालोचना, हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, (आलोचना) पृथ्वीराज की आँखें, रेशमी टाई, चारुमित्रा, सप्त–किरण, कौमुदी महोत्सव, दीपदान, ऋतुराज, इन्द्र धनुष, रूपरंग, रिमझिम (प्रमुख एकांकी) ।

पाठ परिचय

प्रस्तुत एकांकी में सोलहवीं शताब्दी की चितौड़ दुर्ग की ऐतिहासिक घटना को डॉ. रामकुमार वर्मा ने अत्यन्त मर्मस्पर्शी ढंग से प्रस्तुत किया है। दीपदान की कथा ऐतिहासिक और जनश्रुत है। कथानक में घटनाक्रम का विकास निरन्तर कौतूहल का निर्माण करता हुआ गतिशील होता है तथा चरम सीमा पर पहुँचकर जब पन्ना के नेत्रों के सम्मुख ही बनवीर उसके पुत्र चन्दन को कुँवर उदयसिंह समझ कर मृत्यु के घाट उतार देता है, तब भी पन्ना विचलित नहीं होती और यहीं एकांकी समाप्त होती है।

इस एंकाकी के संवाद पात्रानुकूल, चरित्राभिव्यंजक एवं घटनाक्रम को गति देने वाले हैं। भाषा, पात्र और भाव के अनुरूप है, साथ ही उसमें काव्यात्मक सरसता और मोहकता है। सम्पूर्णतः "दीपदान" वर्माजी की सफल ऐतिहासिक एकांकी है, जो चित्तौड़ की बलिदान की भव्य परम्परा का एक स्वर्ण–पृष्ठ हमारे सम्मुख खोल जाता है।

पात्र परिचय

(प्रवेशानुसार)

कुँवर उदयसिंह : चित्तौड़ के स्वर्गीय महाराणा साँगा का सबसे छोटा पुत्र राज्य का उत्तराधिकारी। आयु 14 वर्ष।

पन्ना (धाय माँ) : एक त्यागमयी वीरागंना। कुँवर उदयसिंह का संरक्षण करने वाली धाय माँ। आयु 30 वर्ष।

सोना : रावल सरूपसिंह की लड़की। अत्यन्त रूपवती और नटखट। आयु 16 वर्ष।

चन्दन : धाय माँ का पुत्र साहस और स्नेह का प्रतीक । आयु 13 वर्ष।

सामली : अन्तःपुर की परिचारिका। आयु 28 वर्ष।

कीरत : जूठी पत्तल उठाने वाला बारी। आयु 40 वर्ष।

बनवीर : महाराणा साँगा के भाई पृथ्वीराज का दासी पुत्र। क्रूर और विलासी। आयु 32 वर्ष।

समय : रात्रि का दूसरा प्रहर।

स्थान : कुँवर उदयसिंह का कक्ष।

रंग निर्देश : पूरी सजावट है। दरवाजों पर रेशमी परदे पड़े हैं। एक पार्श्व में उदयसिंह की शय्या है। सिरहाने पन्ना (धाय माँ) के बैठने का स्थान।

(नेपथ्य में नारियों की सम्मिलित नृत्य ध्वनि। मृदंग और कडखकी रमक। फिर नारियों का सम्मिलित कण्ठ से गान)

कंकड़ बंधन रण चढण, पुत्र बधाई चाव।
तीन दिहाड़ा त्याग रा, काँई रंक काँई राव।।
काँई रंक काँई राव।
काँई रंक काँई राव।।

(फिर नृत्य की ध्वनि)

धरा जाता धर्म पलटतां, त्रियां पड़ता ताव।
एं तीनहु दिन मरण रा, काँई रंक काँई राव।।
काँई रंक काँई राव।
काँई रंक काँई राव।।

(यह संगीत नेपथ्य में धीरे धीरे हल्का सुनाई पड़ता है)

उदयसिंह : (दौड़ता हुआ आता है, पुकारता है) धाय माँ। धाय माँ। (कोई उत्तर नहीं मिलता है। अपने आप) धाय माँ कहाँ है। (फिर पुकार कर) धाय माँ

पन्ना : (भीतर से आती हुई) क्या है कुँवर। (देखकर) अरे, साँझ हो गई, ओर तुमने अभी तक अपनी तलवार म्यान में नहीं रखी।

उदयसिंह : धाय माँ, देखो न कितनी सुन्दर–सुन्दर लडकियाँ नाच रही हैं।
गीत गाती हुई तुलजा भवानी के सामने नाच रही हैं। चलो न। देखो न।

पन्ना : मैं नहीं देख सकूँगी, लाल।

उदयसिंह : नहीं धाय माँ, चलो न। थोड़ी देर के लिए चलो न।

पन्ना : नहीं कुँवर इस समय नाच देखना अच्छा नहीं लगता।

उदयसिंह : क्यों नहीं अच्छा लगता। मैं तो उन्हें बड़ी देर तक देखता रहा और वे भी मुझे बड़ी देर तक देखती रही, धाय माँ। मैं कितना अच्छा हूँ, धाय माँ।

पन्ना : बहुत अच्छे हो। तुम तो चित्तौड़ के सूरज हो। महाराणा साँगा जी के छोटे कुँवर। सूरज की तरह तुम्हारा नाम कुँवर उदयसिंह रखा गया है।

उदयसिंह : (हँसकर) अच्छा । यह बात है। पर क्या रात में भी सूरज का उदय होता है।
मैं तो रात में भी हँसता–खेलता रहता हूँ।

पन्ना : दिन में तो तुम चित्तौड़ के सूरज हो, कुँवर। रात में तुम राजवंश के दीपक हो। महाराणा साँगा के कुल–दीपक।

उदयसिंह : कुल दीपक। कहीं तुम मुझे दान न कर देना धाय माँ। वे नाचने वाली लड़कियाँ तुलजा भवानी की पूजा में दीप दान करके ही नाच रही है। वे दीपक छोटे से कुण्ड में कैसे नाचते है, धाय माँ (मचले हुए स्वर में) चलो न, धाय माँ। तुम उनका दीपदान देख लो । जिस तरह उनके दीपक नाचते हैं, उसी तरह वे भी नाच रही हैं ।

पन्ना : मैं इस समय कुछ नहीं देखूँगी कुँवर ।

उदयसिंह : (रुककर) तो जाओ, मैं भी नहीं देखूँगा । मैं उदय सिंह भी नहीं बनूँगा और कुल दीपक भी नहीं कुछ नहीं बनूँगा ।

पन्ना : रूठ गये कुँवर, रूठने से राजवंश नहीं चलते, जाओ। विश्राम करो। देखो तुम्हारे कपड़ों पर धूल छा रही है। दिनभर तुम तलवार का खेल खेलते रहे, थक गए होंगे। जाओ शैया पर सो जाओ । मैं तुम्हारी तलवार अलग रख दूँगी।

उदयसिंह : (रूठे हुए स्वर में) तब तो मैं तलवार के साथ ही सोऊँगा।

पन्ना : अभी वह समय नहीं आया कुँवर । चित्तौड़ की रक्षा में तुम्हें कई दिनों तक तलवार के साथ ही सोना पड़ेगा।

उदयसिंह : (रूठे हुए स्वर में) तुम्हें तलवार से डर लगता है जो बार–बार तलवार रखने की कहती हो।

पन्ना : तलवार से डर! चित्तौड़ में तलवार से कोई नहीं डरता।
कुँवर! जैसे लता में फूल खिलते हैं न, वैसे ही यहाँ वीरों के हाथों में तलवार खिलती है, तलवार चमकती हैं।

उदयसिंह : (उसी तरह रूखे स्वर में) अब मेरा मन बहलाने लगी। तुम नाच देखने नहीं चलतीं, तो मैं ही अकेला चला जाऊँगा। मैं जाता हूँ।

(जाने को उद्यत होता है)

पन्ना : नहीं कुँवर, तुम कभी रात में अकेले नहीं जाओगे। चारों तरफ जहरीले सर्प घूम रहे हैं, किसी समय भी तुम्हें डस सकते हैं।

उदयसिंह : सर्प । कैसे सर्प ?

पन्ना : तुम नहीं समझोगे, कुँवर। जाकर सो जाओ। थक गये होंगे। भोजन के लिए मैं मना लूँगी।

उदयसिंह : नहीं माँ, आज न मैं भोजन करूँगा और न ही अपनी शय्या पर ही सोऊँगा।

(प्रस्थान के लिए उद्यत उदयसिंह का प्रस्थान)

पन्ना : चले गये, कुँवर का रूठना भी मुझे अच्छा लगता है। मना लूँगी नाच, गान, दीपदान। इसी से चित्तौड़ की रक्षा होगी। चित्तौड़ में यह बहुत हो चुका। बहुत हो चुका। और अब तो बनवीर का राज है।

(नूपुरनाद करते हुए एक किशोरी का प्रवेश)

किशोरी : धाय माँ को प्रणाम।

पन्ना : कौन ?

किशोरी : मैं हूँ सोना। रावल सरूपसिंह की लड़की। कुँवर जी कहाँ है ?

पन्ना : वे थक गये हैं, वे सोना चाहते हैं।

सोना : सोना चाहते हैं। तो मैं भी तो सोना हूँ। (अट्टहास)

पन्ना : चुप रह सोना। कुँवर जी रूठ कर सोने चले गए हैं। तुम लोग कुँवर को नाच–गाने की ओर खींचना चाहती हो।

सोना : क्या, तुलजा भवानी के सामने नाचना कोई बुरी बात है ?

आज हम लोगों ने दीपदान किया और मन भर कर नाचा। यों (नाचती है) कुँवर जी भी तो बड़ी देर तक हमारा नाच देखते रहे। मैं भी तो उन्हें देखकर बहुत नाची। उनको हमारा नाच बहुत अच्छा लगा। बहुत अच्छा। देखो, पैरों की यह ताल (नूपुर की झनकार)

पन्ना : बस–बस सोना। अगर तू रावल जी की बेटी न होती तो..................

सोना : कटार भौंक देती। कटार।। (अट्टहास करती है) धाय माँ तुमने उदयसिंह के सामने तो अपने पुत्र चन्दन को भी भुला दिया। तुम्हारे मातृत्व को भी भुला दिया। तुम्हारे मातृत्व में उदयसिंह ऐसे समाये है, जैसे कटार को अपने ह्रदय में रखने के लिए म्यान ने अपना ह्रदय खोखला कर दिया हो। (हँसती है) खोखला ।

पन्ना : यह कविता रहने दो। जानती नहीं बनवीर का राज है।

सोना : ओहो, बनवीर उन्हें श्री महाराजा बनवीर कहो। बागड़ के तो इलाके से वे हाथी–घोड़ों की झूल लाये थे....................हाँ झूल। इतनी बड़ी । हमारे लिए भी तो वे एक रेशम की झूल लाये थे। उसे सिर से ओढ़कर नाचने से ऐसा लगता था जैसे मकड़ी के जाले के आर–पार चन्द्रमा की किरण थिरक रही है। हाँ...................... ।

पन्ना : बहुत नाचती हो ? बनवीर की तुम पर बड़ी कृपा है।

सोना : द्रौपदी के चीर की तरह। आज प्रातःकाल उन्होंने मुझे बुलाया और कहा .... धाय माँ ....। तुम बुरा तो नहीं मानोगी।

पन्ना : मैं क्यों बुरा मानूँगी ?

सोना : उन्होंने कहा, महल में धाय माँ अरावली पहाड़ बनकर बैठ गई है। अरावली पहाड़ (हँसती है) तो तुम लोग बनास नदी बन कर बहो न। खूब नाचो, गाओ। यों आज कोई उत्सव का दिन नहीं था, फिर भी उन्होंने कहा मेरे बनवाये मयूर पक्ष कुंड में दीपदान करो। मालूम हो, जैसे भव सागर मे आत्माएँ तैर रही हों, या जैसे मेघ पानी–पानी हो गये हो और बिजलियाँ टुकड़े–टुकड़े हो गई हों।

पन्ना : बड़ी उमंग में हो आज ?

सोना : दीपकों के साथ उमगें भी लौ देने लगी है, धाय माँ । सारा जीवन ही एक दीपावली का त्योहार बन गया है।

पन्ना : तो यही त्योहार मना रही हो तुम ?

सोना : मैं ही क्या, सारे नगरनिवासी यह त्योहार मना रहे हैं........................... नहीं मान रही हो, तो तुम। धाय माँ, तुम, पहाड़ बनने से क्या होगा ? राजमहल पर बोझ बन कर रह जाओगी, बोझ। और नदी बनो तो तुम्हारा बहता हुआ बोझ, पत्थर भी अपने सिर पर धारण करेंगे, पत्थर भी। आनन्द और मंगल तुम्हारे होंगे, जीवन का प्रवाह होगा, उमंगों की लहरें होंगी, जो उठने में गीत गायेगी, गिरने से नाच नाचेंगी। गीत और नाच, धाय माँ। गीत और नाच। जैसे सुख और सुहाग एक साथ हँस रहा हो और जब दीपदान का दीपक अपने मस्तक पर लेकर चलोगी, धाय माँ, तो ज्ञात होगा, धाय माँ, जैसे शुक्र तारे को मस्तक पर रखकर उषा आ रही है।

पन्ना : बनवीर के अनुग्रह ने तुम्हें पागल बना दिया है, सोना।

सोना : धाय माँ, पागल कौन नहीं है ? महाराणा अपने सात हजार पहलवानों के साथ पागल हैं। मल्लक्रीड़ा ही तो उनका पागलपन है। महाराज बनवीर, महाराणा विक्रमादित्य की आत्मीयता से पागल हैं । वे विक्रमादित्य के अन्तःपुर में प्रलाप करते हैं, यह आनन्द ही उनका पागलपन है। सारा नगर आज के त्योहार में पागल है। तुम कुँवर उदयसिंह के स्नेह में पागल हो और मैं (हँसकर) मेरी कुछ न पूछो, धाय माँ ? मैं तो इन सब के पागलपन से पागल हूँ, तुम चाहे जो कहो। हाँ तो कुँवर उदयसिंह कहाँ है ?

पन्ना : कुँवर उदयसिंह को छोड़ो, सोना। वे बहुत थक गये हैं। अब सो रहे होंगे। तुम जाओ। यहाँ कही तुम्हारा पागलपन कम न हो जाय।

सोना : मेरा पागलपन ? धाय माँ, पागलपन कहीं कम होता है ? पहाड़ बढ़कर कभी छोटे हुए हैं ? नदियाँ आगे बढ़कर कभी लौटी हैं ? फूल खिलने के बाद कभी कली बने हैं ? सब आगे बढ़ते हैं। नहीं बढ़ती हो तो सिर्फ तुम। सदा एक सी। तुम्हारा पागलपन भी सदा एक–सा।

मैं रावल की बेटी हूँ, शायद सामन्त की बेटी बनूँ, शायद महाराज की बेटी बनूँ। कुछ बढ़कर ही बनूँगी और तुम धाय माँ सिर्फ धाय माँ ही रहोगी।

पन्ना : सोना, मुझे किसी से ईर्ष्या नहीं है। मैं जैसी हूँ अच्छा है। राज सेवा में जीवन जा रहा है– यही मेरे भाग्य की बात है।

सोना : भाग्य तो सब का होता है, धाय माँ। ये नूपुर मेरे पैरों में पड़े हैं तो इनका भी भाग्य है। मेरे पैरों की गति में गीत गाते हैं, तो यह भी इनका भाग्य है। मेरे आगमन का संदेश पहले ही पहुँचा देते हैं और जब मेरे पैर रूक जाते हैं तो ये मौन हो जाते हैं, तो यह भी इनका भाग्य है। भाग्य तो सबके होता है, धाय माँ। तुम नगर के उत्सव में भाग नहीं ले रही हो, न लो। महाराज बनवीर का साथ नहीं दे रही हो, न दो, मैं कौन होती हूँ बीच में बोलने वाली।

पन्ना : तो क्या मेरे उत्सव में जाने और न जाने का सम्बन्ध बनवीर की इच्छा से है ?

सोना : फूल कुछ कहता है ? अपनी सुगन्ध भेज देता है। दीपक कोई संदेश भिजवाता है ? पंतगे आप–से–आप आ जाते हैं।

पन्ना : मैं जानती हूँ इस दीपक की आग में मैं जल जाऊँगी।

सोना : तो कुँवर को भेज देती। उनको तो कोई आग न छू सकती ?

पन्ना : कैसे भेज देती ? इतने आदमियों के बीच उन्हें कैसे भेज देती ?

महाराज साँगा के वंश के एक वही तो उजाले हैं। महाराज रतन सिंह तीन ही वर्ष राज करके सूर्यलोक को चले गए, विक्रमादित्य भी बनवीर की कूटनीति से अधिक दिनों तक ....।

सोना : धाय माँ, तुम विद्रोह की बातें करती हो।

पन्ना : आँधी में आग की लपट तेज ही होती है, सोना। तुम भी उसी आँधी में लड़खड़ाकर गिरोगी। तुम्हारे ये सारे नूपुर बिखर जायेंगे। न जाने किस हवा का झोंका तुम्हारे इन गीतों की लहरों को निगल जाएगा ? यह सुख और सुहाग पास–पास उठे हुए दो बुलबुलों की तरह बिना सूचना दिये फूट जाएगा। चित्तौड़ राग–रंग की भूमि नहीं है। यहाँ आग की लपटें नाचती हैं। सोना जैसी रावल की लड़कियाँ नहीं।

सोना : (क्रोध से चीखकर) धाय माँ ।

पन्ना : बनवीर की आग की कलियों। तुम्हारे पीछे काली राख है, यह मत भूल जाना। ये अतृप्त इच्छाओं की चिनगारियाँ अधजली होकर चिटकेंगी और चित्तौड़ की आँखों में किरकिरी बनकर घूमेंगी । यह आग की ज्वाला हवन कुंड को भी जला देंगी, सोना। इसे बुझा दो। तुम्हारे इस त्योहार से चित्तौड़ परिचित नहीं है। यहाँ का त्योहार आत्म बलिदान है। यहाँ का गीत मातृभूमि की वन्दना का गीत है। उसे सुनो और समझो।

सोना : (शान्त स्वर में) समझ लिया, धाय माँ।

पन्ना : तो यहाँ से जाओ। देखना इस त्योहार के पीछे कोई कूटनीति न हो। बनवीर से पूछना, इस राग–रंग का क्या अर्थ है।

सोना : वह मेरी समझ में नहीं आवेगा धाय माँ।

पन्ना : तो जाओ, दिशाओं की तरह उसकी हँसी में डूबी रहो। तुमसे प्रतिध्वनि भी न निकल सके।

(सोना का धीरे–धीरे प्रस्थान। उसके नूपुर धीरे–धीरे बजते हुए दूर तक सुन पड़ते हैं)

पन्ना : अँधेरी रात। यह राग–रंग। नगर के सब लोगों का जमाव। कुँवर उदय सिंह के लिए बुलावा। यह सब क्या है ?

(चन्दन का प्रवेश)

चन्दन : (दूर से पुकारते हुए) धाय माँ! माँ..........

पन्ना : क्या है मेरे लाल ?

चन्दन : माँ। इतनी कविता बनाने वाली, इतने गीत गाने वाली, इतना नाचने वाली सोना धीरे–धीरे कैसे जा रही थी ? गुम–सुम, जैसे किसी ने साँप का जहर खींच लिया हो।

पन्ना : साँप का जहर ?

चन्दन : हाँ जहरीली तो है ही। जब बोलती है तो बातों की ऐसी चोट करती है कि कुछ कहते ही नहीं बनता। यह तो हमेशा उछलती–कूदती जाती थी। आज तो जैसे उसके पैर में मोच आ गई हो।

पन्ना : आई थी कुँवर को बुलाने, अपना नाच दिखलाने। मैंने कुँवर को नहीं जाने दिया तो बुरा मान गई ।

चन्दन : हाँ, माँ कुछ दिनों से कुँवर हमारे साथ नहीं खेलते, इसी के यहाँ चले जाते हैं। मैं भी उनके पीछे जाता हूँ, यह कुँवर की ओर देखती हैं और कुँवर इसकी ओर देखते हैं। कहते तो कुछ नहीं, बस देखते हैं ? पता नहीं इस तरह देखने से क्या होता है ? क्या होता है माँ ?

पन्ना : कुछ नहीं, लोग देवता के दर्शन करते है न । तो उन्हें आनन्द मिलता है। मैं कुँवर से कह दूँगी कि वे भी देवता की तरफ देखा करें, सोना की तरफ नहीं।

चन्दन : तो सोना बुरा न मान जाएगी, माँ ?

पन्ना : लोगों के बुरा मानने से क्या होता है ? भगवान को बुरा नहीं मानना चाहिए। तुम तो किसी को नहीं देखते, चन्दन ?

चन्दन : देखता हूँ, माँ । पहाड़ी खरगोश को। ओह, कैसी छलांग भरता है, माँ जैसे उसमें बिजली भरी हो। पलक मारते ही पहाड़ की इस चोटी से उस चोटी पर पहुँच जाता है। पहाड़ी खरगोश से बढ़कर और कौनसी चीज है, माँ। उसे देखकर फिर किसी को देखने की इच्छा नहीं होती है।

पन्ना : पहाड़ी खरगोश का क्या कहना है, चन्दन। उसी तरह वीरों को भी धावा करना चाहिए।

चन्दन : हाँ मैं भी उतनी ही तेजी से दौड़ सकूँगा, जमीन से आसमान तक।

पन्ना : जमीन से आसमान तक कोई नहीं दौड़ता । हाँ तू नाच देखने तो नहीं गया था।

चन्दन : माँ धावा करने वाले कहीं नाच देखते हैं ? मुझे तो अच्छा नहीं लगता। हाँ कुँवर को अच्छा लगता है। कुँवर कहाँ है, माँ।

पन्ना : रूठकर सो गये थे।

चन्दन : क्यों, भोजन करने में ? उन्होंने भोजन कर लिया ?

पन्ना : नहीं ? पर कुँवर तुम्हारे उठाने से नहीं उठेंगे। तुम भोजन कर लो। मैं थोड़ी देर बाद उन्हें उठाकर, बहलाकर भोजन करा दूँगी।

चन्दन : मुझे अकेले भोजन करना अच्छा नहीं लगेगा, माँ।

पन्ना : भोजन कर लो, मेरे चन्दन । मेरे लाल। सज्जा ने तुम्हारे लिए अच्छा भोजन बनाया है। वह तुम्हें अच्छी–अच्छी बातें सुनाती हुई भोजन करा देगी। मैं भी अभी आती हूँ। तुम्हारी माला टूट गई थी, उसी को ठीक कर रही हूँ। बस, थोड़े दाने और रह गये है।

चन्दन : माँ कल कुँवर की माला भी ठीक कर देना। वह भी टूट रही है। सोना ने उसे पकड़कर खींच दिया था।

पन्ना : अच्छा चन्दन। वह भी ठीक कर दूंगी।

(चन्दन का प्रस्थान)

पन्ना : (सोचते हुए) मेरा भोला लाल। जब, पूछा कि तुम तो किसी को नहीं देखते हो तो कहता है, देखता हूँ माँ। पहाड़ी खरगोश को (पहाड़ी खरगोश को)। वाह रे! मेरे चन्दन। कहता है,

धावा करने वाले कही नाच देखते हैं। वह तो दौड़ते हैं जमीन से आसमान तक ....
जमीन से आसमान तक।

(यकायक घर की कुछ चीजों के गिरने..............की धमक। शीघ्रता से सामली.... ।)

सामली : (चीखकर पुकारती हुई) धाय माँ । धाय माँ ।

पन्ना : कौन, कौन सामली ?

सामली : (बिलखते हुए) धाय माँ, धाय माँ । कुँवर कहाँ है ? कुँवर जी कहाँ है ?

पन्ना : क्यों कुँवर को क्या हुआ ?

सामली : उनका जीवन संकट में है।

पन्ना : कहाँ । कैसे ? यह तुम क्या कह रही हो ?

सामली : उनका जीवन बचाओ। धाय माँ ।

पन्ना : (चीखकर) सामली । कहाँ है? कुँवर जी।

(अन्दर की तरफ भागती है)

सामली : (बिलखते हुए) "हाय । सर्वनाश हो रहा है। क्या मेवाड़ को ऐसे ही दिन देखने थे ? क्या चित्तौड़ के साके का यही फल होना था? हाय! क्या हो रहा है ? तुलजा भवानी। तुम चित्तौड़ की देवी हो। कैसे कहुँ कि तुम्हारे त्रिशूल में अब शक्ति नहीं रही। मेवाड़ का भाग्य ....।

पन्ना : (फिर प्रवेश कर) सो रहा है। मेरा कुँवर सो रहा है। कहीं तो कुछ नहीं हुआ। कुँवर जी रूठ गये थे। वे तलवार लिए भूमि पर सो गये। तलवार उनके हाथों से खिसक गई है, पर वे शान्ति से सो रहे है। मेरे कुँवर को कुछ नहीं हुआ।

सामली : कुँवर अच्छे है। तुलजा भवानी कुशल करें। पर धाय माँ। महाराणा विक्रमादित्य जी की हत्या हो गई।

पन्ना : (चीखकर) महाराणा की हत्या हो गई। किसने की ?

सामली : बनवीर ने। महाराणा सो रहे थे। उसने अवसर पाकर उनकी छाती पर तलवार भोंक दी।

पन्ना : (चीखकर) हाय!महाराणा विक्रमादित्य जी। यह मैं पहले जानती थी। (सिसकने लगती है)

सामली : बनवीर ने नगर भर में आज नाच–गान का त्योहार मनवाया जिससे नगरवासियों का ध्यान नाच–रंग में ही रहे। मौका देखकर वह राजमहल में गया। अन्तःपुर में वह आता–जाता था। किसी ने रोका नहीं। उसने महाराणा के कमरे मे जाकर उनकी हत्या कर दी। (सिसकियाँ लेने लगती है)

पन्ना : (स्थिर होकर) आज कुसमय नाच–रंग की बात सुनकर मेरे मन में शंका हुई थी। इसीलिए मैंने कुँवर को कहीं जाने से रोक दिया था। संभव था कि कुँवर वहाँ जाते और बनवीर अपने सहायकों से कोई काण्ड रच देता।

सामली : इसीलिए मैं दौड़ी आयी हूँ धाय माँ। लोगों ने बनवीर को कहते सुना है कि वह कुँवर उदयसिंह को भी सिंहासन का अधिकारी समझ कर जीवित रहने नहीं देगा। वह निष्कंटक राज्य करेगा। धाय माँ।

पन्ना : विलासी और अत्याचारी राजा कभी निष्कंटक राज नहीं करता।

सामली : लेकिन रक्त से भीगी तलवार लेकर वह सीना ताने हुए अपने महल में गया है।

पन्ना : लोगों ने उसे पकड़ा नहीं। सैनिक चुपचाप देखते ही रहे।

सामली : सैनिकों को उसने अपनी तरफ मिला लिया है। लोग उससे डरते हैं। महाराणा विक्रमादित्य का राज भी तो ऐसा नहीं था कि लोग उनसे प्रेम रखते। उनके पहलवानों की सहायता से राज नहीं चल सकता। सभी सामन्त महाराणा से असंतुष्ट थे।

पन्ना : अब क्या होगा ?

सामली : थोड़ी देर बाद ही वह कुँवर जी को मारने आयेगा। आज की रात में ही वह अपने को पूरा महाराणा बना लेना चाहता है। किसी तरह से हो कुँवर जी की रक्षा होनी चाहिए, धाय माँ।

पन्ना : कुँवर जी की रक्षा.......... (सोचते हुए) कुँवर जी की रक्षा। अवश्य होगी....................अवश्य होगी। अब मेवाड़ का उत्तराधिकारी एक यही तो राजपूत रक्त है। दासीपुत्र बनवीर को चित्तौड़ सहन नहीं कर सकेगा।

सामली : यह तो आगे की बात है, पर तुम कुँवर जी की रक्षा किस तरह करोगी ?

पन्ना : मैं ? मैं इस अंधेरी रात में ही उसे लेकर कुंभलगढ़ भाग जाऊँगी।

सामली : और चन्दन कहाँ रहेगा ?

पन्ना : जहाँ भगवती तुलजा उसे रखेगी। मेरे महाराणा का नमक मेरे रक्त से भी महान है। नमक से रक्त बनता है, रक्त से नमक नहीं।

सामली : धन्य हो, धाय माँ। पर तुम अँधेरी रात में नहीं भाग सकोगी।

पन्ना : क्यों, अँधेरी रात में मुझे कौन जानेगा ? कौन पहचानेगा ?

सामली : तुम महलों से निकल भी न सकोगी। आते समय मैंने देखा कि बनवीर के सैनिक तुम्हारे महल को घेरने को आ रहे थे। एक ओर से तो तुम्हारा महल घिर ही चुका था।

पन्ना : हे! भगवान एकलिंग। अब क्या होगा ?

सामली : जैसे भी हो कुँवर की रक्षा तुम्हें करनी ही है।

पन्ना : मुझे सैनिकों की सहायता नहीं मिल सकती ?

सामली : सैनिक तो उसके है धाय माँ।

पन्ना : और सामन्त।

सामली : उनमें अभी इतना साहस नहीं है।

पन्ना : तब मैं स्वयं तलवार लेकर कुँवर की रक्षा करूँगी। भैरवी बनकर युद्व करूँगी। मरते–मरते मैं उसकी तलवार के टुकड़े–टुकड़े कर दूंगी। उसके और कुँवर के बीच में मेरे खून का समुद्र लहराएगा, जिसे वह इस जीवन में पार भी न कर सकेगा।

सामली : उसके साथ सैनिक भी हो सकते है, धाय माँ। युद्ध में तुम्हारे प्राण जायेंगे और कुँवर भी न बचेंगे।

पन्ना : तो फिर क्या करूँ ? सामली। घुटने टेक कर कुँवर की जीवन भिक्षा माँगूगी। बनवीर मनुष्य है। उसके मन में कुछ तो दया होगी।

सामली : राजा की हत्या करने के बाद दासी पुत्र मनुष्य है ? वह जंगली पशु से भी गया बीता है।

पन्ना : फिर मेरे कुँवर कैसे बचेंगे ? कैसे बचेंगे ? मेरे कुँवर । (सिसकी)

सामली : इसका उपाय मैं क्या बताउँ धाय माँ। मैं तो महल की एक परिचारिका हूँ मैं क्या कहूँ। पर इतना कहे जाती हूँ कि वह क्रूर और अत्याचारी बनवीर आता ही होगा। सर्प की तरह उसकी भी दो जीभें है, जो एक रक्त से नहीं बुझेंगी। उसे दूसरा रक्त भी चाहिए। और वह कुँवर का .... तुम कुछ बोल नहीं रही, धाय माँ। आँखें बंद कर क्या सोच रही हो ?

पन्ना : भगवती तुलजा का ध्यान कर रही हूँ कि वे मुझे शक्ति दे कि मैं कुँवर की रक्षा कर सकूँ।

सामली : इस समय कुँवर की रक्षा शक्ति से नहीं हो सकेगी। कोई युक्ति ही काम दे सकती है। चौंककर कौन आ रहा है ?

पन्ना : (जोर से) दरवाजे पे कौन है ? (कीरत बारी का प्रवेश)

कीरत : अन्न दाता। कीरत बारी हौं। धाय माँ के चरन लागौं।

पन्ना : कीरत। तुम हो ? आ गये ? बाहर तो कोई नहीं है।

कीरत : अन्न दाता। बाहर सिपाहियों का डेरा लग रहा है। जान नहीं पड़ता अन्नदाता की आधी रात को यह का हो रहा है ? पैड़ों में किसी का भी पैसारा नहीं हो पाता। मैं तो बारी है उससे कोई कुछ बोला नहीं।

पन्ना : तो तुम बेखटके चले आये।

कीरत : अन्नदाता मैं तो जूठी पत्तल उठाता हूँ कोई माल–मता तो मेरे पास है नहीं। टोकरी है उसमें पत्ते है। कुँवर जी ने ब्यालू कर लीं धाय माँ ? मैं जूठन पा लूँ।

पन्ना : नहीं

कीरत : कुँवर जू जुग–जुग जीएँ धाय माँ। जब से कुँवर जी बूँदी से आये हैं, तब से सगर महल में उजियार फैल गया है। राणा विक्रमादित्य जब हरभजन करेंगे तब धाय माँ, अपना चौर–छतर कुँवर जू को ही तो सोंपेगे, और जब कुँवर जू राणा होयेगें तो सगर जहान उनको बन्दगी करने आयेगा। सच जानो धाय माँ। कुँवर जू के सरूप दर्शन दाखिल है। मैं तो उनके लिए अपनी जान तक हाजिर कर सकता हूँ, (ठहरकर) धाय माँ, कुछ सोच रही है ?

पन्ना : (चौंककर) ऐं ! हाँ, मैं सोच रही हूँ (सामली से) तुम बाहर जाके देखो सिपाही कहाँ–कहाँ खड़े हैं और कितने सिपाही है ?

सामली : बहुत अच्छा । धाय माँ। मैं जाती हूँ (प्रस्थान)

पन्ना : तो कीरत। तुम कुँवर जी को बहुत प्यार करते हो।

कीरत : अन्नदाता । प्यार कहने में जबान पर कैसे आवे ? वो तो दिल की बात है । मौके पै ही देखा जाता है। और कहने को तो मै कह ही चुका हूँ कि उनके लिए अपनी जान तक हाजिर कर सकता हूँ।

पन्ना : जान तक हाजिर कर सकते हो ?

कीरत : ऐसी बातों में तीन तिर बाचा नई हरात, धाय माँ। मौके पे ही देखा जाता है।

पन्ना : तो वह मौका आ गया है, कीरत।

कीरत : मौका । कैसा मौका ?

पन्ना : कुँवर जी को बचाने का।

कीरत : कौन के सिर पैर भैरूँ बाबा की आँख चढ़ी है जो कुँवर जी का बाल भी बाँका कर सके। और कीरत के रहते ? धाय माँ!

पन्ना : नहीं कीरत, हँसी का समय नहीं है। कुँवर जी के प्राण संकट में है।

कीरत : कौन है जिसने सूरत पे घूँ उछाला है ?

पन्ना : बनवीर

कीरत : अरे, वो बनवीर जो महाराना विक्रमादित्य के दरबार में बंदर सरीखा नाचता है ?

पन्ना : बहुत बातों का समय नहीं है, कीरत। बोलो, कुँवर जी को बचाओगे ?

कीरत : तो मैं तलवार ले आऊँ।

पन्ना : तलवार का समय नहीं है। इस समय लड़ने से काम नहीं चलेगा। एक तरकीब करनी होगी।

कीरत : हुकुम दें ? अन्नदाता ।

पन्ना : भवानी तुलजा ने मेरे मन में सब उपाय सुझा दिये हैं।

कीरत : हाँ, ध्यान तो कर रही थी, आँख मूँद के तो भवानी ने कौन–सा हुकुम करा ?

पन्ना : उसे मानोगे ?

कीरत : अन्नदाता, सिर चढ़ा के मानूँगा।

पन्ना : अच्छा, तो सुनो। तुम हो बारी। तुम्हें बाहर जाने से कोई नहीं रोकेगा। तुम तो टोकरी में जूठी पत्तल उठा के जाते ही हो।

कीरत : ठीक कहती है, अन्नदाता। आते वक्त भी किसी ने नहीं रोका।

पन्ना : तो तुम कुँवर जी को टोकरी में लिटाकर उन पर गीली पत्तलें डालकर महल से बाहर निकल जाओं।

कीरत : वाह। अन्नदाता खूब सोचा। मैं ऐसे निकल जाऊँगा कि सिपाही लोग देखते ही रह जायेंगे। तो कुँवर जी कहाँ है ?

पन्ना : सो रहे है। आज भूमि पर ही सो गये। उन्हें धीरे से उठा कर अपनी टोकरी में सुला देना। वे जागने न पावें।

कीरत : अन्नदाता! उनको पता भी न चलेगा कि वे कहाँ जा रहे हैं।

पन्ना : (गहरी साँस लेकर) चित्तौड़ का राजकुमार पत्तल ओढ़ के सोयेगा, कौन जानता था।

कीरत : यह सब भाग की बात है, अन्नदाता। आज पत्तल ओढ़ के सोयेंगे, कल साल–दुसाला ओढ़ेंगे।

पन्ना : तो तुम जाओ, जल्दी करो।

कीरत : बहुत अच्छा, अन्नदाता। कुँवर जी कहाँ है ?

पन्ना : मेरे कमरे में नीचे ही सो गये हैं। तुम उन्हें उठा के तो ले जा सकोगे।

कीरत : अन्नदाता। अगर हुक्म दें तो बनवीर तक को सिर पै उठा के ले जा सकता हूँ।

पन्ना : ठीक है। तुम्हारी टोकरी तो काफी बड़ी है।

कीरत : अन्नदाता ।आपके जस ने ही तो मेरी टोकरी बड़ी कर दी है। सारी राजमहल की पत्तलें छोटी टोकरी में कैसे रखी जा सकती हैं और अन्नदाता। आज तो बनवीर के साथ बहुत सामंतो ने खाया है। मैंने भी सोचा आज बड़ी टोकरी ले चलूँ। सो वो ही लाया हूँ।

पन्ना : तो चलो, मैं तुम्हारी मदद कर दूँ।

कीरत : अन्नदाता। आप तकलीफ न उठायें। मैं सब कर लूँगा।

पन्ना : और हाँ, कुँवर जी, को लेकर तुम बेणच नदी के किनारे मिलना वहाँ जहाँ श्मशान है।

कीरत : ठीक है, अन्नदाता। वही मिलूँगा। वहाँ मुझ पै किसी भी आदमी की नजर न पड़ेगी।

पन्ना : तो जाओ, कीरत। आज तुम जैसे छोटे आदमी ने चित्तौड़ के मुकुट को सम्भाला है। एक तिनके ने राजसिंहासन को सहारा दिया है। तुम धन्य हो।

कीरत : अन्नदाता। धन्य तो आप हैं कि मुझको आपने ऐसी सेवा का काम सौंपा है। तो मैं चलूँ ?

(सामली का प्रवेश)

सामली : धाय माँ। महल चारों तरफ सिपाहियों से घिर गया। उत्तर की तरफ ही सात सिपाही है, बाकी तीनों तरफ बीस–बीस सिपाही पहरा दे रहे हैं शायद उत्तर की तरफ के सिपाही बनवीर को लेने गये हैं।

पन्ना : कोई चिन्ता की बात नहीं, सामली। तुम यहीं ठहरना, मै अभी आती हूँ।

सामली : देख के क्या करोगी ? मैं तो देख आयी हूँ कुँवर को बचाने का कोई उपाय सोचो।

पन्ना : मैं अभी आती हूँ (कीरत से) चलो कीरत।

(दोनों का प्रस्थान)

सामली : न जाने धाय माँ क्या सोच रही है ? कीरत बारी भी तब से यही बना है। क्या होगा ? हाय । बनवीर ने महाराणा को रक्त में नहला दिया। दुष्ट बनवीर! ....तुझे नर्क में भी चैन न मिलेगा। कुँवर उदयसिंह पर आँख लगाई है। भवानी । कुँवर की रक्षा करो।

(पन्ना का प्रवेश)

पन्ना : अब ठीक है। कुँवर की रक्षा हो गयी।

सामली : (प्रसन्नता से) हो गयी। कैसे ?

पन्ना : कीरत ने अपनी टोकरी में कुँवर को सुला दिया। ऊपर से पत्तले ढँक ली और उन पर पानी छिड़क दिया। वह उन्हें लेकर बेखटके महल से बाहर हो जायेगा। कोई उससे कुछ पूछेगा भी नहीं, कुँवर जी बच गये। कुँवर जी बच गये।

सामली : वाह, वाह, धाय माँ। बहुत अच्छा सोचा। सिपाही समझेंगे कि कीरत बारी जूठी पत्तलें ले जा रहा है। कोई इससे कुछ पूछेगा भी नहीं।

पन्ना : चित्तौड़ के भाग्य से ही वे बचेंगे।

सामली : जरूर बचेंगे। पर धाय माँ। यह सब तुम्हें किसने सुझाई ?

पन्ना : भवानी ने । मैंने आँख बंद कर उनका ध्यान किया। उसी समय कीरत बारी आया। उसने कहा .... मैं तो जूठी पत्तल उठाता हूँ। कोई माल–मत्ता तो मेरे पास है नहीं। टोकरी है और उसमें पत्तलें है, बस भवानी ने यही बात मुझे सुझा दी।

सामली : पर एक बात है, धाय माँ।

पन्ना : क्या ?

सामली : बनवीर यहाँ जरूर आयेंगे। वे तुम्हारे महल में कुँवर जी की खोज करेंगे। जब वे कुँवर जी को न पावेंगे और तुम से पूछेंगे तो तुम क्या उत्तर दोगी ?

पन्ना : कह दूँगी कि मैं नहीं जानती।

सामली : इससे वे नहीं मानेंगे। क्रोध में आकर अगर तलवार चला दी तो कुँवर जी तुम्हारे बिना कैसे जियेंगे ?

पन्ना : मैं अपने प्राणों की भिक्षा मागूँगी, जो चित्तौड़ की किसी नारी ने नहीं माँगी। ऐसी विचित्र भिक्षा वे अवश्य दे देंगे।

सामली : बनवीर के सिर पर खून चढ़ गया है। वह दैत्य बन गया है। कुँवर जी को न पाकर वह तुम्हें जरूर मार डालेगा।

पन्ना : मुझे उसकी चिन्ता नहीं है, सामली।

सामली : पर चिन्ता कुँवर जी की है। तुम्हारे बिना वे भी तो जीवित नहीं रहेंगे। फिर तुम्हारा बलिदान चित्तौड़ के किस काम आयेगा ? कुँवर जी को तो जीना ही चाहिए।

पन्ना : सचमुच कुँवर जी मेरे बिना नहीं जियेंगे। थोड़ी–सी बात पर ही रूठ जाते हैं। मुझे न पाकर उनका क्या हाल होगा ?

सामली : किसी तरह बनवीर को धोखा नहीं दे सकती ?

पन्ना : दे सकती हूँ।

सामली : किस तरह ?

पन्ना : कुँवर जी की शय्या पर किसी और को सुला दूँगी। वह क्रोध में अन्धा रहेगा ही। पहिचान भी न सकेगा कि यह कौन सोया है ?

सामली : तो कुँवर जी की शय्या पर किसे सुला दोगी ?

पन्ना : किसे सुला दूँगी ? (सोचकर) सामली मेरे ह्रदय पर वज्र गिर रहा है। मेरी आँखों में प्रलय का बादल घुमड़ रहा है। मेरे शरीर के एक–एक रोम पर बिजली तड़प रही है।

सामली : धाय माँ। संभल जाओ। ऐसी बात न कहो। कुँवर की शय्या पर ....।

पन्ना : सुला दूँगी। उसी को। उसी को सुला दूँगी, जो मेरी आँखों का तारा .... चन्दन को सुला दूँगी, सामली (सिसकियाँ) चन्दन को सुला दूँगी। कह दूँगी कि इसके कलेजे पर हल्की –सी चोट करना। बेचारा अभी बेचारा बालक है। भीषण प्रहार से मेरा लाल चौंक उठेगा।

सामली : धाय माँ। धाय माँ। ऐसा मत कहो .... ऐसा मत कहो। ऐसा मैं नहीं सुन सकूँगी। महल के किसी कोने में छिप रहूँगी। हाय! तुम क्या कह रही हो। ऐसा मत कहना। मैं जाती हूँ।
ऐसा मैं नहीं सुन सकूँगी ....(प्रस्थान)

पन्ना : चली गई। कहती है, ऐसा मै नहीं सुन सकूँगी। जो मुझे करना है। वह सामली सुन भी न सकेगी। भवानी, तुमने मेरे ह्रदय को कैसा कर दिया ? मुझे बल दो कि मैं राजवंश की रक्षा में अपना रक्त दे सकूँ। अपने लाल को दे सकूँ। यही वीरांगना का व्रत है। यही वीरांगना की मर्यादा है। मेरा ह्रदय वज्र का बना दो। माता के ह्रदय के स्थान पर, जिससे ममता का स्रोत बन्द हो जाये। भवानी। मैं चित्तौड़ की सच्ची नारी बनूँ।

(नेपथ्य में चन्दन का स्वर) माँ! ....माँ! ....माँ!

(चन्दन का प्रवेश)

चन्दन : माँ। देखो मेरे पैर में चोट लग गई। यह रक्त निकल रहा है।

पन्ना : कहाँ रक्त निकल रहा है ? लाओ, देखूँ मेरे लाल। ओहो। अँगूठे में यह चोट कैसे लगी? कितना रक्त निकल रहा है। लाओ इसे बाँध दूँ। (अपनी साड़ी से कपड़े का टुकड़ा फाड़ती है) सीधा पैर करो। हाँ ठीक है .... इसे बाँध देती हूँ। (बाँधते हुए) यह चोट कैसे लगी, लाल।

चन्दन : मैं जैसे ही भोजन करके उठा माँ, सज्जा ने कहा कि महल के चारों तरफ सिपाही इकट्ठे हो रहे हैं। मै देखने के लिए ऊपर के झरोखे में चढ़ गया। अँधेरे में कुछ दिखाई नहीं दिया। जैसे ही मै नीचे कूदा, एक टूटा हुआ शीशा अँगूठे में चुभ गया। कोई बात नहीं है, माँ। रक्त तो निकला ही करता है। पर ये सिपाही महल के चारों तरफ क्यों इकट्ठे हो रहे हैं ?

पन्ना : आज नाच–रंग का दिन है न ? वही सब देखने के लिए आये होंगे। या फिर सोना ने उन्हें बुलाया होगा। वह नीचे नाच रही होगी।

चन्दन : माँ। सोना अच्छी लड़की नहीं है। मैं कल उससे कहूँगा माँ, कि कुँवर जी को नाच न दिखाया करे। उनका मन आखेट करने में नहीं लगता।

पन्ना : मैं भी उसे समझा दूँगी, चन्दन।

चन्दन : कुँवर जी कहाँ है माँ। आज भोजन मे भी साथ नहीं चले।

पन्ना : कहीं सो रहे होंगे।

चन्दन : तब से वे सो ही रहे है ? माँ कुँवर जी को नींद क्यों आती है ? माँ देखूँ, कहाँ सो रहे हैं ?

पन्ना : बुरा मान कर कहीं सो रहे होंगे।

चन्दन : सोना ने ही उन्हें बुरा मानना सिखला दिया, माँ। नहीं तो कुँवर जी पहले कभी बुरा नहीं मानते थे। खेल–खेल में भी बुरा नहीं मानते थे। साथ खेलते थे, साथ खाते थे। आज अकेले कुछ खाया भी नहीं गया, माँ।

पन्ना : तो चलो चन्दन। मैं तुम्हें जी भर के खिला दूँ।

चन्दन : अब कुँवर जी के साथ कल खाऊँगा, माँ। कल हम दोनों साथ बैठेंगे .... तुम प्रेम से परोस–परोस कर खिलाना। कल खूब खाऊँगा, माँ। कुँवर जी से भी ज्यादा। कहते हैं कि मैं चन्दन से ज्यादा खाता हूँ। अब कल से यह कहना भूल जायेंगे। (हँसता है) क्यों न माँ।

पन्ना : ठीक है लाल।

चन्दन : माँ। अच्छी तरह से क्यों नहीं बोलती ? और तुम्हारी आँखों ....
तुम्हारी आँखों में पानी कैसा ? माँ। ऐ................तुम्हारी आँखों ....।

पन्ना : कहाँ चन्दन । पानी कहाँ ? और तुम्हारे अँगूठे से रक्त की धारा बहे, मेरी आँखों से एक बूँद पानी भी न निकले ?

चन्दन : ओह। माँ, तुम तो बातें करने में बड़ी अच्छी हो। जब मैं बड़ा होकर बहुत सी जागीरें जीतूँगा माँ। तो मैं तुम्हारे लिए एक मन्दिर बनवाऊँगा। देवी के स्थान पर तुमको बिठलाऊँगा, और तुम्हारी पूजा करूँगा। तुम अपनी पूजा करने दोगी ?

पन्ना : तुमसे मुझे ऐसी ही आशा है, चन्दन।

चन्दन : यह मत समझना माँ कि जागीरें नहीं जीत सकता। उस जंगली खरगोश की तरह तेजी से दौड़ सकता हूँ। आसमान तक धावा बोल सकता हूँ।

पन्ना : अब बहुत बातें न करो चन्दन। रात अधिक हो रही है, सो जाओ।

(कुछ आहत होती है)

चन्दन : माँ .... माँ देखो उस दरवाजे से कौन झाँक रहा है ?

पन्ना : कीरत बारी होगा। तुम्हारा भोजन उठाने आया होगा। मैं देखती हूँ।

(उठकर देखती है)

चन्दन : कोई और हो तो मैं अपनी तलवार लाऊँ।

पन्ना : (लौटती हुई) कोई नहीं हैं। महल में किसका डर है ? लाल। तुम सो जाओ।

चन्दन : कहाँ सोऊँ। सज्जा तो अभी रसोईघर में ही होगी। मेरी शय्या ठीक न की होगी।

पन्ना : तो ....तुम कुँवर जी की शय्या पर सो जाओ। शय्या ठीक होने पर तुम्हें लिटा दूंगी।

चन्दन : और कुँवर जी बुरा मान गये तो ?

पन्ना : मै कुँवर जी को समझा दूँगी।तुम्हारे लेटने से कुँवर जी की शय्या मैली तो हो न जायगी ?

चन्दन : तुम बहुत अच्छी हो माँ। आज कुँवर जी की शय्या पर लेट कर देखूँ। अब तो मैं भी राजकुमार हो गया (एकाएक स्मरण कर) मेरी माला। राजकुमार के गले में माला होती है न। तुमने मेरी टूटी माला गूँथ दी।

पन्ना : नहीं गूँथ पाई लाल। सामली आ गई थी।

चन्दन : कल गूँथ देना, भूलना नहीं, माँ (शय्या पर लेटता है) आह! माँ! कितनी नरम शय्या है। जी होता है, सदा इसी पर सोता रहूँ।

पन्ना : (चीख कर) चन्दन..........!

चन्दन : क्या हुआ, माँ।

पन्ना : कुछ नहीं .... कुछ नहीं ....। आज मेरा जी कुछ अच्छा नहीं है। कभी–कभी कलेजे मैं शूल–सी उठती है। तुम सो जाओ तो मैं भी सो जाऊँगी।

चन्दन : मैं किसी वैद्य के यहाँ जाऊँ माँ।

पन्ना : नहीं, किसी वैद्य के पास इसकी दवा नहीं है। यह आप से आप शान्त हो जाती है। तुम भी सो जाओ .... मैं भी कुँवर को खिलाकर जल्दी–जल्दी सो जाऊँगी।

चन्दन : अच्छा माँ। तुम्हारी आज्ञा नहीं टालूँगा। लो मै आँखें बन्द कर लेता हूँ।

पन्ना : सो जाओ। चित्तौड़ की अच्छी कहानियों को सोचते–सोचते सो जाओ। अपनी मातृभूमि में कितने बड़े–बड़े वीर हुए हैं। बप्पा रावल, जिन्हें हारित ऋषि ने दर्शन दिये, जिन्होंने मेवाड़

की नींव डाल कर विदेशों पर चढाई की और उन्हें जीता। इन्होंने ही पहले–पहल अपने आराध्य देव एकलिंग जी का मन्दिर बनवाया, राजा नरवाहन जिन्होंने अपनी अकेली शक्ति से अनेक शत्रुओं को पराजित किया। राजा हंसपाल, जिन्होंने अनेक राज्य जीतकर अपने राज्य में मिलाये; रावल सामंत सिंह जिन्होंने सोलंकी राजा उदयपाल को युद्ध में पराजित किया। रावल सामंत सिंह, रावल समर सिंह .... ।

चन्दन : (चौंककर) माँ आँखें बन्द कर तुम्हारी बातें सुन रहा था, कि एक काली छाया मेरे सिर के पास आई और उसने मुझे मारने को तलवार उठाई। माँ .... वह काली छाया .... काली छाया।

पन्ना : मैं तो तुम्हारें पास बैठी हूँ लाल। यहाँ कौन–सी काली छाया आयेगी ?

चन्दन : कोई छाया नहीं आयेगी, माँ। पर न जाने क्यों नींद नहीं आ रही।

पन्ना : अच्छी बात है, मेरे लाल। मै गीत गाऊँगी। अपने लाल को सुला दूँ।

(करूण स्वर में गीत गुनगुनाती है)

उड जा रे पँखेरूआ, साँझ पड़ी।
चार पहर बाटड़ली जोही।
मेड़ता खड़ी ऐ खड़ी।
उड जा पँखेरूआ, साँझ पड़ी।
डबडब भरिया नैन दिरिघडा।
लग रयी झड़ी ऐ झड़ी।
उड़ जा रे पँखेरूआ, साँझ पड़ी।
तेरी फिकर हूँ भयी दिवानी
मुसकन घड़ी ए घड़ी। उड़ जा रे पँखेरूआ...........

(धीरे–धीरे गाना समाप्त होता है)

पन्ना : (फिर से पुकारती है) चन्दन। (चन्दन के न बोलने पर पन्ना अलग हट कर जोर–जोर से सिसकी लेती है)

पन्ना : मेरा लाल सो गया। मैंने अपने लाल को ऐसी निद्रा में सुला दिया कि अब यह न उठेगा। (सिसकियाँ लेती है) ओह ! पन्ना। तूने, अपने भोले बच्चे के साथ कपट किया है। तूने अँगारों की सेज पर अपने फूल–से लाल को सुला दिया है। तू सर्पिणी है, जो अपने ही बच्चे को खा डालती है। जान–बूझ कर अपने पुत्र की हत्या करने जा रही है। अभागिनी माँ। संसार में तेरा भी जन्म होने को था? (सिसकियाँ लेती है, फिर चन्दन को संबोधित करते हुए) लाल। तुम्हारी माला मैं नहीं गूँथ सकी। तुम्हारा जीवन अधूरा होने जा रहा है तो माला कैसी पूरी होती ?

(सिसकियाँ) आज तुम भूखे ही रह गये मेरे लाल। आज अंतिम दिन मैं तुम्हें अपने हाथों से भोजन भी न करा सकी।

तुम क्या जानो कि कल तुम और कुँवर साथ–साथ कैसे भोजन करोगे ? कहते थे ....कल तुम परोस कर खिलाना। मैं अब किसे खिलाऊँगी, चन्दन। (सिसकियाँ) तुम बड़ी–बड़ी जागीरें जीतोगे, मन्दिर बनावाओगे, देवी के स्थान पर मुझे बिठलाओगे और मेरी पूजा करोगे। मैं ऐसी देवी हूँ जो अपने भक्त को खा रही हूँ। (सिसकियाँ)

तुम्हारे अँगूठे से रक्त की धारा बही। अब ह्रदय से रक्त की धारा बहेगी। तो मैं कैसे रोक सकूँगी मेरे लाल। मेरे चन्दन। जाओ ये रक्त धारा अपनी मातृभूमि पर चढ़ा दो। आज मैंने भी दीपदान किया है, दीपदान आज। जीवन का दीप मैंने रक्त की धारा पर तैरा दिया है। ऐसा दीपदान भी किसी ने किया है ? एक बार तुम्हारा मुख देख लूँ। कैसा सुन्दर और भोला मुख है। (सिसकियाँ) (यकायक भड़भड़ाहट की आवाज होती है। हाथ में तलवार लिए बनवीर आता है)

बवनीर : (मद्य पीने से उसके शब्द लड़खड़ा रहे हैं) पन्ना!

पन्ना : महाराज बनवीर।

बनवीर : सारे राजपूताने में एक ही धाय माँ है, पन्ना। सबसे अच्छी। मैं ऐसी धाय माँ को प्रणाम करने आया हूँ (रूककर) ऐं, धाय माँ की आँखों में आँसू।

पन्ना : नहीं .... आँसू नहीं हैं। आज मेरे कुँवर बिना भोजन किये सो गये हैं।

बनवीर : आज के दिन भोजन नहीं किया ? अरे आज तो उत्सव का दिन है। आनन्द का दिन है। (अट्टहास करता है) मेरे महल में तीन सौ सामन्तों ने भोजन किया। आज कीरत बारी की टोकरी देखती। भोजन उठाते–उठाते वह जिन्दगी भर के लिए थक गया होगा। (हँसता है) जिन्दगी भर के लिए । तो कहाँ है कुँवर उदय सिंह। मैं उन्हें अपने हाथ से भोजन करा दूँ।

पन्ना : कुँवर सो गये हैं। वे किसी के हाथ से भोजन नहीं करते, मैं उन्हें खिला दूँगी।

बनवीर : धाय माँ हो न । आज पन्ना। आज तुमने सोना का नाच नहीं देखा। ओह। कितना अच्छा नाचती है। मैंने उससे कह दिया था कि वह कुँवर उदयसिंह को और धाय माँ को अपना नाच दिखला दे।

पन्ना : वह आई थी। शायद तुम्हीं ने उसे भेजा था, पर कुँवर का जी अच्छा नहीं था, इसीलिए मैंने उन्हें नहीं भेजा।

बनवीर : जी अच्छा नहीं था और आज का दीपदान भी तुमने नहीं देखा ?

पन्ना : मेरे दीप–दान देखने की बात नहीं है, करने की बात है।

बनवीर : ठीक है, धाय माँ तो मंगल कामनाओं की देवी है। वे दीपदान करके चित्तौड़ का कल्याण करेंगी। मैं भी चित्तौड़ का कल्याण करूँगा। एक बात कहूँ, पन्ना। मैं तुम्हें मेवाड़ की एक जागीर देना चाहता हूँ। वहाँ तुम्हारे लिए तुलजा भवानी का मन्दिर बनेगा, मन्दिर। सो लोग

तुम्हें इतनी श्रद्धा से देखेंगे कि तुलजा भवानी में और तुम में कोई अन्तर न होगा। तुम्ही देवी के उस मन्दिर में रहोगी। लोग तुम्हारी पूजा करेंगे।

पन्ना : (चीखकर) बनवीर ?

बनवीर : (अट्टहास कर) महाराज बनवीर नहीं कहा ? मेरे कहने भर से तुम देवी हो गई। महाराज बनवीर को बनवीर कहने लगी। (हँसता है) देवी को प्रणाम। देखो, अब तुम्हें मोह–ममता से दूर रहना होगा। तुम कुँवर उदयसिंह को मुझे दे दोगी और उसे मैं यह तलवार दूंगा। ?

(तलवार खींच लेते है)

पन्ना : ऐं, यह तलवार। इस पर रक्त क्यों लगा है ?

बनवीर : रक्त तो तलवार की शोभा है, पन्ना। वह अनन्त सुहाग से भरी है। यह तो उसके सिन्दूर की रेखा है। बिना रक्त के तलवार भी कभी तलवार कहला सकती है।

पन्ना : यह तलवार म्यान में रख लो महाराज।

बनवीर : क्या तुम्हें भय लगता है। चित्तौड़ में तलवार से किसी को भय नहीं लगता। धाय माँ होने पर तुममें इतनी ममता भर गई कि तलवार नहीं देख सकती ? पन्ना। तलवारें आसानी से म्यान के भीतर नहीं जातीं। जब म्यान में राज्य–श्री भर जाती है तो तलवार बाहर निकल आती है।

पन्ना : आधी रात हो चुकी है, महाराज बनवीर । विश्राम करो।

बनवीर : विश्राम मैं करूँ ? बनवीर। जिसे राजलक्ष्मी को पाने के लिए दूर तक की यात्रा करनी है। मैं अपने साथ कुँवर उदयसिंह को भी ले जाना चाहता हूँ।

पन्ना : यह नहीं होगा, यह नहीं होगा, महाराज बनवीर।

बनवीर : जागीर नहीं चाहती ?

पन्ना : नहीं

बनवीर : तो उदयसिंह के बदले जो माँगो वो दिया जाएगा।

पन्ना : राजपूतनी व्यापार नहीं करती महाराज! वह तो रणभूमि में चढ़ती है या फिर चिता पर।

बनवीर : तुम्हारा महल सैनिकों से घिरा है।

पन्ना : सैनिकों को किसने आज्ञा दी ? महाराज विक्रमादित्य........................

बनवीर : (बीच ही में) वे अब इस संसार में नहीं है पन्ना। उन्होंने रक्त की नदी पार कर ली है। उसी रक्त की लहर मेरी तलवार पर है।

पन्ना : ओह! बनवीर, हत्यारा बनवीर।

बनवीर : महाराणा बनवीर को हत्यारा बनवीर नहीं कह सकती, पन्ना! हत्यारा बनवीर कहने वाली जीभ काट ली जायेगी।

पन्ना : तो लो मेरी जीभ काट लो, और यहाँ से चले जाओ। महाराज विक्रमादित्य ....

बनवीर : बार–बार विक्रमादित्य का नाम क्या लेती है ? प्रेतों और पिशाचों को वह नाम लेने दो। यदि मेरा नाम लेना है तो जयकार के साथ नाम लो।

पन्ना : धिक्कार है, बनवीर, तुम्हारी माँ ने तुम्हें जन्म देते ही क्यों न मार डाला।

बनवीर : चुप रह धाय। बच्चे की पालनेवाली, लोरियाँ सुनाने वाली एक साधारण दासी महाराणा से बात करती है ? कहाँ है उदयसिंह ?

पन्ना : तू उदयसिंह को छू भी नहीं सकता। नीच, नारकी। महाराणा विक्रमादित्य की हत्या के बाद तू उदयसिंह को देख भी नहीं सकता।

बनवीर : मैं नहीं देखूँगा, मेरी तलवार देखेगी। विक्रम के रक्त से सनी हुई तलवार अब उदयसिंह के रक्त से धोई जायेगी।

पन्ना : ओह क्रूर बनवीर। तुम तो उदयसिंह के संरक्षक थे। रक्षा के बदले क्या तुम उसकी हत्या करोगे ? नहीं–नहीं, यह नहीं हो सकता, यह नहीं हो सकता। महाराणा बनवीर। तुम राज करो चित्तौड़ पर, मेवाड़ पर, सारे राजपूताने पर राज करो। पर कुँवर उदयसिंह को छोड़ दो। मैं उसे लेकर संन्यासिन हो जाऊँगी। तीर्थों में वास करूँगी। तुम्हारा मुकुट तुम्हारे माथे पर रहे, पर मेरा कुँवर भी मेरी गोद में रहे। बनवीर! महाराणा बनवीर, मुझे यह भिक्षा दे दो।

बनवीर : दूर हट दासी। यह नाटक बहुत देख चुका हूँ। उदयसिंह की हत्या ही तो मेरे राजसिंहासन की सीढ़ी है। जब तक वह जीवित है तब तक सिंहासन मेरा नहीं होगा। तू मेरे सामने से हट जा।

पन्ना : मैं नहीं हटूँगी। अपने कुँवर की शय्या से दूर नहीं हटूँगी।

बनवीर : उदयसिंह को सुला दिया है, जिससे उसे मरने का कष्ट न हो। उसका मुख भी ढ़ँक दिया है। वाह री धाय माँ। बालक के मरने में भी ममता का ध्यान रखती है (तीव्रता से) शय्या से दूर हट पन्ना। मैं उसे चिर निद्रा में सुला दूँ।

पन्ना : (साहस से) नहीं, ऐसा नहीं होगा, क्रूर नराधम, नारकी। ले मेरी कटार का प्रसाद ले, (आक्रमण करती है, उसकी चोट बनवीर की ढाल पर सुन पड़ती है।)

बनवीर : (क्रूर अट्टहास करता है) ह ह ह ह । दासी कर लिया कटार का वार। यह कटार मेरे हाथ में है, अब किससे वार करेगी ? अब तुझे भी समाप्त कर दूँ ? लेकिन स्त्री पर हाथ नहीं उठाऊँगा।

पन्ना : अबोध सोते हुए बालक पर हाथ उठाते हुए तेरा ह्रदय तुझे नहीं धिक्कारता ?

बनवीर : (शय्या के समीप जाकर) यही है, मेरे मार्ग का कंटक। आज मेरे नगर में स्त्रियों ने दीपदान किया है, मैं भी यमराज को इस दीप का दान करूँगा। यमराज! लो इस दीपक को। यह मेरा दीपदान है।

(तलवार से उदयसिंह के धोखे में चन्दन पर जोर से प्रहार करता है। पन्ना जोर से चीख कर मूर्च्छित हो जाती है। कमरे में मन्द लौ का दीपक जलता है।)

शब्दार्थ

वीरांगना – वीरता से परिपूर्ण स्त्री
रंक– भिखारी
धाय माँ – पालन–पोषण करने वाली
शैया– बिस्तर
राज्यलिप्सु – राज्य प्राप्त करने की इच्छा रखने वाला
नेपथ्य – नाटक में पर्दे के पीछे का भाग
नूपुरवाद – घुँघरू की आवाज़
कटार – तलवार जैसा छोटा हथियार
नराधम– मनुष्यों में नीच कर्म करने वाला

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. "चित्तौड़ का राजकुमार पत्तलें ओढ़ कर सोयेगा, कौन जानता था" वह राजकुमार कौन है ?

(क) कीरत (ख) उदयसिंह
(ग) बनवीर (घ) चन्दन

2. "मेरे दीपदान देखने की बात नहीं है, करने की बात है"। पंक्ति में दीप से आशय है–

(क) दीपक (ख) बनवीर
(ग) चन्दन (घ) उदयसिंह

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न–

3. महाराणा सांगा के सबसे छोटे पुत्र का क्या नाम था ?
4. "तुम तो चित्तौड़ के सूरज हो" इस वाक्य में किसने किसको "चित्तौड़ का सूरज" कहा है ? लिखिए।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

5. '' चित्तौड़ राग रंग की भूमि नहीं है,यहाँ आग की लपटें नाचती हैं,''पंक्ति का तात्पर्य स्पष्ट कीजिए।
6. 'दीपदान' एकांकी के नामकरण की सार्थकता सिद्ध कीजिए।
7. निम्न मुहावरों का अर्थ स्पष्ट कर वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(i) आँख का तारा
(ii) बाल भी बाँका न होना
(iii) आँखों में पानी आना

8. बनवीर कौन था ? परिचय दीजिए।

निबंधात्मक प्रश्न–

9. पन्ना धाय इतिहास में क्यों प्रसिद्ध है ? लिखिए।
10. "महल में धाय माँ अरावली बनकर बैठ गई है"। वाक्य का आशय स्पष्ट कीजिए।
10. "बनवीर की आग की कलियों, तुम्हारे पीछे काली राख है– यह मत भूल जाना" इस पंक्ति की सप्रंसग व्याख्या कीजिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की उत्तरमाला

1. ख

2. ग

पाठ–8

नदी, आस्था और कुम्भ

डॉ. श्रीराम परिहार

जन्म– 16 जनवरी, 1952

लेखक परिचय

आधुनिक ललित निबन्धकार डॉ. श्रीराम परिहार का जन्म मध्य प्रदेश के खण्डवा जिले के छोटे से गाँव फेफरिया में कृषक परिवार में हुआ। "हिन्दी ललित निबन्ध : स्वरूप एवं परम्परा का अनुशीलन" विषय पर आपने डी.लिट् पं. रविशंकर विश्व विद्यालय, रायपुर से कर ललित निबन्ध से अभिन्नता को प्रकट किया।

भारतीय संस्कृति के शाश्वत मूल्यों को अपने निबन्धों का विषय बनाकर आधुनिक सन्दर्भों में उनकी उपादेयता को प्रतिष्ठित करने का श्लाघनीय प्रयास आपके ललित निबन्धों में प्राप्त होता है। सम्प्रति आप मध्य प्रदेश के माखनलाल चतुर्वेदी शासकीय स्नात्तकोत्तर कन्या महाविद्यालय, खण्डवा में प्राचार्य के पद पर कार्यरत रहते हुए ललित निबन्ध एवं नवगीत केन्द्रित अर्द्धवार्षिक पत्रिका 'अक्षत' का 1993 से सम्पादन और प्रकाशन कर रहे हैं।

कृतियाँ

आँच अलाव की, चौकस रहना है, अँधेरे में उम्मीद, कहे जन सिंगा, धूप का अवसाद, बजे तो वंशी, गूँजे तो शंख, ठिठके पल पाँखुरी पर, रचनात्मकता और उत्तर परम्परा, रसवंती बोलो तो, झरते फूल हर सिंगार के, हंसा कहो पुरातन बात, संस्कृति सलिला नर्मदा, निमाड़ी साहित्य का इतिहास, भय के बीच भरोसा, परम्परा का पुनराख्यान, ललित निबंध : स्वरूप एवं परम्परा, शब्द–शब्द झरते अर्थ ।

पाठ परिचय

'नदी, आस्था और कुम्भ' इस ललित निबंध में लेखक श्रीराम परिहार ने भारतीयता के शाश्वत मापदण्डों और परम्पराओं का सजीव चित्र प्रस्तुत करते हुए स्नान, तीर्थ और आस्था का महत्त्व दर्शाया है। इसमें तीर्थों के विकास और वहाँ पर एकत्र लघु भारत की विशिष्टताओं के साथ वर्तमान में इनकी उपयोगिता एवं प्रासंगिकता को प्रतिष्ठित किया है।

डॉ. परिहार ने भारतीय संस्कृति में सर्वमान्य कई तीर्थ स्थलों की तथ्यात्मक जानकारी देकर आधुनिक तरुणाई को सांस्कृतिक स्थलों की जानकारी से समृद्ध भी किया है। निबन्ध में आधुनिकता के आवरण में भारतीय सांस्कृतिक तत्त्वों से विमुख हो रही पीढ़ी को इससे जुड़ने की प्रेरणा तर्क सहित सरस और प्रवाह शैली में प्रदान करना, लेखक का कौशल है। भौतिकता के पीछे अन्धी दौड़ में यह निबन्ध भारतीयता की ओर मन आकृष्ट करने में सफल रहा है।

नदी, आस्था और कुम्भ

साधु–संत तीरथ वासी, परकम्मा वासी, रोगी–भोगी जल में डुबकी लगा रहे हैं। जल धारा रूप में बह रहा है। बिना निमंत्रण मेला लगा है। ऊपर–ऊपर सब लोग अलग–अलग दिख रहे हैं। कई–कई वेश हैं। अपनी–अपनी भाषा–बानी है। स्तर छोटा–बड़ा है। चमक–दमक में फर्क है। सुविधाओं की मुँह देखी बातें हैं। लक्ष्मी का रुतबा पच्चीस–पचास, सौ– हजार लोगों को भीड़ में अलग ही छिटकता है। चेहरों की बनावट और रंगों की अपनी–अपनी पहचान है।

मुस्कान और तृप्ति का लहजा एक–सा है। श्रद्धा के ठाठ निराले महसूसने की हृदय–यात्रा सब में निरंतर है। बहते जल में स्नान कर तीर्थ बनने की नहीं, तीर्थ जानने–समझने की बारीक ललक आँखें खोल रही है। पश्चिमी सभ्यता व्यक्ति के ऊपर से उतर कर किनारे ढेर हैं। आदमी जल में है। आदमी प्रवाह में है। जल, प्रवाह और उसके विराट में आदमी स्वयं को छोड़ रहा है। विशाल–जनसमूह का नदी में नहाना–स्नान–पर्व हो रहा है। भीड़ चेहरा हीन होकर अनुभूति हो रही है। उधर कोई गा रहा है–

चलो रे भैया, चलिहै नरमदा के तीर
परब को दिन आयो।
गंगा नहाये, जमुना नहाये,
अब देखिहै मैया तेरो नीर,
परब को दिन आयो।

एक पार्टी कार्यकर्ता विधायक बनना चाहता है। विधायक मंत्री बनने की उधेड़बुन में है। मंत्री मुख्यमंत्री पद के सपने देखता है। मुख्यमंत्री प्रधानमंत्री बनाने के गुन्ताड़े में है। धरम–करम को तीर्थ–जल में फूलों की तरह छोड़ एक डुबकी, इन इच्छाओं की भी लगाता है। रोगी चाहता है– जल से बाहर निकलते ही देह कंचन हो जाये। गरीब–गुरबा दूर–दूर से चले आते हैं।

इस जनम में नहीं तो अगले जनम में कम से कम भर पेट भोजन और सिर पर छप्पर की जुगत हो जाये। कोई सोचता है बस यहीं से जाते ही कोरट–कचहरी के लफड़े निपट जाये। छात्र सोचता है कुछ अच्छे नम्बर पाने की हिकमत हाथ आ जाये। कई मिन्नतें करते हैं, 'हे नदी मैया, तेरा पानी बादलों के मार्फत इस बरस खेतों में दहपेल बरसे।' घाट पर दूर अकेले में जो डोकरी बैठी बहते जल को टकटकी बाँध कर देख रही है, बेटे–बहू ने घर से निकाल दिया है। जीवन से किचवा मरी है। चाहती है बस यहाँ से वापस नहीं जाना पड़े। नदी में स्नान निर्वाण हो जाये।

वह अधेड़ सा आदमी जाँघिया पहने घाट पर जंगल में रीछ की तरह घूम रहा है– अपने कैमरे में इस समय और उसके दृश्यों को बंद कर सब कुछ अपने घर ले जाकर एलबम में खोंस देना चाहता है। ये कार, हवाई जहाज, स्कूटर वाले लोग यहाँ पिकनिक–विकनिक सरीखा ही कुछ अनुभव कर रहे हैं। भीतर से नदी स्नान में बारीक सा कुछ नैतिक चिलक रहा है।

बाहर–बाहर व्यवहार आधुनिक होने का है। एक आदमी आँखों में भारत वर्ष को देखता है। उसमें लोगों, भीड़नुमा लोगों, समूहनुमा लोगों, एकीकृत लोगों, भावों के वृत्त में खड़े स्वाभाविक लोगों और कुल मिलाकर एक पर्व बनते लोगों को देखता है। वह इनमें मिल जाना चाहता है। वह जल की बूँद–बूँद में व्यक्ति की अस्मिता परखता है। वह नदी किनारे के जल–प्रवाह में देश के मौलिक करंट को महसूसता है।

आज हमारे सामने सबसे अहं सवाल यह है कि धर्म बड़ा है या राष्ट्र ? उत्तर में यह निर्विवाद तय होना चाहिये कि राष्ट्र बड़ा है। लेकिन साथ ही आस–पास यह भी देखना है कि राष्ट्र की मौलिक अवधारणायें क्या हैं? क्या मिट्टी पानी, नदी, पहाड़, राजा, प्रजा से ही राष्ट्र की मूर्ति बनती है? नहीं । राष्ट्र की सम्पूर्ण छवि और पूरा व्यक्तित्त्व हजारों वर्षों की मानवीय चेतना, जीवन के शाश्वत मूल्यों और अपने धरती–आकाश में अखण्ड विश्वास से बनती है। आदमी की वैज्ञानिक और मौलिक बुलन्दियों के साथ उसके सफर में और कुछ भी मुलायम सरीखा साथ रहा है। उसको कतरा–कतरा लेकर भी एक बनने की होशियारी सिखाता रहा है। लम्हा–लम्हा के बीच समय के अरसों को बटोरता रहा है।

मतलब कि उसकी नजर अपने से हटकर दूसरों पर पड़ती रही है। व्यक्ति को समूह में मिलाकर नये मनुष्य को बनाता रहा है। यह अपने को सब में मिलाकर देखने का भाव ही हिन्दुस्तान का मौलिक करंट है। नदी, घाटों पर भीड़ में मिलकर मात्र जज्बाती नहीं, व्यावहारिक भारत का स्वरूप खड़ा करना है।

एक तरह से अपने देश को असल रूप में समझना है। अपार मानव समूह घाटों पर सिर्फ प्रार्थना मुद्रा में नहीं होता । वह अपनी दृष्टि में जीवन के अलग–अलग रंगों को एक हिन्दुस्तानी इन्द्रधनुषी रंग में देखता है। इन रंगों में कौन प्रमुख है–नहीं कह सकते। साथ ही हर व्यक्ति अपने भीतरी इंसान को सबमें सब तक फैलाता है। सब में अपनापन तलाशता है। क्षेत्र, भाषा और बाहरी बेरीकेट्स को तोड़कर, बाहर–भीतर समभाव महसूस करता है। ऐसे ही क्षणों में वह नदी में डुबकी लगाकर स्वयं को महाप्रवाह में छोड़ देता है। हजारों–हजार बूँदों से हजारों हजार आदमियों से एक साथ मिल जाता है। गालिब के शब्दों में कहूँ तो ''इशरते कतरा है– दरिया में फना हो जाना।''

महापुरुषों की लीला भूमि और ऋषियों की तपो भूमि कालान्तर में तीर्थ रूप में विकसित हुई। इन दिनों ऋषि अपने शिष्यों तथा गायों के साथ घूमते रहते थे। नदियों के किनारे उन्हें अच्छे लगते थे। वहाँ रुकने की सुविधा थी। हरी–भरी धरती का खुला–खुला भाग उन्हें पड़ाव डालने के लिए रोकता था। ऐसी जगहों पर वे ठहर जाते थे। आसपास के लोग आकर उनसे मिलते थे। ऋषि की वाणी का सम्मान होता था। जीवन के अबूझ प्रसंगों की पर्तें खुलती थीं। छात्रों का अध्ययन और लोकशिक्षण एक साथ सम्पन्न होता था।

आज जो छोटे बड़े तीर्थ हैं, वे कभी ऋषियों के आश्रम और शिक्षा के केन्द्र रहे हैं। ज्ञान और तपस्या से प्राप्त प्राण–ऊर्जा से ऋषि, क्षेत्र विशेष को फूल की पवित्रता और जल की शीतलता देते

थे। इनके सम्पर्क से व्यक्ति को अपने–जीवन में नयी ताकत और नयी रोशनी मिलती थी। अगस्त्य ने वेदपुरी, नर–नारायण ने बदरीनाथ, अत्रि–अनुसूया ने चित्रकूट, विश्वामित्र ने सिद्धाश्रम, दत्तात्रेय ने गिरनार, ब्रह्मा ने पुष्कर और शिव ने कैलास को लोक–शिक्षण के महती उद्‌देश्य से भव्यता प्रदान की। राम–कृष्ण और अन्य अवतारों की लीला भूमि में युगान्तर में आस्थाओं से तीर्थों की स्थापना हुई। ये तीर्थ ईश्वर का 'भावना–शरीर' माने गये। वहाँ जाकर व्यक्ति शूद्रता को परे हटा अपने भीतर कहीं अच्छा टटोलता था। दरिया के पानी की ठंडक और पाकीज़ा माहौल में नहाकर वह घर लौटता था।

सिर्फ अटकलों के सहारे निष्कर्ष नहीं निकालें। हजारों वर्षों से खास बने हुए इन स्थलों के दर्शन पर गौर करें तो पायेंगे कि आत्मिक शान्ति पाने और उद्विग्नता का शमन करने में ये तीर्थ बहुत कारगर होते थे। समय–समय पर व्यक्ति वहाँ पहुँचकर साफ–सुथरे वातावरण में वास करता था। विशेष पर्वों पर सुविधानुसार लोग इकट्‌ठे होकर ऋषि–मुनियों के सान्निध्य का लाभ लेते थे।

उनके विचार–विमर्श और मेघा–मंथन से उपजे निष्कर्षों से जीवन की गुत्थियाँ सुलझाते थे। माघ महीने में त्रिवेणी तट पर एक मास रहकर मकर–संक्रान्ति स्नान करते थे। इसे 'कल्पवास' कहा गया है– 'एक मास भरि मकर नहाए' जीवन की झंझटों की समीक्षा उनसे दूर रहकर तीर्थवास के दौरान की जाती थी। अपने लोगों के मोह से दूर रहकर स्वयं को राग–द्वेष पर तौलते थे। दूसरे के गुणों को देखकर ग्रहण करने का मौका मिलता था।

साधनों के अभाव में पैदल यात्रा और चलते–चलते तीरथ कर आने के पीछे लोक– जीवन की शिक्षा, भावात्मक एकता, सांस्कृतिक चेतना का फैलाव तथा मानव धैर्य को सम्बोधित करने वाली आस्थाओं को सींचने का विचार खास तौर से रहा है।

इसी मकसद से बदरीनाथ, द्वारिकापुरी, रामेश्वरम् और जगन्नाथपुरी चार धामों की स्थापना हुई। काशी, कांची, मायापुरी, द्वारावती, अयोध्या, मथुरा और अवन्तिका सात पुरियों की पवित्रता कायम हुई। वाराणसी, गुप्तकाशी, उत्तरकाशी, दक्षिणकाशी और शिवकाशी, पाँच काशियाँ कहलायीं। गंगा, यमुना, सरस्वती, नर्मदा, गोदावरी, कावेरी और सिन्धु सप्त नदियों से जलौध मग्ना भूमि को स्पष्ट देखा गया। कुरुक्षेत्र, हरिहर क्षेत्र, प्रभास क्षेत्र, रेणुका क्षेत्र, भृगुक्षेत्र, पुरुषोत्तम सरोवर, नारायण सरोवर, पम्पा सरोवर, पुष्कर सरोवर और मानस सरोवर के माध्यम से इस देश में व्यापक तीर्थ स्थापित हुए।

नदियों की परिक्रमा, चौरासी कोस की ब्रज–यात्रा और स्थान– स्थान की पंचकोशी यात्राएँ तीर्थ उपादान के रूप में विकसित हुईं। इन सभी को स्नान पर्व से जोड़ा गया। स्नान, आत्मा और शरीर दोनों का अंग बन गया। लोग जुटते थे। जुटकर भारत का नमूना बन जाते थे। बिखरा–बिखरा देश एक जगह छोटे रूप में ठोस बनकर दिखता था। ऐसे ही अवसरों पर. ऋषि–मुनियों का मिलन–सम्मेलन होता था।

अपने समय के अनुसार शिक्षा, संस्कृति, स्वास्थ्य, विज्ञान और न्याय पर चर्चाएँ होती थीं। समाधान ढूँढे जाते थे। ज्ञान की नयी खोज होती थीं। कुम्भ पर्वों से धार्मिक सम्मेलनों और हिन्दुस्तान के

एक बड़े भ्रमण चक्र के पूरा होने की अवधारणा जुड़ी है। हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन, नासिक में प्रति तीन वर्ष में (प्रत्येक में 12 वर्ष में) लगने वाले कुम्भ व्यक्ति के जीवन में अमृत की तलाश की राह खोलते हैं। इन सबके केन्द्र में मनुष्य ही रहा है।

साधारण समस्याओं से लेकर गूढ़ रहस्यों की गाँठ खोलने का प्रयास और उज्ज्वल भविष्य का निर्माण ही इनका मकसद है। एक जमाना रहा होगा, जब इन पर्वों के बाद तीर्थों से व्यक्ति विश्रान्ति के बाद नयी क्षमता नयी दृष्टि नयी समझ और नयी आग के साथ अपने कर्म में लौटता होगा।

आर्थिक विकास ने जीवन में भौतिकता को जरूरत से ज्यादा महत्त्व दिया। पूरे सांस्कृतिक शोध को पुराना और पुराण पंथी करार देते हुए एक नासमझ समझ को आधुनिकता मान लिया। ऐसा इसलिए भी हुआ, क्योंकि जो लोग भारतीय सांस्कृतिक चेतना की गहराई में डुबकी लगाने का माद्दा रखते थे, इनके लिए आलोचना का मार्ग सुगम था।

आलोचना कर उसके बाजू से निकल जाना और अपनी अक्षमता को आधुनिकता के लेबल में जायज ठहराना एक फैशन बन गया। ज्ञान– बोध और अपनी मौलिकता के प्रति अधकचरी पीढ़ी ने यह काम हल्ला बोल की तर्ज पर किया। समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन की डींग भरने वालों ने बदलाव के उन सूत्रों की ओर कभी नहीं निहारा, जो इस देश की मिट्टी–पानी के अनुरूप बदलते सन्दर्भों में समाज की नयी संरचना करते।

विडंबना यह है कि स्वतंत्रता के साथ ही अपने देश का जो होच–पोच स्वरूप था, वह अभी भी है। हम अभी तक कोई एक सांस्कृतिक स्वरूप और जीवन का आदर्श रूप तय नहीं कर पाये। जबकि सच्चाई यह है कि देश, काल, वातावरण से परे होकर भी सच, सच ही रहेगा। आदर्श दो नहीं हो सकते। सत्य दो नहीं हो सकते। इनमें से राह खोजते और राह पकड़ते हुए लक्ष्य तो एक ही निर्धारित करना होगा। इन तीर्थों में बैठकर भारतीय मनीषा ने देश का लक्ष्य स्पष्ट किया था। जीवन का चरम खोजा था।

बड़े–बड़े बाँधों और विशाल औद्योगिक इकाइयों की स्थापना कर उन्हें स्वतंत्र भारत के आधुनिक तीर्थ कहा है। इन आधुनिक तीर्थों ने व्यक्ति की भौतिकवादी भूख में इज़ाफा किया है। उपभोक्तावादी संस्कृति कान फड़फडाने लगी है। वर्ग संघर्ष ने आँखें खोली है। कुछ फालतू लोगों को इसी बल पर रोटी सेकने और स्वार्थ सिद्धि के अवसर अनायास हाथ लग गये। अंधो के हाथों बटेर लग गयी। विकास की एक धारा नारेबाजी में तब्दील हो गयी। जो हमारा वास्तव में है वह छूटता चला गया।

जो नदी तीर्थ की प्रणेता थी, हमारी मेधा को निरंतर मांजती थी, जिसके किनारे बैठकर व्यक्ति–व्यक्ति के बीच की लकड़ी को दूर फेंकने की तरकीब खोजी जाती थी, वह नदी अब नहर बनकर खेत घर में आ गयी। विकास की दिशा में यह प्रगति है, लेकिन तीर्थ में जिस नदी में हर आदमी साथ–साथ सहज भाव से उजला होता था। सबमें फैलता था। अब वह नहर के पानी के लिए लड़ रहा है। मेरे खेत में सिंचाई हो जाय, इस नम्बर के छोर के अन्तिम व्यक्ति का खेत चाहे सूखा पड़ा रहे। समभाव और

समानता भाषणों और किताबों में सिमट गये। व्यक्ति को संयमित और सलीकेदार बनाने के हमारे पास कोई साँचे नहीं बचे। ऐसी दशा में तीर्थ–जल को न धार्मिक भाव से सही जिन्दा रहने की अनिवार्यता के रूप में अंगीकार करना होगा।

यह समझ व्यक्ति के पास समय के साथ आज विकृत रूप में आ गयी है। तीर्थों और नदी–घाटों पर लगने वाले मेलों–पर्वों का रूप बदल गया है। कितने लोग यहाँ जीवन को समझने लोक–शिक्षा लेने और देश–धरम को समझने आते हैं? तीर्थ, पर्यटन, स्थलों के रूप में विकसित होने लगे हैं। ये सरकार और स्थानीय निकायों की आमदनी का साधन बन गये हैं।

धर्म प्रचारकों के मंचों और पंडालो में प्रवचन और जीवन की शिक्षा के बजाय व्यक्ति तथा वस्तु प्रदर्शन होने लगा है। अपने को समझने और अपने अच्छे–बुरे पर विचार कर आगे की राह ढूँढने के स्थान पर विशिष्ट द्वार से भगवान के दर्शन करने की होड़ा–होड़ी लगी है। पर्व–स्नान के बाद स्वयं में परिवर्तन तलाशने की अपेक्षा सरकारी इंतजाम और मुहैया की गयी सुविधाओं पर घंटो चर्चा होती है। इलेक्ट्रोनिक मीडिया का जबरदस्त हस्तक्षेप कुंभ पर्वों, तीर्थ सम्मेलनों, साधु संतों की जमात और विचार–प्रसारणों में हुआ है। स्नान बाहर–बाहर ही हो रहा है। मन की भटकन कुछ ज्यादा ही बची रहती है।

आयातीत सोच, धार्मिक मंचों के गैर धार्मिक आलापों और धर्म स्थलों के सरकारीकरण के बावजूद लोग स्नान को पर्व बना रहे हैं। बिना आमंत्रण आ रहे हैं। ऊपर–ऊपर ही सही तीर्थ को आज की खिड़की से इतिहास में देख रहे हैं। पूरे आधुनिक होने के बाद कहीं भीतर कुछ अच्छा करने की दबिश में नदी के पानी में अपने को क्षण– दो–क्षण के लिए ही सही पूरे मन से छोड़ रहे हैं। बस इस अपार भीड़ के अनुशासित आचरण और नदी के प्रवाह में स्वयं को बूँद बनाकर प्रवाहित करने के भाव ने ही आदमी के भीतर भारतीयता और भारतीयता के भीतर मानव कल्याण को जिन्दा रखा है। साबुत रखा है।

शब्दार्थ

रुतबा–	महत्त्व	तृप्ति– संतोष
महसूसने–	अनुभव करना	उधेड़बुन–सोच विचार
कंचन–	स्वर्ण, मूल्यवान	हिकमत–उपाय
निर्वाण–	मोक्ष	चिलक– चमकना
अस्मिता–	स्वाभिमान	निर्विवाद–विवाद रहित
कतरा–	अंश	फना– डूब जाना
पाकीज़ा–	पवित्र	

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(1) कुम्भ मेला कितने वर्ष में आयोजित होता है?

(क) बारह (ख) तीन

(ग) सात (घ) पाँच

(2) गिरनार को किसने भव्यता प्रदान करायी?

(क) अगस्त्य (ख) अनुसूया

(ग) दत्तात्रेय (घ) ब्रह्मा

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

(3) कल्पवास किसे कहते है?

(4) निम्न को स्पष्ट कीजिए–

(i) चार धाम, (ii) सात पुरियाँ,

(iii) पाँच काशी, (iv) सप्त सिन्धु,

(v) पाँच सरोवर, (vi) पाँच क्षेत्र

लघूत्तरात्मक प्रश्न

(5) ''तीर्थ ईश्वर का भावना शरीर है'' इस कथन को स्पष्ट कीजिए ।

(6) ''तलाश की राह खोलते हैं'' कथन की सार्थकता में तर्क दीजिए।

(7) लेखक ने आधुनिक तीर्थ किसे कहा है? उनका समाज पर क्या प्रभाव पड़ा है?

(8) नदी और नहर का वैयक्तिक जीवन पर क्या भिन्न–भिन्न प्रभाव पड़ता है?

निबन्धात्मक प्रश्न

(9) ''ऊपर–ऊपर ही सही तीर्थ को आज की खिड़की से इतिहास में देख रहे है।'' कथन को पाठ के आधार पर समझाइए।

10 ''नदी किनारे के जल प्रवाह में देश के मौलिक स्टंट को महसूसता है।'' कथन के आधार पर स्नान और कुम्भ का महत्त्व स्पष्ट कीजिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की उत्तरमाला

1. क

2 ग

पाठ–9

अभ्यर्पण

संकलित

I9UHF3

पाठ परिचय

भारतीय इतिहास में ऐसी अनेक स्वर्णिम घटनाएँ अंकित हैं, जब–जब भारतीय संस्कृति, राष्ट्रीय अखण्डता व अस्मिता को धूमिल व तोड़ने का प्रयास किया गया है, तब–तब प्रत्येक काल– खण्ड में अनेक दानवीर, युद्धवीर व शूरवीरों ने अपने सर्वस्व समर्पण के द्वारा इसकी रक्षा की है, क्योंकि हमारी संस्कृति का ध्रुव सत्य सिद्धांत है– 'सत्यमेव जयते'

इसी संदर्भ में परोपकार के लिए अपना सर्वस्व अर्पित करने वाले प्रत्येक काल खण्ड के आलोक स्तम्भ महर्षि दधीचि, दानवीर कर्ण तथा भामाशाह के दानवीर स्वरूप को अभ्यर्पण के माध्यम से उद्घाटित किया गया है। समय और स्थान की दृष्टि से विभिन्नता के बाद भी दानशीलता का संस्कार भारतीय महापुरुषों में कितनी सघनता से उपलब्ध था, यह इस पाठ के माध्यम से सम्प्रेषित करने का प्रयास किया गया है। सर्वांग समर्पण की अभिप्रेरणा का विकास ही इन सजीव गद्यांशों के चित्रण का मूल मन्तव्य है।

महर्षि दधीचि

लोक कल्याण के लिए आत्म–त्याग करने वालों में महर्षि दधीचि आदि पुरुष हैं। दधीचि की माता चिति तथा पिता अथर्वा थे। बाल्यकाल के संस्कारों से तप, त्याग और जीव मात्र के प्रति दया भाव इनके जीवन का अवलम्बन बने। भगवान शिव के प्रति अटूट भक्ति और वैराग्य में इनकी जन्म से ही निष्ठा थी। इनकी पत्नी का नाम 'गभस्तिनी' था। गंगा तट पर ऋषि आश्रम में आतिथ्य सत्कार, पशु–पक्षी पालन, देवोपासना तथा ध्यान, धारणा करते हुए सपत्नीक आनन्दपूर्वक रहते थे।

महातपोबलि महर्षि दधीचि ने संसार के कल्याण के लिए अपनी देह छोड़कर अस्थियों का दान कर दिया। उनके इस महात्याग की पौराणिक कथा के अनुसार एक बार देवराज इन्द्र की सभा में बृहस्पति आए। अहंकार में मदान्ध देवराज इन्द्र बृहस्पति के सम्मान में उठकर खड़े नहीं हुए। बृहस्पति ने इसे अपना अपमान समझा और देवताओं को छोड़कर चले गए। तब देवताओं को 'विश्वरूप' को अपना गुरु बनाकर काम चलाना पड़ा, परन्तु विश्वरूप देवताओं से छिपाकर असुरों को यज्ञ–भाग देता था। इन्द्र को ज्ञात होने पर उन्होंने आवेशित होकर उसका सिर काट दिया। विश्वरूप त्वष्टा ऋषि का पुत्र था, उन्होंने क्रोधित होकर इन्द्र को मारने के लिए महाबली वृत्रासुर को यज्ञानुष्ठान से पैदा किया।

वृत्रासुर के भय और आतंक के कारण इन्द्र को सिंहासन छोड़कर भटकना पड़ रहा था। वृत्रासुर ने देवलोक में उत्पात फैला रखा था। उसकी अराजकता से परेशान होकर देवता ब्रह्मदेव के पास पहुँच कर रक्षा की प्रार्थना करने लगे। तब ब्रह्मा जी ने कहा– ''तुम शीघ्र ही ऋषिवर दधीचि के पास जाओ। ऋषि से उनकी अस्थियों की भिक्षा माँगो। उनका शरीर उपासना, व्रत और तपस्या से अत्यन्त दृढ़ हो गया है। उनकी हड्डियों से बने वज्र के अस्त्र से ही शत्रु का संहार सम्भव है।''

भगवान ब्रह्मदेव की आज्ञानुसार सभी देवता देवराज के साथ महर्षि दधीचि के आश्रम में पहुँचे और अपनी व्यथा–कथा सुनाकर ब्रहम्देव के बताए उपाय का कथन करते हुए महर्षि से अस्थियों की याचना की। महर्षि दधीचि ने परमार्थ के लिए अपना शरीर छोड़कर अस्थियों का दान करना सहर्ष स्वीकार कर लिया। उन्होंने अपने मन को समाधिस्थ कर तन की ज्योति को परमात्मा में एकाकार कर दिया। इन्द्रदेव उनकी अस्थियां लेकर विश्वकर्मा के पास पहुँचे तथा वज्रास्त्र निर्माण का निवेदन किया। विश्वकर्मा ने उन अस्थियों से वज्रास्त्र बनाकर देवराज को दिया।

देवताओं तथा असुरों में एक बार फिर भयानक युद्ध हुआ और महर्षि की अस्थियों से निर्मित वज्रास्त्र से राक्षसों का संहार हुआ। वृत्रासुर ने तब अपना त्रिशूल फेंका और गदा से इन्द्र के वाहन ऐरावत पर आक्रमण किया। ऐरावत के सिर पर चोट आई, परन्तु इन्द्र ने अपनी विद्या से ऐरावत के माथे पर चोट को ठीक कर वृत्रासुर पर फिर से आक्रमण किया। भीषण संघर्ष के बाद देवराज इन्द्र ने वृत्रासुर का सिर वज्रास्त्र से काट दिया और सम्पूर्ण देवलोक को भय और आतंक से मुक्त कराया। इस प्रकार महादानी दधीचि के आत्म उत्सर्ग से धर्म की रक्षा हुई।

महादानी कर्ण

कर्ण महाभारत के उन पात्रों में है, जिन्होंने जीवन भर प्रतिकूलताओं से संघर्ष किया। सर्वथा योग्य होने पर भी कर्ण को वह कभी नहीं मिला, जिसका वह वास्तविक रूप से अधिकारी था। कर्ण का जन्म कुन्ती को मिले एक वरदान स्वरूप हुआ था। जब वह कुँआरी थी, तब एक बार दुर्वासा ऋषि उसके पिता के महल में पधारे। तब कुन्ती ने एक वर्ष तक ऋषि की आदरपूर्वक सेवा की। कुन्ती के सेवा भाव से प्रसन्न होकर उन्होंने अपनी दिव्य दृष्टि से यह देख लिया कि उसका विवाह पाण्डु से होगा तथा उससे सन्तान नहीं हो सकती, इसलिए यह वरदान दिया कि वह किसी भी देवता का स्मरण करके उनसे सन्तान प्राप्त कर सकती है।

एक दिन कुन्ती ने उत्सुकता वश कुँआरे पन में ही सूर्य देव का ध्यान किया। इससे सूर्य देव ने प्रकट होकर उसे एक पुत्र दिया जो सूर्य के समान ही तेजस्वी था और कवच तथा कुण्डल लेकर उत्पन्न हुआ था। अब सुन्दर बालक देख तनिक उल्लास के बाद लोक लाज के भय से कुन्ती चिन्तित हो गयी। अन्ततः उसने उस बालक को एक सन्दूक में रख गंगा जी में बहा दिया।

गंगा जी में बहते कर्ण को महाराज धृतराष्ट्र के सारथी अधिरथ और उनकी पत्नी राधा ने गोद ले लिया तथा उसका लालन–पालन किया। इसी कारण कर्ण को राधेय भी कहा जाता है। महाबलि कर्ण ने दुर्योधन से मित्रता का निर्वहन अपने प्राणों की अन्तिम श्वास तक किया।

महाभारत में अपनी वीरता के कारण जिस सम्मान से कर्ण का स्मरण होता है, उससे अधिक आदर उन्हें उनकी दान शीलता के लिए दिया जाता है। कर्ण का शुभ संकल्प था कि मध्याह्न में जब वह सूर्य देव की आराधना करता है, उस समय उससे जो भी माँगा जाएगा, वह स्ववचनबद्ध होकर उसको पूर्ण करेगा। कर्ण के जन्म से प्राप्त कवच कुण्डल के कारण उसकी युद्ध में शारीरिक क्षति होना असम्भव था।

तब अर्जुन के देव पिता इन्द्र ने भिक्षुक बनकर मध्याह्न पूजा के समय कवच कुण्डल की मांग की; इस प्रसंग में सूर्यदेव द्वारा पूर्व में ही सतर्क करने पर भी वचनबद्धता पर दृढ़ रह कर, आसन्न भवितव्य का पूर्वानुमान होने पर भी इन्द्र को कवच–कुंडल का दान देना तथा प्रत्युत्तर में वरदान लेने से इनकार करना महाभारत के विविध चरित्रों में कर्ण को सर्वोत्तम स्थान पर पहुँचाता है। इस प्रकार प्राणों की परवाह न करके अपनी प्रतिबद्धता अनुरूप दानशील कर्ण का नाम चिर स्मरणीय रहेगा।

इसी प्रकार एक ओर प्रसंग भी उल्लेखनीय है।

महाभारत का युद्ध चल रहा था। सूर्यास्त के बाद सभी अपने –अपने शिविरों में थे। उस दिन अर्जुन, कर्ण को पराजित कर अहंकार में चूर थे। वह अपनी वीरता की डींगे हाँकते हुए कर्ण का तिरस्कार करने लगे। यह देखकर श्रीकृष्ण बोले– 'पार्थ! कर्ण सूर्य पुत्र है। उसके कवच और कुण्डल दान में प्राप्त करने के बाद ही तुम विजय पा सके हो, अन्यथा उसे पराजित करना किसी के वश में नहीं था। वीर होने के साथ ही वह दानवीर भी है।'

कर्ण की दानवीरता की बात सुनकर अर्जुन तर्क देकर उसकी उपेक्षा करने लगा। श्रीकृष्ण अर्जुन की मनोदशा समझ गए। वे शान्त स्वर में बोले, 'पार्थ! कर्ण रणक्षेत्र में घायल पड़ा है। तुम चाहो तो उसकी दानवीरता की परीक्षा ले सकते हो।'

अर्जुन ने श्रीकृष्ण की बात मान ली। दोनों ब्राह्मण के रूप में उसके पास पहुँचे। घायल होने के बाद भी कर्ण ने ब्राह्मणों को प्रणाम किया और वहाँ आने का उद्देश्य पूछा। श्रीकृष्ण बोले– 'राजन! आपकी जय हो। हम यहाँ भिक्षा लेने आये हैं कृपया हमारी इच्छा पूर्ण करें।' कर्ण थोड़ा लज्जित होकर बोला– 'ब्राह्मण देव ! मैं रणक्षेत्र में घायल पड़ा हूँ । मेरे सभी सैनिक मारे जा चुके हैं। मृत्यु मेरी प्रतीक्षा कर रही है। इस अवस्था में भला मैं आपको क्या दे सकता हूँ ?'

'राजन्! इसका अर्थ यह हुआ कि हम खाली हाथ ही लौट जाएँ ? किन्तु इससे आपकी कीर्ति धूमिल हो जाएगी। संसार आपको धर्म विहीन राजा के रूप में याद रखेगा।' यह कहते हुए वे लौटने लगे। तभी कर्ण बोला– 'ठहरिए ब्राह्मण देव! मुझे यश–कीर्ति की इच्छा नहीं है, लेकिन मैं अपने धर्म से विमुख होकर मरना नहीं चाहता। इसलिए मैं आपकी इच्छा अवश्य पूर्ण करूँगा।'

कर्ण के दो दाँत सोने के थे, उन्होंने निकट पड़े पत्थर से उन्हें तोड़ा और बोले, 'ब्राह्मण देव! मैंने सर्वदा सोने का ही दान किया है। इसलिए आप इन स्वर्ण युक्त दाँतों को स्वीकार करें।'

श्रीकृष्ण दान अस्वीकार करते हुए बोले– 'राजन्! इन दाँतों पर रक्त लगा है और आपने इन्हें मुख से निकाला है, इसलिए यह स्वर्ण जूठा है। हम जूठा स्वर्ण स्वीकार नहीं करेंगे।'

तब कर्ण घिसटते हुए अपने धनुष तक गये और उस पर बाण चढ़ाकर गंगा का स्मरण किया। तत्पश्चात् बाण भूमि पर मारा। भूमि पर बाण लगते ही वहाँ से गंगा की तेज जल धारा बह निकली। कर्ण ने उसमें दाँतों को धोया और उन्हें देते हुए कहा– 'ब्राह्मणो अब यह स्वर्ण शुद्ध है। कृपया इसे ग्रहण करें।'

तभी कर्ण पर पुष्पों की वर्षा होने लगी। भगवान् श्रीकृष्ण की स्तुति करते हुए कर्ण बोला– 'भगवन्! आपके दर्शन पाकर मैं धन्य हो गया। मेरे सभी पाप नष्ट हो गये। प्रभु! आप भक्तों का कल्याण करने वाले हैं।'

तब श्रीकृष्ण उसे आशीर्वाद देते हुए बोले– ''कर्ण! जब तक सूर्य, चन्द्र, तारे और पृथ्वी रहेंगे, तुम्हारी दानवीरता का गुणगान तीनों लोकों में किया जायेगा।''

महादानी भामाशाह

'' धन्य वह देश की माटी है, जिसमें भामा सा लाल पला।
उस दानवीर की यश गाथा को, मेट सका क्या काल भला।।

दानवीर भामाशाह का जन्म राजस्थान के मेवाड़ राज्य में 29 अप्रैल, 1547 को हुआ था। इनके पिता भारमल थे। जिन्हें राणा साँगा ने रणथम्भौर के किले का किलेदार नियुक्त किया था। भामाशाह बाल्यकाल से ही मेवाड़ के महाराणा प्रताप के मित्र, सहयोगी और विश्वास पात्र सलाहकार थे। अपरिग्रह को जीवन का मूल मंत्र मानकर संग्रहण की प्रवृत्ति से दूर रहने की चेतना जगाने में भामाशाह सदैव अग्रणी थे। उनको मातृभूमि के प्रति अगाध प्रेम था। दानवीरता के लिए भामाशाह का नाम आज भी अमर है।

महाराणा प्रताप ने 'हल्दी घाटी युद्ध' के बाद भी मुगलों पर आक्रमण जारी रखे थे। धीरे–धीरे मेवाड़ का बहुत बड़ा इलाका महाराणा प्रताप के कब्जे में आने लगा था। महाराणा की शक्ति बढ़ने लगी, किन्तु बिना बड़ी सेना के शक्तिशाली मुगल सेना के विरूद्ध युद्ध जारी रखना कठिन था। सेना का गठन बिना धन के सम्भव नहीं था।

राणा ने सोचा जितना संघर्ष हो चुका, वह ठीक ही रहा। यदि इसी प्रकार कुछ दिन और चला, तब सम्भव है जीते हुए इलाकों पर फिर से मुगल कब्जा कर लें। इसलिए उन्होंने यहाँ की कमान अपने विश्वस्त सरदारों के हाथों सौंप कर गुजरात की ओर कूच करने का विचार किया। वहाँ जाकर फिर से सेना का गठन करने के पश्चात् पूरी शक्ति के साथ मुगलों से मेवाड़ को स्वतन्त्र करवाने का विचार

उन्होंने किया। प्रताप अपने कुछ चुनिन्दा साथियों को लेकर मेवाड़ से प्रस्थान करने वाले ही थे कि वहाँ पर उनका पुराना खजाना मन्त्री नगर सेठ भामाशाह उपस्थित हुआ।

उसने महाराणा के प्रति 'खम्मा घणी' करी और कहा– ''मेवाड़ धणी अपने घोड़े की बाग मेवाड़ की तरफ मोड़ लीजिए। मेवाड़ी धरती मुगलों की गुलामी से आतंकित है, उसका उद्धार कीजिए।''

यह कहकर भामाशाह ने अपने साथ आये परथा भील का परिचय महाराणा से करवाया। भामाशाह ने बताया कि किस प्रकार परथा ने अपने प्राणों की बाजी लगाकर पूर्वजों के गुप्त खजाने की रक्षा की और आज उसे लेकर वह स्वयं सामने उपस्थित हुआ है। ''मेरे पास जो धन है, वह भी पूर्वजों की पूँजी है। मेवाड़ स्वतन्त्र रहेगा तो धन फिर कमा लूँगा। आप यह सारा धन ग्रहण कीजिए और मेवाड़ की रक्षा कीजिए।''

भामाशाह का यह निष्ठापूर्ण सहयोग और समर्पण महाराणा प्रताप के जीवन में महत्त्वपूर्ण और निर्णायक साबित हुआ । मेवाड़ के इस वृद्ध मन्त्री ने अपने जीवन में काफी सम्पत्ति अर्जित की थी। मातृभूमि की रक्षा के लिए महाराणा प्रताप का सर्वस्व होम हो जाने के बाद भी उनके लक्ष्य को सर्वोपरि मानते हुए भामाशाह अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति के साथ प्रताप की सेवा में उपस्थित हुए और उनसे मेवाड़ के उद्धार की याचना की। माना जाता है कि यह सम्पत्ति इतनी अधिक थी कि उससे वर्षों तक 25,000 सैनिकों का खर्चा पूरा किया जा सकता था।

भामाशाह और परथा भील की देश भक्ति, दानशीलता और ईमानदारी देखकर महाराणा प्रताप का मन द्रवित हो गया। उनकी आँखो से अश्रुधारा फूट पड़ी । उन्होंने दोनों को गले लगा लिया। महाराणा ने कहा कि आप जैसे सपूतों के बल पर ही मेवाड़ जिन्दा है। मेवाड़ की धरती और मेवाड़ के महाराणा सदा–सदा इस उपकार को याद रखेंगे। मुझे आप दोनों पर गर्व है।

''भामा जुग–जुग सिमरसी, आज कायो उपगार।
परथा, पूँजा, पीथला, उयो परताप इक चार।।''

अर्थात् '' हे भामाशाह! आपने आज जो उपकार किया है, उसे युगों–युगों तक याद रखा जाएगा। यह परथा, पूँजा, पीथल और मैं प्रताप चार शरीर होकर भी एक है। हमारा संकल्प भी एक है।''

ऐसा कहकर महाराणा ने अपने मन के भाव प्रकट किए। महाराणा प्रताप ने मेवाड़ से पलायन करने का विचार त्याग दिया और अपने सब सरदारों को बुलावा भेजा। देव–रक्षित खजाना और भामाशाह का सहयोग तथा विपुल धन पाकर महाराणा ने सेना का संगठन करना शुरू कर दिया। एक के बाद दूसरा और फिर सारा मेवाड़ उनके कब्जे में आता चला गया।

उदारता के गौरव–पुरुष की इस प्रेरणा को चिर स्थायी रखने के लिए छत्तीसगढ़ शासन ने भामाशाह की स्मृति में दानशीलता, सौहार्द्र एवं अनुकरणीय सहायता के क्षेत्र में 'दानवीर भामाशाह सम्मान' स्थापित किया है।

उदयपुर, राजस्थान में राजाओं की समाधि स्थल के मध्य भामाशाह की समाधि बनी है। जैन महाविभूति भामाशाह के सम्मान में 31 दिसम्बर, 2000 को 3 रूपये का डाक टिकट जारी किया गया।

राजस्थान सरकार ने भी 'भामाशाह योजना' के तहत महिला को घर का मुखिया बनाते हुए भामाशाह कार्ड बनाने की योजना चलायी है। इसके अलावा महाराणा मेवाड़ फाउन्डेशन, उदयपुर द्वारा भी प्रति वर्ष 'भामाशाह अलंकरण' दिया जाता है। आज हर क्षेत्र में दानदाता के लिए भामाशाह पर्याय के रूप में प्रचलित है। भामाशाह का नाम अमर और शाश्वत है।

शब्दार्थ–

वैराग्य– मोह माया से दूर	व्यथा– पीड़ा
दैत्य– राक्षस	अस्त्र– हाथ से चलाया जाने वाला हथियार
सारथि– रथ चलाने वाला	सर्वस्व– सब कुछ
सम्बल– सहारा	सिमरसी– स्मरण करना,याद करना

अपरिग्रह– जरूरत से ज्यादा संग्रहण न करना।

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. दैत्यों को मारने के लिए वज्रास्त्र का निर्माण किया था–
   - (क) इन्द्र
   - (ख) दधीचि
   - (ग) विश्वकर्मा
   - (घ) वृत्रासुर
2. भामाशाह का समाधि स्थल कहाँ स्थित है?
   - (क) जयपुर
   - (ख) उदयपुर
   - (ग) चित्तौड़
   - (घ) माण्डलगढ़

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

3. महर्षि दधीचि की पत्नी का क्या नाम था?
4. श्रीकृष्ण ने 'पार्थ' कहकर किसको संबोधित किया है?
5. भामाशाह के पिता का क्या नाम था?
6. कर्ण को 'राधेय' क्यों कहा जाता है?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

7. असुरों को यज्ञ का भाग देने पर इन्द्र ने विश्वरूप की हत्या क्यों की?
8. श्री कृष्ण अर्जुन को रणभूमि में घायल पड़े कर्ण के पास क्यों ले गए?

9. महाराणा प्रताप हल्दी घाटी के युद्ध के पश्चात् मेवाड़ से पलायन क्यों करना चाहते थे ?

निबन्धात्मक प्रश्न

10. 'परथा, पूँजा, पीथला, उभो परताप इक चार' के आधार पर प्रत्येक चरित्र को स्पष्ट कीजिए।

11. 'अभ्यर्पण' में संकलित दानवीरों के जीवन से क्या प्रेरणा मिलती है? वर्तमान में दानवीरता की आवश्यकता पर विचार व्यक्त कीजिए?

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की उत्तरमाला

1. ग
2. ख

पाठ–10

'कैलास मानसरोवर – यात्रा'

IA4SGQ

तरूण विजय

जन्म– 2 मार्च,1956

लेखक परिचय

तरूण विजय, राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत पत्रकार एवं चिन्तक हैं। सम्प्रति वे राज्यसभा के सदस्य व श्यामाप्रसाद मुखर्जी शोध संस्थान के अध्यक्ष हैं। वह 1986 से 2008 तक करीब 22 सालों तक देश में बहुप्रतिष्ठित पत्र 'पांचजन्य' के संपादक रहे। इन्होंने अपने आजीविका की शुरूआत ब्लिट्ज अखबार से की थी। दादर और नगर हवेली में आदिवासियों के बीच सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में सक्रिय जीवन अनुकरणीय रहा है। तरुण विजय शौकिया फोटोग्राफर भी हैं और हिमालय उन्हें बहुत लुभाता है।

सिंधु नदी की शीतल बयार, कैलास पर शिव मंत्रोच्चार, चुशूल की चढ़ाई या बर्फ से जमे पहाड़ों पर चहलकदमी– इन सबको मिला दें तो कुछ–कुछ तरूण विजय नज़र आएंगे। इनके द्वारा रचित यात्रा वृत्तांत में इनका राष्ट्रीय, सांस्कृतिक और मानवीय चिंतन मुखर हुआ है। इनका सर्वाधिक उल्लेखनीय यात्रा वृत्तांत –'कैलास मानसरोवर' रहा जिसका प्रत्यक्ष वर्णन इनकी अपनी सचित्र पुस्तक–'कैलास मानसरोवर–यात्रा' में किया है।

पाठ परिचय

'कैलास मानसरोवर–यात्रा' के माध्यम से लेखक ने धार्मिक और सांस्कृतिक मान्यता को रेखांकित करते हुए जिस प्राकृतिक सौन्दर्य का सजीव चित्र प्रस्तुत किया है, वह लेखक की जीवन्त अनुभूति से एकाकार कराता है। मानसरोवर एवं कैलाश यात्रा के प्रत्येक पड़ाव का सूक्ष्म अंकन कर लेखक ने यात्रा वृत्तांत में पाठक को सह यात्री का रोमांचक अनुभव कराया है। लेखक की प्रवाहमयी शैली एवं शब्द चयन श्लाघनीय है।

कैलास मानसरोवर–यात्रा

तकलाकोट के पुरंग गेस्ट हाउस में एक और अजूबा हुआ। क्षितिज पर सूरज को अपनी स्वर्णमयी आभा का आलोक बिखेर अस्त होते समय का नयनाभिराम दृश्य देखकर जब हम अपने कमरों की ओर लौटे तो एक आवाज सुनाई दी – 'नमस्ते जी। कोई दिक्कत हो तो बताने का।' अरे वाह ! वह तिब्बती लड़का बड़ी अच्छे से हिंदी बोल रहा था। विदेश में , अपनी मातृभाषा के दो शब्द सुनकर मन के तार कैसे झनझना जातें हैं ।

उसका नाम टेम्पा था। देहरादून में पला बढ़ा। फिर रिश्तेदारों से मिलने चुपके से तिब्बत पहुँचा, घर वापसी में पकड़ लिया गया। किसी तरह छूट तो गया पर वह तकलाकोट का ही होकर रह

गया। वहीं शादी रचा ली। पत्नी गेस्ट हाउस में काम करती है। वह हमें घर ले गया। उत्साह से पुलकित हो उसने तिब्बती मक्खनवाली नमकीन चाय बनवाई। उसमें याक के दूध से बना मक्खन इस्तेमाल होता है– बड़ी मुश्किल से नाक बंद कर घूँट–घूँट चाय पी। मना इसलिए नहीं किया ताकि वह बुरा न मान जाये।

अगले दिन गणेश चतुर्थी थी। सुबह पाँच बजे उठे। सामान बाँधा। पौने छः बजे नाश्ता किया। नाश्ते में तली मूँगफली,रस–जैम, चाय, साबुदाने के पापड़ और मिली–जुली सब्जी थी। अच्छी होने के बावजूद एक तो चीनी का स्वाद अभी जुबान पर चढ़ा नहीं था, दूसरे इतनी सुबह कैसे नाश्ता करें! इस समय तो भारत में सुबह के 3.30 हो रहे थे। किसी तरह चाय पीकर जल्दी से बस में बैठे। हमारा सामान पीछे ट्रक में रखा था।

यात्री दो दलों में विभक्त थे– एक दल 'अ' – जो पहले कैलास यात्रा पर जाने वाला था और दूसरा दल 'ब' जो पहले मानसरोवर परिक्रमा करेगा। तकलाकोट से अगला पड़ाव तारचेन में था, प्रायः पचास किलोमीटर दूर। मार्ग में मानसरोवर तट पर जैदी शिविर पड़ता है, जहाँ कुछ देर रुककर यात्री स्नान करते हैं और पास ही एक पहाड़ी पर चढ़कर कैलास के प्रथम दर्शन करते हैं। इस यात्रा के रोमांच और उत्तेजना के बारे में क्या कहा जाए! लगता है बस अब जीवन सफल हो गया। अब कुछ भी हो जाए परवाह नहीं। मानसरावेर में स्नान के बाद कैलास दर्शन हो जाये तो फिर और क्या शेष रह जाता है चाहने को ? तो साहब, सुबह बस चलते ही गणपति बप्पा मोरिया के जयघोष से तकलाकोट गूँज उठा। गणेश चतुर्थी के दिन पहले गणपति– स्मरण किया फिर भजन गूँजने लगे। आज यात्रियों में कुछ अनोखा ही उत्साह था। सुबह का सुरमई अन्धेरा छँटता जा रहा था।

बस कच्चे पथरीले रास्ते पर हिचकोले खाती बढ़ रही थी। एक घंटे बाद अभी झपकी लगी ही थी कि अबुधाबी से आये राव साहब चीखे– 'अरे बाँयी ओर देखो बाँयी ओर! फैंटास्टिक!' सबने तुरंत बाँयी ओर मुँह घुमाया तो आवक रह गए। वह स्वप्न था या सत्य ? हल्के हल्के उजाले में आकाश के अनंत विस्तार के एक छोर पर दिव्य मणि–सा चमकता यह अपार गरिमामय पर्वत – शुभ्र, उज्जवल, मनमोहक !! गाइड बोला– 'यह गुरला मान्धाता पर्वत है। लोकश्रुति के अनुसार महाराजा मान्धाता ने मानसरोवर की खोज की थी और वहीं तट पर तपस्या की थी।'

7:30 बजे मान्धाता पर्वत के मंत्रमुग्ध कर देने वाले दर्शन के उपरान्त आगे बढ़े। हम एकदम मैदानी क्षेत्र से गुजर रहे थे। पठार, पहाड़ी, क्षेत्र से बिल्कुल भिन्न होता है। ऊँचाई पर रेगिस्तानी मैदान जैसा– जहाँ छोटे छोटे टीले, टीलेनुमा पहाड़ियाँ, ही ज्यादा होती हैं। 9 बजे के लगभग दो पहाड़ियों के बीच स्फटिक– सा निर्मल गहरे नीले रंग का जलाशय दिखा तो सब यात्री खुशी से चिल्ला उठे– मानसरोवर! पर गाइड ने बताया कि यह राक्षस ताल है। जिसे रावण–ह्रद भी कहते हैं। इसके बारे में कई

कथायें प्रचलित हैं। इसका जल आचमन या स्नान के लिए उपयुक्त नहीं माना जाता, न यहाँ कोई पूजा होती है।

कहते हैं, रावण ने तपस्या कर शिवजी से वरदान माँगा कि वह कैलास लंका ले जायेगा। सब देवता परेशान हो गये– अब शिवजी के दर्शनार्थ लंका जाना पड़ेगा ? बड़ी कठिनाई हो जायेगी। अंततः उन्होंने एक उपाय किया। जब रावण कैलास पर्वत उठाकर लंका की ओर बढ़ने लगा तो उसे तीव्र लघुशंका हुई। पास ही गणेश जी खड़े थे। रावण ने गणेश जी को कैलास थमाया और कहा, जब तक वे निवृत्त नहीं होते हैं तब तक कैलास भूमि पर न रखें। पर प्रभु की माया तो विचित्र होती है। एक ओर कैलासपति भारी होते चले गये और दूसरी ओर रावण को निवृत्त होने में घंटों लग गये। थककर गणेश जी ने कैलाश को भूमि पर रख दिया, सो रखा ही रह गया। कैलास, लंका जाने से बच गया। राक्षस ताल उसी रावण का बनाया हुआ है, इसीलिए अपावन माना जाता है।

11 बजे हम मानसरोवर तट पर पहुँचे। मानसरोवर– मानसरोवर ही है। उसकी उपमा नहीं दी जा सकती है। सूर्य की रश्मियाँ मानस के जल में परावर्तित हो अनंत सूर्यों का आभास करा रही थी। मानसरोवर की लहरें सागर की लहरों की तरह उठतीं–गिरतीं, क्षितिज और मानस के जल का रंग एक जैसा – एक रूप! कहाँ जल की सीमा खत्म होती है और क्षितिज शुरू होता है, जान पाना असंभव है। चारों ओर पठारी मैदान और कुछ कुछ छोटी पहाड़ियाँ, मध्य में यह दैवी अपार जल राशि जिसे स्वयं ब्रह्मा ने अपने मानस से रचा और जहाँ देवगण स्नान करने आते हैं। तट के आस पास रंगीन फूलों वाली घास थी जिस पर पाँव रखते ही धँसते थे।

मानसरोवर के हंसों के बारे में बहुत सुना था– काफी प्रयास किया कहीं दिखें– पर हंस तो नहीं, हाँ जल बतखें जरूर दिखीं। इसी मानसरोवर का वर्णन हमारे आदि ग्रंथों में मिलता है। रामायण,महाभारत, सभी पुराणों – विशेष कर स्कंद पुराण में इसका वर्णन है। बाणभट्ट की कादम्बरी, कालिदास के रघुवंश, कुमार संभवम् और पाली के बौद्ध ग्रंथों में भी इसका सुन्दर वर्णन है।

बौद्ध ग्रंथों में इसे अनोतप्त या अनवतप्त, जो ऊष्मा और कष्ट से परे है– कहा गया है। इसके चारों ओर सतलज, करनाली, (सरयू की एक सहयोगी नदी), ब्रह्मपुत्र और सिंधु के उद्गम के स्रोत हैं। इसके उत्तर में कैलास, दक्षिण में गुरला मान्धाता, पश्चिम में राक्षस ताल है। सागर तल से 14950 फीट की ऊँचाई पर स्थित मानसरोवर का व्यास 54 मील तथा गहराई 300 फीट है। यह 200 वर्गमील क्षेत्र में फैली हैं।

तिब्बती इसे त्सो मावांग या त्सो माफांग कहते हैं– यह विश्व की सबसे पवित्र, सबसे प्रसिद्ध और सबसे प्राचीन झील है। सर्वे आफ इंडिया द्वारा 1934 में प्रकाशित एच.सी.बराई व एच.एच हैडन की पुस्तक में कहा गया है कि मानव सभ्यता के ज्ञान में यह सबसे प्राचीन झील है। भूगोलविदों की जानकारी में आने वाली सबसे पहली झील भी मानसरोवर ही है।

हाँ, तो मानसरोवर के तट पर आकर मानों होशोहवास खो गए। एक दूसरे ही लोक में सब विचरने लगे। ठण्ड काफी थी, फिर परिक्रमा के लिए भी दुबारा आना था पर डॉक्टर अनिल व उनकी धर्मपत्नी झटपट स्नान की तैयारी करने लगे। अमरीका में 15 वर्ष बिताकर सिर्फ तीन वर्ष के लिए भारत आये इस डॉक्टर की श्रद्धा ने सबको स्नान के लिए प्रेरित किया। अनिल ने कहा– ' आते समय मैंने शिव पुराण पढ़ा था। उसमें लिखा था, मानसरोवर में एक बार स्नान करने से सात पीढ़ियाँ तर जाती हैं। ऐसा मौका फिर कहाँ मिलेगा?'

मानस को सबसे पहले प्रणाम किया, आचमन किया– एकदम मीठा अमृत जैसा स्वाद, फिर डरते–डरते पहले एक पाँव, ...फिर दूसरा पाँव, सर्दी लग रही थी। हड्डियाँ तक काँप रही थीं– पर एक बार जल में आधा शरीर डूबा– पहली डुबकी लगाई तो न सर्दी लगी न भय । किनारे किनारे घास काफी हैं– 15– 20 फीट भीतर जाने पर 3–4 फीट की गहराई मिलती है। लहरें काफी तेज होती हैं पर पानी इतना निर्मल है कि दूर से देखने पर भी तल के पत्थर साफ चमकते हैं।

मानस में स्नान कर सूर्य को अर्घ्य दिया– गायत्री मंत्र व महामृत्युंजय मंत्र का जप किया–बाहर आकर कपड़े बदले और भागे पहाड़ी चढ़ने, जहाँ से श्री कैलास दर्शन करने थे। आज तो मुँहमाँगी मुराद मिल रही थी। आज तो खज़ाना लुटाने को मन था। पाँव में पंख थे, मन आकाश में था। धरती की, शरीर की, सुध–बुध रह ही नहीं गयी थी। 15 मिनट लगे और पहाड़ को ऊपर फैले मैदान के कोने पर पहुँचते ही ठीक सामने ज्योतिरूप शिवलिंग के आकार का हिमखंड दिखायी दिया जो था बहुत दूर..........................पर बहुत पास लगा।

नीला आकाश आस पास कुछ नहीं, मात्र एक–एक ही केवल अत्युच्च शिखर, शुभ्र आभायुक्त, प्रभु का ज्योति स्वरुप! मौन व्याप गया था सर्वत्र । किसी को किसी का ध्यान न रहा। दंडवत प्रणाम कर सब चुप बैठ गये। दिलीप सिंघवी दूर तक शूटिंग करते चले गये थे। दौड़कर लौटे और लिपट गये। मेरे कंधे उनके प्रेमाश्रुओं से गीले हो गये – कुछ कहते ही नहीं बनता था– गला रूँधा था। मुझ सरीखे राजनीतिक पंक से घिरे कागज़ काले करने वाले कलमजीवी के लिए यह अनुभव साक्षात प्रभु दर्शन से कम न था।

शब्दार्थ

आलोक– प्रकाश	नयनाभिराम– आँखों को भाने वाला
गेस्ट हाउस– अतिथि गृह	पुलकित – प्रसन्न
दिक्कत– असुविधा	लोकश्रुति– लोक प्रचलित बातें
रश्मियाँ– किरणें	अपावन– अपवित्र
अत्युच्च– अत्यन्त ऊँचा	

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. विदेश में हिंदी बोलने वाला लड़का कहाँ का था?

(क) तिब्बत (ख) नेपाल

(ग) भारत (घ) चीन

2. तिब्बती मक्खनवाली चाय किस पशु के दूध के मक्खन से बनाई जाती है?

(क) गाय के (ख) याक के

(ग) भैंस के (घ) बकरी के

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

3. लेखक को फिर नाश्ते में क्या–क्या मिला था ?
4. तकलाकोट से अगला पड़ाव कौन सा था ?
5. लोक मान्यता के अनुसार मानसरोवर की खोज किसने की थी ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

6. विदेश में अपनी मातृभाषा के दो शब्द सुनकर मन के तार क्यों झनझना जाते हैं ?
7. राक्षस ताल को रावण ह्रद क्यों कहते हैं ?
8. मानसरोवर का वर्णन किन किन आदि ग्रंथों में मिलता है ?
9. मानसरोवर की भौगोलिक स्थिति को समझाइये।

निबन्धात्मक प्रश्न

10. मानसरोवर के सौन्दर्य का वर्णन करते हुए इसके माहात्म्य को स्पष्ट कीजिए।
11. "आज तो खज़ाना लुटाने को मन था।" लेखक की इस अनुभूति को सकारण स्पष्ट कीजिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की उत्तरमाला

1 क

2 ख

पाठ—11

प्रेरक जीवन

संकलित

पाठ परिचय

मनुष्य जीवन का कोई मानक या आदर्श नहीं हो सकता, लेकिन जिन महान व्यक्तियों ने जीवन को सुगम और श्रेष्ठ बनाने के लिए संघर्ष किए हैं, उनके साहस और संकल्प को पाथेय की तरह लेकर नए रास्ते बनाने के लिए आगे बढ़ा जा सकता है। संकलित अध्याय में देश की सीमा रक्षा और विदेशी आक्रमण से संघर्ष करते हुए शहीद हुए सिन्धुपति महाराज दाहिर सेन तथा आधुनिक विज्ञान और तकनीक से भारत को सशक्त बनाने वाले मिसाईल मैन और जनता के राष्ट्रपति डॉ. अब्दुल कलाम के जीवन—चरित्र को तथ्यात्मक रुप से प्रस्तुत किया है। इसका उद्देश्य इन महापुरुषों के परिवेश को समझकर राष्ट्र की रक्षा और विकास के लिए उन्होंने जो त्याग, बलिदान तथा कर्मयोग का उदाहरण प्रस्तुत किया है उसको आत्मसात कराना है। यह प्रेरक जीवन भावी नागरिकों को अभिप्रेरित कर पथ प्रशस्त करेगा।

प्रेरक जीवन 1
सिन्धुपति महाराज दाहिर सेन

भारत का पश्चिमी सीमा प्रांत सिंध प्रारंभ से ही विदेशी आक्रांताओं के हमलों का शिकार रहा है। भारत भूमि पर बुरी नजर रखने वाले ईरानी, ईराकी, यवन, सिंध के रास्ते ही भारत भूमि में प्रवेश करने का कुत्सित प्रयास करते रहे हैं, मगर जिन जांबाजों ने आतताइयों को नाकों चने चबवाए, उनमें सिंध देश के महान सपूत शूरवीर और प्रतापी महाराजा दाहिर ने स्वयं तो प्राणों की कुर्बानी देकर देश की रक्षा की, अपितु उनके पूरे परिवार ने देश की रक्षा में अपने प्राणों का उत्सर्ग कर दिया।

छठी शताब्दी में सिंध पर देवाजी वंश के राजा रायसाहरस का शासन था। ईरान के शाह नीमोज ने आमने—सामने के युद्ध में जब देखा कि पार पाना मुश्किल है तो उसने छल कपट का सहारा लेकर राजा साहरस को घेर कर हत्या कर दी। युद्ध भूमि में अपने पिता के वीर गति प्राप्त करने का समाचार जब युवराज राय साहसी को मिला तो वह शेष सेना लेकर युद्ध भूमि में आ डटा, सिंधी सैनिकों की बहादुरी से नीमोज प्रभावित हुए बिना नहीं रह सका और बिना निर्णय के युद्ध क्षेत्र को छोड़कर अपने देश लौट गया । युवराज राय साहसी ने सिंध का शासन संभाला। वीर प्रतापी राजा साहसी राय का कोई उत्तराधिकारी पैदा नहीं हुआ। लिहाजा उनके निधन के बाद उत्तराधिकार में चचराय ने राज्य संभाला ।

दाहिर उसी चचराय का वीर पुत्र था। 672 ई. में चचराय का देहान्त हो गया। चच की मृत्यु के बाद उसका छोटा भाई चन्दन सिन्ध का शासक बना। आठ वर्ष बाद उसकी भी मृत्यु होने के बाद दाहिर सेन विशाल साम्राज्य के अधिपति बने। दाहिर ने पिता के राज्य को अच्छी तरह सम्भाला। उनके राज्य

में प्रजा खुशहाल थी। प्रदेश धनधान्य से समृद्ध था । दाहिर के राज्य की राजधानी 'अलोर' थी। यह बहुत सुन्दर और समृद्ध शहर था।

अरबों ने लूट–खसोट की नीयत से भारत पर हमला किया और उनमें से अधिकांश हिन्दुस्तानी तलवार की भेंट चढ़े। अरबी सरदार हज्ज़ाज ने अपने दामाद मुहम्मद बिन कासिम को भारी सैन्य बल एवं शस्त्रों के साथ सिंध पर हमलावर बनाकर भेजा। कासिम मकराना, कन्नाजबुर तथा अरमाइल पर विजय प्राप्त करता हुआ 711 ई. में सिन्ध के प्रसिद्ध बन्दरगाह नगर देवल वर्तमान कराची पर आ धमका। देवल परकोटे में एक विशाल मन्दिर था, उसके गुंबद पर केसरिया पताका लहरा रही थी। यह पताका देवल के सैनिकों और नागरिकों की प्रेरक शक्ति थी। दुर्भाग्यवश मन्दिर के पूजारी ने यह रहस्य कासिम तक पहुँचा दिया और कासिम ने उस पताका को गिरा दिया। अपशगुन की आशंका से सेना और जनता का मनोबल टूट गया और उन्होंने विश्वासघातियों के कारण आत्मसमर्पण कर दिया।

कासिम ने देवल विजय और अत्याचार के बाद नेरुन का रुख किया, जिसके बौद्ध शासक भांडारकर सामानी ने बिना युद्ध आत्मसमर्पण कर कासिम के लिए मार्गदर्शक की भूमिका का निवेदन किया। कासिम बेत के शासकों के सहयोग से सिन्धु नदी पार कर रावर दुर्ग के निकट पहुँच गया।

एक अरब सरदार मुहम्मद बिन अलाफी ने हज्ज़ाज के अत्याचारों से परेशान होकर अपने कबीले के 500 साथियों के साथ महाराजा दाहिर के पास शरण ले रखी थी। हज्ज़ाज ने पत्र लिखकर अलाफी व साथियों की वापसी की माँग रखी थी किन्तु महाराजा दाहिर ने शरणागत रक्षा को हिन्दू धर्म के अनुसार प्रमुख कर्तव्य बताकर अस्वीकार कर दिया।

उसी अलाफी को कासिम के रावर दुर्ग के निकट पहुँचने की सूचना पर महाराजा दाहिर ने कहा ''अलाफी तुम अरब सेना के बारे में अच्छी तरह परिचित हो, इसलिए तुम हमारी सेना के साथ आगे रहो।''

इस पर अलाफी ने मुसलमान सेना के विरुद्ध तलवार उठाने से इन्कार कर दिया और वहाँ से जाने की अनुमति माँगी। महाराज ने उदारता दिखाते हुए जाने दिया, किन्तु उसने बाद में अलोर दुर्ग का दरवाजा खुलवाने का नीच कार्य किया।

महाराजा दाहिर की सेना और अरब सेना के मध्य भयंकर युद्ध हुआ। महाराजा दाहिर पाँच हजार सैनिकों और हाथियों के साथ युद्ध स्थल पर पहुँचे और प्रारम्भ से अरब सेना को पीछे धकेलकर, हतोत्साहित कर दिया। सूर्यास्त को युद्ध बन्द होने तक दाहिर की सेना ने अरबों की सेना में भय का संचार कर दिया था। अगले दिन दाहिर अपने दोनों पुत्रों जयसिंह और धरसिया तथा अनेक इष्टजन के साथ युद्ध करने आये। भयंकर युद्ध में मध्याह्न बाद दाहिर की सेना की विजय सन्निकट प्रतीत हो रही थी, अरब सेना रणस्थल से पलायन करने लगी।

तब कासिम ने एक षड़यन्त्र रचा। युद्ध के मैदान में भी राजा दाहिर धर्म, नारी एवं गौरक्षा के प्रति संवेदनशील थे। मुहम्मद बिन कासिम ने दाहिर की इसी गुणवत्ता का लाभ उठाकर कुछ बन्दी

महिलाओं और अरबी सैनिकों को महिला वेश धारण कराकर युद्ध स्थल के अलग कोने में हाहाकार करवाया कि ''बचाओ–बचाओ अरब अस्मत लूट रहे हैं।'' यह सुन नारी रक्षा धर्म का पालन करने दाहिरसेन अकेले उस दिशा में चल पड़े।

प्रजावत्सल दाहिरसेन पर कासिम ने चौतरफा आक्रमण कर दिया, आग का गोला चलाकर हाथी को घायल कर दिया। जिससे घायल गज नदी में घुस गया। दाहिरसेन असंख्य सैनिकों से वीरतापूर्वक युद्ध करते हुए मातृभूमि के अमर शहीद बन गए। महाराज की शहादत के बाद अरब आततायियों से अपने सतीत्व की रक्षा करने महारानी सहित अगणित वीरांगनाओं ने जौहर को अंगीकार किया।

अरब आक्रमणकारी मुहम्मद बिन कासिम ने महाराजा दाहिरसेन की राजकुमारी सूर्यकुमारी और परमाल को बन्दी बनाकर खलीफा के पास भेंट स्वरूप भेजा तो उन्होंने अपनी बुद्धि और त्वरित चतुरता दिखाते हुए खलीफा को कहानी गढ़कर बताया कि यहाँ भेजने से पहले कासिम ने तीन रात अपने हरम में रखा था। इस कारण हम पवित्र नहीं है। यह सुनकर खलीफा आग–बबूला हो गया।

उसने मुहम्मद बिन कासिम को सांड की खाल में सिलकर उसके समक्ष प्रस्तुत करने का आदेश दिया। खलीफा के आदेश की पालना हुई और कासिम को जिंदा ही सांड की खाल में सिलकर खलीफा के समक्ष पेश किया गया, तब तक उसके प्राण पखेरू उड़ चुके थे। भारतीय नारी के साहस का सजीव स्वरूप हमारे समक्ष आ जाता है। वीर शिरोमणि दाहिर सेन का त्याग और उत्सर्ग आज भी प्रेरणास्पद है। राष्ट्र रक्षा के लिए सर्वस्व न्योछावर करने का अनुकरणीय सन्देश दाहिर सेन के जीवन से सदैव प्राप्त होता रहेगा।

शब्दार्थ

जांबाज – वीर,

शरणागत – शरण में आया हुआ, शहादत– बलिदान,

हरम – अन्तःपुर, कुत्सित– नीच,

न्योछावर – समर्पित करना, उत्सर्ग– त्याग, दान,

गुम्बद – शिखर

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. दाहिरसेन के राज्य की राजधानी कौनसी थी ?

(क) सिन्ध (ख) देवल

(ख) रावर दुर्ग (घ) अलोर

2. प्रजावत्सल का अर्थ है–

(क) प्रजा का पुत्र (ख) प्रजा का पुत्रवत् पालन करने वाला

(ग) प्रजा का प्रतिनिधि (ग) प्रजा का रक्षक

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

3. महाराजा दाहिर सेन से पूर्व सिंध के शासक कौन–कौन थे?
4. महाराजा दाहिर सेन की पुत्रियों के नाम बताइये।
5. किस अरब को दाहिर सेन ने अपने राज्य में शरण दी थी?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

6. दाहिर सेन से पूर्व भारतीयों के अरबों से संघर्ष को स्पष्ट करो।
7. अरबों के आक्रमण की भारत में सफलता का मुख्य कारण बताइये।
8. दाहिर सेन किस षड़यन्त्र में फँस कर हारे? लिखिए
9. सूर्या और परमाल कौन थी ? उन्होंने अपनी पराजय का बदला कैसे लिया? बताइये।

निबन्धात्मक प्रश्न

10 दाहिर सेन की चारित्रिक विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए ।

11 धर्म, नारी और गौरक्षा को भारतीय मान्यता के आधार पर महत्त्वपूर्ण क्यों मानागया है ?

वस्तुनिश्ठ प्रश्नों की उत्तरमाला

1 घ

2 ख

•••

प्रेरक जीवन 2

भारतरत्न : डॉ. अब्दुल कलाम

भारतरत्न, मिसाईल मैन और जनता के राष्ट्रपति डॉ. अबुल पाकिर जैनुलआबदीन अब्दुल कलाम भारत गणराज्य के ग्यारहवें राष्ट्रपति थे। विज्ञान की दुनिया से देश का प्रथम नागरिक बनने का गौरव डॉ. कलाम की समर्पित कर्मनिष्ठा का परिणाम है।

डॉ. कलाम का जन्म 15 अक्टूबर 1931 को तमिलनाडु के रामेश्वरम् कस्बे में एक मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ था। इनके पिता जैनालुबदीन की बहुत अच्छी औपचारिक शिक्षा नहीं हुई थी और न ही वे बहुत धनी व्यक्ति थे, परन्तु समझ और बुद्धि में श्रेष्ठ थे, उनमें उदारता की सच्ची भावना थी।

इनके पिता जी स्थानीय ठेकेदार से मिलकर लकड़ी की नौकाएँ बनाने का काम करते थे। कलाम को विरासत में पिता जी से ईमानदारी और अनुशासन तथा माँ से ईश्वर में विश्वास और करुणा का भाव मिला था।

कलाम ने प्रारम्भिक शिक्षा रामेश्वरम् के प्राथमिक विद्यालय से प्राप्त की । उनके शिक्षक अयादुरै सोलोमन ने बचपन में ही इन्हें कहा ''जीवन में सफल होने और उत्कृष्ट परिणाम के लिए इच्छा, आस्था और अपेक्षा को समझना और मानना आवश्यक है।'' शिक्षक की बात को आत्मसात करना आपका नैसर्गिक गुण रहा है।

अर्थाभाव से जूझते हुए भी शिक्षा को निरन्तर बनाए रखने के लिए कलाम ने अखबार वितरण का कार्य भी किया था। तिरुचापल्ली के सेंट जोसेफ कॉलेज से बी.एससी. करके इन्होंने दक्षिण भारत में तकनीकी शिक्षा के लिए मशहूर मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी में प्रवेश लिया तथा वहाँ से हिन्दुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड बंगलौर चले गए। वहाँ से वैमानिक अभियन्ता बनकर निकले तो इनके पास नौकरी के दो बड़े अवसर थे। एक अवसर भारतीय वायुसेना का था और दूसरा रक्षा मन्त्रालय के अधीन तकनीकी विकास एवं उत्पादन निदेशालय का था।

रक्षा मन्त्रालय में चयन से आपकी नवोन्मेष अभीप्सा साकार होने लगी। इन्होंने ग्राउंड इक्विपमेंट मशीन के रूप में स्वदेशी होवर क्राफ्ट का मॉडल तैयार कर, उसका नाम 'नन्दी' दिया। प्रतिभा का प्रकाश फैलने लगा और कलाम को कार्य के नए अवसर मिलने लगे। कलाम को डॉ. विक्रम साराभाई ने भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान समिति में रॉकेट इंजीनियर के पद पर नियुक्त किया।

इसके पश्चात् कलाम को सैटेलाइट लांच वैहिकल का (एस.एल.पी.) परियोजना प्रबन्धक बनाया गया। 18 जुलाई 1980 को श्री हरिकोटा रॉकेट प्रक्षेपण केन्द्र से एस.एल.वी. ने सफल उड़ान भरी। इस परियोजना की सफलता ने डॉ. कलाम को राष्ट्रीय पहचान दी। इस उपलब्धि पर उन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया गया।

सफलता से दायित्वों का बोझ बढ़ता ही जाता है। डॉ. कलाम को रक्षा अनुसंधान तथा विकास प्रयोगशाला में गाइडेड मिसाइल डेवलपमेन्ट की जिम्मेदारी दी गयी। इस परियोजना पर कार्य करते हुए अब्दुल कलाम ने पृथ्वी, त्रिशूल, अग्नि, आकाश, नाग, ब्रह्मोस् आदि मिसाइलें विकसित की। जो जमीन से, समुद्र से तथा हवा से कहीं से भी दागी जा सकती है।

इन मिसाइलों के विकास से रक्षा क्षेत्र में भारत की न केवल ताकत बढ़ी है, अपितु विश्व मंच पर भारतीय प्रतिभा का प्रभाव भी बढ़ा है। रक्षा और अन्तरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र में अद्वितीय योगदान के लिए भारत सरकार ने इन्हें 1997 में 'भारत रत्न' से अलंकृत किया।

भारत ने रक्षा क्षेत्र में आत्म निर्भरता बढ़ाने के लिए 11 व 13 मई 1998 में राजस्थान के पोकरण में पाँच सफल परमाणु परीक्षण किए। इस सम्पूर्ण गोपनीय एवं विशिष्ट अभियान में डॉ. कलाम ने महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया। डॉ. कलाम वर्ष 2001 तक भारत सरकार के प्रमुख वैज्ञानिक सलाहकार रहे।

वैज्ञानिक डॉ. अब्दुल कलाम को तत्कालीन प्रधानमन्त्री अटल बिहारी वाजपेयी ने राष्ट्रपति पद का उम्मीदवार बनने का आग्रह किया, जिसको स्वीकार कर राष्ट्रपति का चुनाव लड़ने का निर्णय लिया। नब्बे प्रतिशत मतों के समर्थन से कलाम भारत के राष्ट्रपति बने। 25 जुलाई, 2002 को कलाम ने राष्ट्रपति पद की शपथ ली।

संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करते हुए कलाम ने भारत के विकास के स्वप्न को साकार करने का कर्म निरन्तर जारी रखा। कलाम का पाँच वर्ष का राष्ट्रपति कार्यकाल भारत के इतिहास का स्वर्णयुग है। गैर राजनीतिक व्यक्तित्व का देश के सबसे बड़े पद पर कार्य करने का प्रथम अवसर था। अपने कार्यकाल में आम जन के प्रति स्नेह, सद्‌भाव और संवेदना के साथ कर्तव्य के प्रति ईमानदारी और निष्ठा से आज भी जनता के राष्ट्रपति के रूप में स्मरणीय है।

डॉ. अब्दुल कलाम को राष्ट्रपति पद की जिम्मेदारी से निवृत्त होने के पश्चात् भी सुख सुविधा और आराम का जीवन व्यतीत करना पसंद नहीं आया। विजन 2020 के जरिए भारत को अन्तर्राष्ट्रीय जगत में समृद्ध और शक्तिशाली राष्ट्र के रुप में देखने की उत्कट लालसा थी। कलाम का मानना था उन्होंने विजन 2020 का जो सुनहरा स्वप्न संजो रखा है उसे साकार करने में युवा शक्ति पूरी तरह समर्थ है ।

इसलिए उन्होंने राष्ट्रपति भवन की चहार दीवारी से बाहर आने के बाद देशभर में प्रवास करना प्रारम्भ किया। विद्‌यालयों, महाविद्‌यालयों और प्रबंधन संस्थानों में वे अपने व्याख्यानों से ऐसी छाप छोड़ते थे कि मानो कक्षा में कोई पूर्व राष्ट्रपति नहीं, बल्कि एक कोई धीर गम्भीर शिक्षक व्याख्यान दे रहा हो, जिसके पास ज्ञान का अपार भंडार हो। वे युवाओं के लिए एक दैदीप्यमान प्रकाश स्तम्भ थे। उनके प्रेरणास्पद विचार सुनने वाले युवकों को डॉ. कलाम में एक सच्चे पथ प्रदर्शक के दर्शन भी होते थे।

डॉ. कलाम केवल व्याख्यान ही नहीं देते थे बल्कि छात्रों की जिज्ञासाओं को भी तत्काल शांत करने के लिए तत्पर रहते थे। उनकी एक अभिलाषा थी कि सदैव उन्हें एक अध्यापक के रूप में याद किया जाए और जिस विधाता ने उन्हें यशस्वी जीवन का वरदान देकर इस पावन भूमि पर भेजा था उस विधाता ने उनकी यह इच्छा भी पूर्ण की। इसे अद्‌भुत संयोग कहना ही उचित होगा कि 25 जुलाई 2015 को कलाम ने आई. आई. एम. शिलांग के छात्रों के समक्ष अपना व्याख्यान देते हुए ही इस संसार को अलविदा कह दिया।

डॉ. कलाम सच्चे अर्थो में कर्मयोगी थे। वे गीता के नियमित अध्येता थे। उन्होंने यह इच्छा व्यक्त की थी कि उनके निधन पर कोई अवकाश घोषित न किया जाए और लोग उस दिन अधिक काम करें। इसलिए पूर्व राष्ट्रपति के निधन पर कोई अवकाश घोषित नहीं किया गया। उनको हमारी श्रद्धांजलि तो यह होगी कि जिसका जो काम है उसमें वह समर्पित भाव से जुटा रहे। भारत सरकार ने नई दिल्ली में औरंगजेब रोड़ का नाम बदल कर डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम मार्ग कर दिया है। राजस्थान सरकार द्वारा डॉ. कलाम के जन्म दिवस को ' विद्‌यार्थी दिवस' के रूप में मनाया जा रहा है।

डॉ. कलाम आज हमारे बीच नहीं है, परंतु उनका प्रेरणादायी व्यक्तित्व एवं कृतित्व हमें हमेशा स्मरण दिलाता रहेगा कि संघर्षों में पला बढ़ा व्यक्ति भी अगर आगे बढ़कर कुछ कर दिखाने की ठान ले तो कठिन से कठिन बाधाएँ भी उसका रास्ता नहीं रोक सकती। इसलिए वे हमेशा युवकों से कहा करते थे कि ''हमेशा बड़े सपने देखो, छोटे सपने देखना अपराध है। जिन्दगी में वहीं स्वप्न साकार होते हैं जो खुली आँखों से देखे जाते हैं। ऐसे सपनों को पूरा करने के लिए मन में जुनून होना चाहिए और असफलता से कभी घबराना नहीं चाहिए क्योंकि असफलता तो सफलता की दिशा में पहला प्रयास है।''

शब्दार्थ

नैसर्गिक – प्राकृतिक, स्वाभाविक	नवोन्मेष– नया करने की इच्छा
दायित्व – जिम्मेदारी	निर्वहन– पूरा करना
स्मरणीय– याद रखे जाने योग्य	ठान लेना– संकल्प करना

अभ्यासार्थ–प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. डॉ. अब्दुल कलाम भारत के कौन से राष्ट्रपति थे ?

(क) बारहवें (ख) दसवें

(ग) ग्यारहवे (घ) तेरहवें

2. डॉ. कलाम ने स्वदेशी होवर क्राफ्ट का क्या नाम रखा था ?

(क) अग्नि (ख) त्रिशूल

(ग) पृथ्वी (घ) नन्दी

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

3. डॉ. अब्दुल कलाम का पूरा नाम क्या है ?
4. डॉ. कलाम ने बी.एससी. की शिक्षा किस संस्था से अर्जित की थी?
5. एस.एल.वी ने सफल उड़ान कब भरी?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

6. डॉ. अब्दुल कलाम को मिसाइल मैन क्यों कहते हैं?
7. डॉ. कलाम के वैज्ञानिक क्षेत्र में योगदान पर प्रकाश डालिए।
8. डॉ. कलाम ने 'विज़न 2020' को साकार करने के क्या प्रयास किए?

निबन्धात्मक प्रश्न

9. 'भारत रत्न कलाम' का जीवन विद्यार्थी जीवन के लिए किस प्रकार प्रेरक है? स्पष्ट कीजिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की उत्तरमाला

1. **ग**

2. **घ**

पद्य खण्ड

पाठ–1

कबीर

कवि परिचय

जन्म– 1398 ई.

मृत्यु– 1518 ई.

भक्ति की भावना को सामान्य जन की भाषा में अनुभव गम्य बनाने में सिद्ध हस्त भक्त प्रवर कबीर का जन्म काशी के समीप मगहर में बताया जाता है। इनका लालन–पालन एक जुलाहा परिवार में हुआ। कबीर अनपढ़ थे, किन्तु बहुश्रुत थे तथा उनका ज्ञान, अनुभव समृद्ध था। स्वामी रामानंद के उदार विचारों का भी इन पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा। कबीर के लिए कविता साध्य न होकर साधन थी। वे सहज अनुभूतियों को बड़े प्रभावशाली ढंग से जन मानस तक पहुँचाना जानते थे। कबीर की वाणी में सच्चे हृदय से स्वानुभव से कही गयी बात श्रोता के हृदय पटल पर अमिट प्रभाव छोड़ती है। कबीर सच्चे समाज सुधारक थे।

ठीक निशाने पर चोट करने की कला में कबीर अद्वितीय हैं। कठिन से कठिन विचार को भी वे बहुत सटीक उपमा, दृष्टान्त और अन्योक्ति द्वारा बड़े हृदय स्पर्शी ढंग से समझाते हैं। कबीर धार्मिक संकीर्णता को दूर करने वाले एक समाज सुधारक के रूप में हमारे समक्ष हैं। राम और रहीम की एकता के माध्यम से धार्मिक मतान्तरों से ऊपर मानवता की स्थापना का शंखनाद कबीर के काव्य से प्रारम्भ होता है। बाह्याचार, अन्धविश्वास और रूढ़ियों से मुक्त सामाजिक समरसता की स्थापना का सन्देश कबीर के काव्य में मिलता है।

रचनाएँ–

कबीर के अनपढ़ होने के कारण उनकी रचनाओं का संकलन शिष्यों द्वारा किया गया है, जिसमें सबसे प्रामाणिक 'बीजक' है।

पाठ परिचय–

संकलित साखियों एवं पदों के माध्यम से गुरु की महिमा, ईश्वर का स्वरूप, आत्मा–परमात्मा की ऐक्यता, धार्मिक आडम्बर का खण्डन, धार्मिक एकता, आचरण की पवित्रता आदि पर कबीर के विचारों की सरल व सहज अभिव्यक्ति है। इनमें जीवन को निष्कपटता से जीने, संसार की निस्सारता का उल्लेख, प्रेम की व्यापकता और आवश्यकता, जीवन को निष्कपट कर्म भाव से उच्चता की ओर ले जाने का सन्देश प्राप्त है।

इनके माध्यम से वर्तमान परिवेश प्रसूत भौतिकता के द्वन्द्व में भटक रहे मानव जीवन को सच्ची दिशा प्राप्त हो सकती है। कबीर के मानवतावादी और प्रासंगिक रूप का जीवन्त रूप से दिग्दर्शन संकलित पाठ के माध्यम से होता है। कबीर के भाषा पर अधिकार एवं बोधगम्य रूप का पर्याप्त परिचय प्राप्त होता है। काव्य रूप से भाषा के सधुक्कड़ी स्वरूप की प्रामाणिकता होती है।

कबीर

सतगुरू की महिमा अनन्त, अनन्त, किया उपगार ।
लोचन अनन्त उघाड़िया, अनन्त दिखावन हार ।।
भगति भजन हरि नाँव है, दूजा दुक्ख अपार ।
मनसा वाचा कर्मना, कबीर सुमिरन सार ।।
पोथि पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोई ।
ढाई आखर प्रेम का, पढै सो पंडित होई ।।
ऊँचे कुल क्या जनमियाँ, जे करणी ऊँच न होई।
सोवन–कलस सुरै भरया, साधौ नींद्या सोइ ।।
ऐसी बानी बोलिये, मन का आपा खोई।
औरन कूँ सीतल करै, आपै सीतल होई।।
कस्तूरी कुंडलि बसै, मृग ढूंढै बन मांहिं ।
ऐसै घटि घटि राम हैं, दुनिया देखै नाहिं ।।
निंदक नियरे राखिये, आँगन कुटी छवाय ।
बिन पानी साबन बिना, निरमल करै सुभाय ।

पद

मोको कहाँ ढूढे बंदे, मैं तो तेरे पास में,
ना मैं देवल ना मैं मसजिद ना काबे कैलास में,
ना तो कौने क्रिया–कर्म में, नहिं योग बैराग में ।
खोजी होय तो तुरतै मिलिहौ, पल भर की तलास में,
कहै कबीर सुनो भाई साधो, सब स्वाँसों की स्वाँस में ।।1

भाई रे! दुई जगदीश कहाँ ते आया, कहुँ कवने भरमया।
अल्लाह–राम करीमा केसो, हजरत नाम धराया ।
गहना एक कनक तें गढ़ना, इनि महँ भाव न दूजा।
कहन–सुनन को दुर करि पापिन, इक निमाज, इक पूजा।।
वही महादेव वही महंमद, ब्रह्मा–आदम कहिये ।
को हिन्दू को तुरुक कहावै, एक जिमीं पर रहिये।।
वेद कितेब पढ़े वे कुतुबा, वे मोलाना वे पाँडे ।
बेगरि–बेगरि नाम धराये, एक मटिया के माँडे।।
कहँहि कबीर वे दूनौ भूले, रामहिं किनहुँ न पाया।। 2

शब्दार्थ

उपगार– उपकृत,
लोचन–नेत्र
कुल– खानदान
नींद्या– निंदा करना,
सुमिरन–स्मरण,
मुआ–मर गया,
कनक– स्वर्ण
देवल– मन्दिर,
सुरै–शराब,
साधौ– सज्जन,
उघाड़िया– खोलना,
बदत– मानना,
बरिंया– इस बार,
पंडित – ज्ञानी, विद्वान,
आखर– अक्षर,

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. कबीर के मत से मीठे वचन क्यों बोलने चाहिए?
   (क) सुनने वाले प्रभावित होते हैं ।
   (ख) मन को शान्ति प्रदान करते हैं ।
   (ख) अहंकार दूर होता है।
   (घ) सम्मान प्राप्त करने के लिए ।
2. कबीर ने संसार के दुःखों से बचने का क्या उपाय बताया है?
   (क) मन्दिर–मस्जिद जाना (ख) दूसरों की निंदा करने को
   (ख) वेद कुरान पढ़ने को (घ) भगवान के नाम स्मरण को

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

3. कबीर के अनुसार गुरु ने क्या उपकार किया है?
4. कर्म की महिमा बताने कबीर ने क्या उदाहरण दिया है?
5. कबीर ने हिन्दू मुसलमान की क्या–क्या उपासना पद्धति बतायी है?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

6. ''ढाई आखर प्रेम का'' साखी के माध्यम से कबीर ने क्या सन्देश दिया है?
7. कबीर ने ''घटि –घटि राम'' को किस प्रकार समझाया है?

निबन्धात्मक प्रश्न

8. '' खोजी होय तो तुरतै मिलिहौ'' के आधार पर ईश्वर की अनुभूति के उपाय लिखिए।
9. कबीर ने ईश्वर के एकेश्वरवादी स्वरूप को किस प्रकार स्पष्ट किया है?
10. पठित अंश के आधार पर आधुनिक सन्दर्भ में कबीर की प्रासंगिकता किस प्रकार है ? समझाइए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की उत्तर माला

1. **ख**
2. **घ**

पाठ–2

सूरदास

IJK7HU

कवि परिचय

जन्म– 1478 ई.

मृत्यु– 1583 ई.

भक्ति काव्य परम्परा में कृष्णोपासक कवियों में अग्रगण्य महाकवि सूरदास का जन्म दिल्ली के निकट 'सीही' ग्राम में हुआ था। बचपन से ही विरक्त होकर सूरदास मथुरा के निकट गऊ घाट पर रहने लगे। वहीं महाप्रभु वल्लभाचार्य द्वारा इन्हें वल्लभ सम्प्रदाय में दीक्षित किया गया। महाप्रभु के पुत्र द्वारा स्थापित अष्टछाप में सूरदास को प्रमुख स्थान प्राप्त था। सूरदास के जन्मान्ध या बाद में अन्धे होने पर मतैक्य नहीं है। सूरदास ने वात्सल्य शृंगार और भक्ति विषयक काव्य रचना की है। वात्सल्य का जैसा चित्रण सूरदास ने किया है वैसा विश्व साहित्य में नहीं हुआ, कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी । इसलिए सूरदास को वात्सल्य सम्राट कहा जाता है।

सूर ने प्रेम और सौन्दर्य का प्रभावशाली वर्णन किया है। शृंगार के संयोग और वियोग का सर्वांग वर्णन सूर काव्य में उपलब्ध है। भक्त कवियों में सूरदास का बहुत ऊँचा स्थान है। सूर काव्य कला में मानवीय भावों का सहज रूप उस स्तर तक उठा है, जहाँ से वह लोक और परलोक प्रतिबिम्बित होता है। यह सूरदास की लोक प्रियता और महत्ता का ही प्रमाण है कि 'सूरदास' नाम किसी भी अन्धे भक्त गायक के लिए रूढ़ सा हो गया है। सूर सागर के पदों में अनेक रागिनियों का प्रयोग हुआ है। इसी कारण सूर के पद संगीतकारों में भी लोकप्रिय हैं।

कृतियाँ–

सूरसागर, साहित्य लहरी, सूर सारावली

पाठ परिचय

भक्त कवि सूरदास के 'सूर सागर' से संकलित इन पदों में श्रीकृष्ण की बाल लीला, बाल क्रीड़ा, माता का दुलार, गौ चारण आदि का स्वाभाविक चित्रण किया गया है। सूरदास के अन्धे होने के बावजूद इन पदों में सजीव से वर्णन उनके अन्तर्चक्षु की दिव्य दृष्टि का आभास होता है। माता जसोदा द्वारा श्रीकृष्ण की बाल लीला का आनन्द उठाते हुए, सुलाने की क्रिया एवं हावभाव की शाब्दिक अभिव्यंजना और अपनी प्रति छाया को पकड़ते हुए बालकृष्ण, गौ चरण के समय साथियों के उलाहने से व्यथित हो, गौ चारण से मना करने का सूरदास ने पूर्ण मनोयोग से वर्णन किया है। इन पदों से सूरदास की श्री कृष्ण के प्रति आत्मीयता का प्रत्यक्ष आभास होता है।

जसोदा हरि पालनें झुलावैं ।।
हलरावै, दुलरावै, मल्हावै, जोइ–सोइ कछु गावै ।।
मेरे लाल को आउ निंदरिया, काहे न आनि सुलावै ।
तू काहे न बेगि सी आवै, तोको कान्ह बुलावै ।
कबहुँ पलह हरि मूँदि लेत ह्वै। कबहुँ अधर फरकावै ।।
सोवत जानि मौन ह्वै रहि रहि,करि करि सैन बतावै ।।
इहि अंतर अकुलाइ उठे हरि, जसुमति मधुरै गावै ।
जो सुख सूर अमर मुनि दुर्लभ, सो नँद भामिनि पावै ।

किलकत कान्ह घुटुरूवनि आवत ।
मनिमय कनक नंद कैं आँगन, बिंब पकरिबे, धावत ।
कबहु निरखि आपु छाँह को, पकरन को चित्त चाहत ।
किलक हँसत राजत द्वै दतियाँ, पुनि–पुनि तिहिं अवगाहत ।
कनक–भूमि पर, कर–पग छाया, यह उपमा इक राजत ।
प्रति–करि प्रति पद प्रति मनि बसुधा, कमल बैठकी साजत ।
बाल–दसा–सुख निरखि जसोदा, पुनि–पुनि नन्द बुलावत ।
अँचरा तर लै ढाँकि, 'सूर' के प्रभु जननी दूध पियावति ।

मैया हौं न चरैंहों गाइ ।
सिगरे ग्वाल घिरावत मोसौं, मेरे पाइ पिराइ ।
जौ न पत्याहि पूछि बलदाउहिं, अपनी सौंह दिवाइ ।
यह सुनि माइ जसोदा ग्वालनि, गारी देति रिसाइ ।
मै पठवति अपने लरिका कौ, आवै मन बहराइ।
सूर स्याम मेरौ अति बालक, मारत ताहि रिगाइ ।

शब्दार्थ–

किलकत–किलकारी का स्वर, हलरावै–हिलाती,
सिगरे–सब, मनिमय– मणि जड़ित,
मल्हावै– झुलाती, घिरावत– इकट्ठा कराना,
कनक–सोना, बेगहि–शीघ्र,
बिराई–दर्द होना, धावत–दौड़ते ,
कबहु–कभी, पत्याहि– विश्वास,

रजत–चाँदी जैसी,	सैन–इशारा,
सौंह–सौगंध,	अवगाहत–देखते हुए,
बसुधा– धरती,	भामिनी–स्त्री,
घुटुरूवनि–घुटनों के बल चलना,	निरखि– देखकर ।

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. बालकृष्ण किसे पकड़ने घुटनों पर चल उत्तेजित हो रहे हैं?

   क) खिलौने ख) माखन

   ग) परछाई घ) घुंघरू

2. श्री कृष्ण गाय चराने के लिए मना क्यों कर रहे हैं?

   क) बलराम उनको चिढ़ाते हैं।

   ख) गायें सम्भलती नहीं हैं।

   ग) चारा नहीं मिल रहा है।

   घ) मित्रों की गायें भी सम्भालनी पड़ती हैं।

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

3. कृष्ण की बाल क्रीड़ा को देख यशोदा क्या करती है?
4. गाये चराने से इनकार करने का कारण जानने पर जसोदा क्या कहती है?
5. 'करि–करि सैन बतावै' इस पंक्ति से माता जसोदा का कौन सा मनोभाव अभिव्यंजित हुआ है?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

6. 'बाल दशा सुख निरखि जसोदा' पंक्ति के आधार पर बताइए कि जसोदा ने बाल कृष्ण की कौन–कौन सी दशाएँ देखी हैं ?
7. 'जो सुख सुर अमर मुनि दुर्लभ सौ नन्द भामिनी पावै' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।
8. कृष्ण को नींद आ जाए, इसलिए जशोदा क्या–क्या यत्न करती है ?
9. 'अपनी सौह दिवाई' पंक्ति से श्रीकृष्ण का कौन सा भाव अभिव्यक्त हो रहा है?

निबन्धात्मक प्रश्न

10. पठित अंश के आधार पर सूर के बाल वर्णन को रेखांकित कीजिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की उत्तर माला

1. ग

2. घ

•••

पाठ–3

तुलसीदास

कवि परिचय

IJU3YH

जन्म – 1532 ई.

मृत्यु – 1623 ई.

रामभक्ति काव्य के अमर दीप तुलसीदास का जन्म उत्तर प्रदेश के राजापुर में हुआ माना जाता है। प्रारम्भिक अवस्था में माता–पिता से बिछुड़ने के कारण इनका जीवन अत्यन्त संघर्षमय रहा है। बाबा नरहरिदास को तुलसीदास का गुरू अन्तः साक्ष्य के आधार पर माना जाता है। तुलसी भगवान श्रीराम के प्रति सर्वस्व समर्पण कर काव्य रचना करते थे। उनकी भक्ति भावना का मूल उत्स लोक संग्रह एवं लोक मंगल की भावना है। तुलसी में समन्वय की विराट चेष्टा और अद्‌भुत शक्ति थी, सनातन हिन्दू धर्म के भिन्न–भिन्न सम्प्रदायों के पारस्परिक विद्वेष को कम करने का उन्होंने अथक प्रयत्न किया।

तुलसीदास ने रामभक्ति से प्रेरित होकर अपने रामकथा ग्रन्थों में राम तथा उनके भक्तों का जो चरित्र प्रस्तुत किया है, वह मानवता के सर्वोच्च आदर्शों की स्थापना करता है। इस सम्बन्ध में 'रामचरित मानस' अद्वितीय रचना है। तुलसीदास ने प्रबन्ध और मुक्तक दोनों प्रकार के काव्य अवधी एवं ब्रजभाषा में स्वाभाविक रूप से सृजित कर काव्य रचना में सिद्धहस्तता को प्रत्यक्ष किया है। तुलसी का सम्पूर्ण काव्य उन्हें भारत वर्ष का लोक नायक प्रतिष्ठित कर आधुनिक युग की प्रत्येक समस्या का समाधान उपलब्ध कराता है।

कृतियाँ–

रामचरितमानस, रामलला नहछू, जानकी मंगल, पार्वती मंगल, बरवै रामायण, रामाज्ञा प्रश्नावली, वैराग्य संदीपनी। (अवधी भाषा) विनय पत्रिका, कवितावली, दोहावली, गीतावली, कृष्ण–गीतावली (ब्रजभाषा)

पाठ परिचय–

संकलित काव्यांश 'रामचरित मानस' से लिया गया है। रामचरित मानस के सुन्दर प्रसंग के माध्यम से तुलसीदास ने केवट का श्रीराम के प्रति अगाध विश्वास तथा श्री राम का भक्त के प्रति अनन्य प्रेम उद्‌घाटित किया है। आजीविका के एकमात्र साधन नाव को बचाने के बहाने से चरण धोने का सौभाग्य प्राप्त करना केवट की भक्ति और दृढ़ता का परिचय कराते हैं।

वहीं श्रीराम का केवट को इच्छा के अनुरूप चरण पखारन कर नाव उतारने को कहना, मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की विनम्रता का उद्‌घोष करता है। इस सम्पूर्ण प्रसंग के माध्यम से तुलसीदास श्रीराम के सर्व जन के प्रति सहृदयता और संवेदन शीलता को प्रमाणित करते हैं। तुलसी के इस प्रसंग से विविध छन्दों का प्रयोग एवं उद्धरण ज्ञात होते हैं।

केवट का भाग्य

चौपाई– बरबस राम सुमंत्रु पठाए । सुरसरि तीर आपु तब आए ।।
मागी नाव न केवटु आना । कहइ तुम्हार मरमु मैं जाना ।।
चरन कमल रज कहुँ सब कहई । मानुष करनि मूरि कछु अहई ।।
छुअत सिला भइ नारि सुहाई । पाहन तें न काठ कठिनाई ।।
तरनिउ मुनि–घरिनी होई जाई । बाट परइ मोरि नाव उड़ाई ।।
एहिं प्रतिपालउँ सबु परिवारू । नहिं जानउँ कटु अउर कबारू ।।
जौं प्रभु पार अवसि गा चहहू । मोहि पद पदुम पखारन कहहू ।।
छंद– पद कमल धोइ चढ़ाइ नाव न नाथ उतराई चहौं ।
मोहि राम राउरि आन दसरथ सपथ सब साँची कहौं ।
बरू तीर मारहुँ लखनु पै जब लगि न पाय पखारिहौं ।
तब लगि न तुलसीदास नाथ कृपालु पारू उतारिहौं ।।
सोरठा –सुनि केवट के बैन प्रेम लपेटे अटपटे ।
बिहसे करूनाऐन, चितइ जानकी लखन तन ।।
चौपाई–कृपासिन्धु बोले मुसुकाई । सोइ करू जेहिं तव नाव न जाई ।।
बेगि आनु जल पाय पखारू । होत बिलंबु उतारहि पारू ।।
जासु नाम सुमिरत एक बारा । उतरहिं नर भवसिंधु अपारा ।।
सोइ कृपालु केवटहि निहोरा । जेहिं जगु किय तिहु पगहु ते थोरा ।।
पद नख निरखि देवसरि हरषी । सुनि प्रभु बचन मोहँ मति करषी।।
केवट राम रजायसु पावा । पानि कठवता भरि लेइ आवा ।।
अति आनन्द उमगि अनुरागा । चरन सरोज पखारन लागा ।।
बरषि सुमन सुर सकल सिहाहीं। एहि सम पुन्यपुंज कोउ नाहीं ।।
दोहा – पद पखारि जलु पान करि आपु सहित परिवार ।।
पितर पारू करि प्रभुहि पुनि मुदित गयउ लेइ पार ।।
चौपाई–उतरि ठाढ़ भये सुरसरि रेता । सीय रामु गुह लखन समेता ।।
केवट उतरि दंडवत कीन्हा । प्रभुहि सकुच एहि नहिं कछु दीन्हा ।।
पिय हिय की सिय जाननिहारी । मनि मुदरी मन मुदित उतारी ।।
कहेउ कृपाल लेहि उतराई । केवट चरन गहे अकुलाई ।।
नाथ आजु मैं काह न पावा । मिटे दोष दुख दारिद दावा ।।
बहुत काल मैं कीन्हि मजूरी । आजु दीन्ह बिधि बनि भलि भूरी ।।
अब कुछ नाथ न चाहिअ मोरें । दीनदयाल अनुग्रह तोरें ।।
फिरती बार मोहि जो देबा । सो प्रसादु मैं सिर धरि लेबा ।।

दोहा—बहुत कीन्हीं प्रभु, लखन सियँ, नहिं कछु केवटु लेइ
विदा कीन्ह करुनायतन, भगति बिमल बरु देइ ।।

शब्दार्थ—

सुरसरि—गंगा,	पद्म—कमल,
बेगि—शीघ्र,	तीर—किनारे, तट पर,
भव सिंधु—संसार,	रज—धूल कण,
पखारि—धोकर,	सिला— पत्थर,
मुदित—प्रसन्न,	काठ—लकड़ी,
अकुलाई—व्याकुल,	प्रतिपालक— पालन पोषण,
मुदरी—मुद्रिका ।	

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. श्री राम के स्पर्श से शिला से नारी बनने वाली स्त्री का नाम क्या था?
   क) सावित्री   ख) अहल्या
   ग) शबरी   घ) गौतमी
2. पठित काव्यांश किस काव्य ग्रन्थ से उद्धृत है?
   क) रामचरित मानस   ख) कवितावली
   ग) विनय पत्रिका   घ) दोहावली

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

3. केवट ने नाव में बैठाने की श्रीराम के समक्ष क्या शर्त रखी ?
4. 'सोइ करु जेहिं तव नाव न जाई' पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।
5. 'एहि सम पुन्यपुंज कोउ नाहीं' में किस 'पुन्यपुंज' का उल्लेख किया गया है?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

6. 'तरनिउ मुनि घरिनी होइ जाई' की अन्तर्कथा लिखिए ।
7. 'अब कुछ नाथ न चाहिअ मोरें 'केवट ने श्रीराम को गंगा पार उतार कर क्या प्राप्त कर लिया था कि उसे कुछ चाहत नहीं थी?
8. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची लिखिए—
   सुर, सुमन, नारी, तीर, नाव ।

निबन्धात्मक प्रश्न

9. भावार्थ लिखिए–

    क) सुनि केवट........................लखन तन।

    ख) एहि प्रतिपालऊ...कहहू।।

10. इस काव्यांश के आधार पर श्रीराम–केवट प्रसंग को कथा के रूप में लिखिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की उत्तर माला

1. **ख**

2. **क**

IK3Z15

पाठ–4

बिहारी

कवि परिचय

जन्म– 1595 ई.

मृत्यु– 1663 ई.

हिन्दी की रीति काव्यधारा के अन्तर्गत उसकी भाव–धारा को आत्मसात् करके भी प्रत्यक्षतः आचार्यत्व न स्वीकार करने वाले मुक्त कवि बिहारी का जन्म ग्वालियर में हुआ था। ये अनेक राजाओं के आश्रय में रहे तथा उनसे वृत्ति प्राप्त करते थे। जयपुराधीश महाराजा जयसिंह के विशेष कृपापात्र थे। जिनसे इन्हें पर्याप्त पुरस्कार तथा काली पहाड़ी गाँव की जागीर प्राप्त हुई थी।

दोहा छन्द की लघु काव्य गागर में अर्थ गाम्भीर्य का सागर भर देने वाले बिहारी बहुज्ञ थे। इन्हें लोक ज्ञान, शास्त्र ज्ञान, रीति, श्रृंगार, प्रेम ज्योतिष, भक्ति, नीति सम्बन्धी कई व्यावहारिक तथ्यों की अनुभूति थी । हिन्दी में समास पद्धति की शक्ति का परिचय सबसे अधिक बिहारी ने दिया है। बिहारी प्रतिभा सम्पन्न थे, पर प्रतिभा का उपयोग चमत्कार और अनुभूति दोनों के लिए किया। अलंकार के उदाहरणों के रूप रचना न करके भी अलंकार की काव्योपयोगिता पर बराबर दृष्टि रखी है। इन्होंने केवल शुष्क कथन द्वारा नीति की युक्ति नहीं बाँधी, अपितु बराबर किसी ऐसे दृष्टान्त या युक्ति से काम लिया, जो उस तथ्य की सार्थकता प्रमाणित करने में सहायक हो । परवर्ती साहित्य में सतसई परम्परा का प्रसार और बिहारी सतसई पर लिखी टीकाएँ बिहारी काव्य कला की पुष्टता को प्रमाणित करते हैं।

कृतियाँ

सतसैया' जो 'बिहारी सतसई' के नाम से संकलित हो प्रचलित है।

पाठ परिचय

प्रस्तुत संकलन में बिहारी के नीति और भक्ति सम्बन्धी दोहे हैं। नीति के दोहों में जीवन का आदर्श प्रस्तुत किया गया है। इनमें जीवन की उपयोगिता की महत्ता, परोपकार, नाम से अधिक गुण का वैशिष्ट्य, अहंकार से बचाव, प्राकृतिक स्वभाव की अपरिवर्तनीयता, सुख–दुःख में समरसता, विनम्रता, व्यर्थ की प्रशंसा से बचाव, सम्पत्ति का दुष्प्रभाव, दुष्टों का आदर, समय का बदलाव आदि का ज्ञान सूक्ष्मता, सरलता और सहजता से मिलता है।

बिहारी की विशेषता है कि वह अपनी बात को स्पष्ट करने के साथ प्रामाणिक बनाने के लिए उद्धरण या दृष्टान्त का प्रयोग करते हैं, जिससे वह दोहा जीवन्त हो जाता है। उनके भक्ति सम्बन्धी दोहों में कवि ने मतवाद का खण्डन करते हुए सच्चे मन से ईश्वर का भजन करने के लिए कहा है। बिहारी के दोहों में भाव–पूर्णता, संक्षिप्तता, अनुभूति की गहनता आदि विशेषताएँ विद्यमान हैं। इनकी शैली में मौलिकता भावों की अनूठी अभिव्यक्ति, भाषा की अर्थ गम्भीरता एवं चित्रांकन क्षमता अवलोकनीय है।

बिहारी

अति अगाधु अति औथरौ, नदी कूप सर बाय ।
सो ताकौ सागरू जहाँ, जाकी प्यास बुझाय ।।1।।
स्वारथु सुकृतु न श्रमु वृथा, देखि बिहंग बिचारि ।
बाज पराएँ पानि परि, तूँ पंच्छीनु न मारि ।।2।।
कनक कनक तैं सौगुनौ, मादकता अधिकाय ।
वा खाए बौरातु है, इह पाए बौराय ।।3।।
कहलाने एकत बसत, अहि मयूर मृग बाघ ।
जगत तपोवन सौ कियो, दीरघ दाघ निदाघ ।।4।।
कौटि जतन कोऊ करौ, परै न प्रकृतिहि बीच ।
नल–बल जलु ऊँचों चढ़ै, तऊ नीच को नीच ।।5।।
गुनी–गुनी सबकैं कहैं, निगुनी गुनी न होतु ।
सुन्यौं कहूँ तरु अरक तै, अरक समान उदोतु ।।6।।
दीरघ साँस न लेई दुख, सुख साई नहिं भूलि ।
दई–दई क्यौं करत है दई दई सु कबूलि ।।7।।
नर की अरु नल–नीर की, गति एकै करि जोय ।
जेतौ नीचो ह्वै चलै, ते तौ ऊँचौ होय ।।8।।
बड़े न हूजै गुननु बिनु बिरद बड़ाई पाय ।
कहत धतूरे सौं कनकु गहनौ गढ़यौ न जाय ।।9।।
बढ़त–बढ़त संपति सलिलु, मन–सरोज बढ़ि जाय ।
घटत–घटत सु न फिरि घटै, बरु समूल कुम्हिलाय ।।10।।
बसै बुराई जासु तन, ताही कौ सनमानु ।
भलौ–भलौ काहि छोड़ियै, खोटैं ग्रह जपु, दानु ।।11।।
मरत प्यास पिंजरा–परयौ, सुवा समय कै फैर ।
आदर दे दे बोलियत, बायस बलि की बैर ।।12।।
सीस मुकुट, कटि–काछनी, कर–मुरली, उर–माल ।
इहिं बाविक मो मन सदा बसौ बिहारी लाल ।।13।।
मेरी भव–बाधा हरौ राधा नागरि सोय
जा तन की झाईं परै श्याम हरित दुति होय ।।14।।
मोहन मूरति स्याम की अति अद्भुत गति जौय ।
बसति सु चित–अंतर तऊ प्रतिबिंबित जग हौय ।।15।।

शब्दार्थ–

अगाध–गहरा,	कनक–सोना, धतूरा,
विरद–पदवी,	औथरा–उथला,
अहि–सर्प,	सुवा–तोता,
सर–सरोवर,	निगुनी–गुणहीन,
बायस–कौआ,	बाय–बावड़ी,
अरक– सूर्य,	आकड़े का पौधा,
बाविक–स्वरूप,	सुकृत–सद् कर्म,
विहग– पक्षी,	दई–दई– ईश्वर, दिया हुआ ।

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. बिहारी के अनुसार संसार किसे प्राप्त कर मदमस्त हो जाता है?
   - क) धतूरे को ख) शराब को
   - ग) स्वर्ण को घ) सम्मान को
2. नल, नीर और नर की समानता से बिहारी ने क्या सन्देश दिया है ?
   - क) समान गति से चलना ख) विनम्र बनना
   - ग) नीचे ही रहना घ) धीरज रखना

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

3. 'खोटैं ग्रह जपदान' पंक्ति से बिहारी ने किस मनोभाव को प्रकट किया है?
4. श्री कृष्ण के किस रूप को कवि अपने मन में बसाना चाहता है?
5. संसार को तपोवन क्यों कहा गया है?
6. बिहारी प्रकृतिगत स्वभाव को अपरिवर्तनशील क्यों मानते हैं??

लघूत्तरात्मक प्रश्न

7. निम्न पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए–
   - क) वा खाए बौरातु हैं, इहिं पाए बौराय।
   - ख) सुन्यौ कहूँ तरु अरक तै, अरक समानु उदोतु।
   - ग) सौ तोको सागरू जहाँ, जाकी प्यास बुझाय।
   - घ) बढ़त बढ़त सम्पति सलिलु, मन–सरोज बढ़ि जाय।
8. निम्न की व्याख्या कीजिए–
   - क) दीरघ साँस न लेई दुख..सु कबूलि।
   - ख) अति अगाधु.. प्यास बुझाय।

9. निम्न शब्दों के अर्थ स्पष्ट कीजिए –

कनक–कनक, दई–दई, अरक–अरक.

निबन्धात्मक प्रश्न

10 बिहारी ने नीति सम्बन्धी संकलित दोहों में जीवन के किन–किन आदर्शों को प्राप्त करने के लिए लिखा है ? विभिन्न उदाहरणों का उल्लेख कीजिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की उत्तरमाला

1 – (ग)

2 – (ख)

पाठ –5

मीराँबाई

IKCV2S

कवयित्री परिचय

जन्म– 1498 ई.

मृत्यु– 1564 ई.

मरु–मन्दाकिनी मीराँबाई भक्तिकालीन कृष्ण भक्ति शाखा की सहज, सरस, विरह–वेदना की अमर गायिका एवं साधिका हैं। मीराँ का जन्म मेड़ता के कुड़की नामक ग्राम में हुआ था। मीराँ का विवाह मेवाड़ के महाराणा सांगा के कुँवर भोजराज के साथ हुआ, जिनका अल्पायु में ही देहान्त हो गया। वैधव्य काल में मीराँ ने अपना सम्पूर्ण जीवन कृष्णार्पित कर दिया।

उनका अधिकांश समय सत्संग और भजन में व्यतीत होना राज–कुल मर्यादाओं के प्रतिकूल अनुभव कर मेवाड़ के राणा विक्रमादित्य द्वारा मीराँ की जीवन लीला समाप्त करने के प्रयास के अन्तःसाक्ष्य मिलते हैं। भौतिक जीवन से विरक्त हो मीराँबाई राजघर छोड़कर वृन्दावन चली गयीं। वहाँ से द्वारका जाकर अन्ततः वहीं कृष्ण भक्ति में तल्लीन रहीं। मीराँ बाई की भक्ति दैन्य और माधुर्य भाव की है। इनका काव्य जीवन की सहज अभिव्यक्ति है। वे श्रीकृष्ण के प्रति एकनिष्ठ प्रेम से अभिभूत हो अपनी अभिव्यंजना श्री कृष्ण को समर्पित करती हैं। उनके पदों में प्रेम की पीर, आत्म निवेदन, आत्म समर्पण और विरह वेदना की तीव्रतम अनुभूति की गहराई सर्वत्र दृष्टिगत होती है। उनकी भाषा का मूल रूप राजस्थानी है। उसमें ब्रज, गुजराती, अवधी तथा खड़ी बोली की शब्दावली का रसमय सम्मिश्रण है।

कृतियाँ

नरसी जी रो मायरो, गीत गोविन्द की टीका, रासगोविन्द, मीराँबाई का मलार, राग विहाग,

पाठ परिचय

अपने आराध्य के प्रति सर्वस्व समर्पण का स्वर मीराँ के पदों से अभिव्यक्त होता है। संकलित काव्यांश में मीराँ के श्री कृष्ण के प्रति भक्तिभाव का चित्रण तो मिलता ही है, उसके साथ ही अपनी सांसारिक यात्रा में मीराँ को जो अनुभव हुआ है, उसका आभास भी होता है। मीराँ बाई ने भक्ति रूपी पूँजी की महत्ता बताते हुए उसे अक्षय सम्पत्ति कहा है, जिसे न चोरी किया जाए, नहीं खर्च करने पर कम होने की चिन्ता रहती है।

कृष्ण के मुरलीधर रूप को ही अपना अराध्य मान, वही छवि अपने मानस में स्थिर करना चाहती है। मीराँ ने माधुर्य भाव प्रधान भक्ति भाव से सरल, सुबोध भाषा में विभिन्न पौराणिक प्रसंगों के माध्यम से आत्म निवेदन किया है। संकलित पाठ्यांश मीराँ की भक्ति के प्रमुख आधार को सजीव करता है।

मीराँ

पायो जी मैंने राम रतन धन पायौ ।
बसतु, अमोलक दी मेरे सतगुरु, करि किरपा अपनायौ
जनम जनम की पूँजी पाई, जग में सबै खोवायौ ।।
खरचै नहिं कोई चोर न लेवैं, दिन–दिन बढ़त सवायौ ।
सत की नाँव खेवटिया सतगुरु, भवसागर तरि आयौ ।
मीराँ के प्रभु गिरिधर नागर, हरषि हरषि जस गायो ।

बसो मोरे नैनन में नंदलाल ।
मोहनि मूरति, सांवरि सूरति नैना बने बिसाल ।
मोर मुकुट मकराकृत कुंडल, अरुण तिलक सोहे भाल ।
अधर सुधा रस मुरली राजति उर वैजन्ती माल ।
छुद्र–घंटिका कटि–तट सोभित, नूपुर सबद रसाल ।
मीराँ प्रभु संतन सुखदायी, भगत बछल गोपाल।।

करम गति टारे नाहिं टरै ।
सत–वादी हरिचंद से राजा, नीच घर नीर भरै ।
पाँच पाडुं अर सती द्रोपदी, हाड़ हिमालै गरै ।
जग्य कियौ बलि लेण इन्द्रासण, सो पाताल धरै ।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, विख से अमृत करै ।

शब्दार्थ–

अमोलक–अमूल्य, सवायो–अधिक,
रसाल–मीठा स्वादिष्ट, नैना – नेत्र ।
खेवटिया–नाव चलाने वाला, करम गति–भाग्य की गति,
भव सागर–संसार सागर, हाड़–शरीर,
अधर–होंठ, विष–जहर,
सुधा–अमृत, मोहनि–सुन्दर,
वैजन्ती माल–पाँच रंगों के फूलों वाली लम्बी माला,

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. मीराँ ने भव सागर पार करने के लिए किसे अपना खेवट माना है?

   क) सतगुरु को ख) श्री कृष्ण को

   ग) श्री राम को घ) स्वयं को

2. मीराँ अपने नेत्रों में किसे बसाना चाहती है?

   क) वसुदेव को ख) श्री कृष्ण को

   ग) नन्द लाल को घ) योगेश्वर को

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

3. इन्द्रासन प्राप्त करने के लिए किसने यज्ञ किया था?
4. मीराँ ने 'अमोलक' वस्तु किसे कहा है?
5. मीराँ को जहर देकर किसने मारने का प्रयास किया?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

6. मीराँ ने 'रामरतन धन' की क्या–क्या विशेषताएँ बतायी हैं?
7. मीराँ कृष्ण के किस रूप को अपनी आँखों में बसाना चाहती है?
8. 'करम गति टारै नाहिं टरै' पद की अन्तर्कथाएं स्पष्ट कीजिए।
9. 'खरचै नहिं कोई चोर न लेवैं' पंक्ति को स्पष्ट कीजिए।

निबन्धात्मक प्रश्न

10. निम्न की व्याख्या कीजिए–

    क) पायो जी मैंने .... जस गायो।

    ख) मोहनि मूरति .... बछल गोपाल।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की उत्तरमाला

1. (क)
2. (ग)

पाठ–6
रहीम

कवि परिचय

जन्म – 1553
मृत्यु– 1626

IKLR4F

रहीम का पुरा नाम अब्दुल रहीम खानखाना था। इनके पिता का नाम बैरम खान तथा माता का नाम सुल्ताना बेगम था। बैरम खान मुगल बादशाह अकबर के संरक्षक थे। रहीम को वीरता, राजनीति, राज्य–संचालन, दानशीलता तथा काव्य रचना जैसे अद्भुत गुण अपने माता–पिता से विरासत में मिले थे। बचपन से ही रहीम साहित्य प्रेमी और बुद्धिमान थे। में बैरम खान की मृत्यु के बाद अकबर ने रहीम की बुद्धिमता को परखते हुए उनकी शिक्षा–दीक्षा का पूर्ण प्रबंध अपने जिम्मे ले लिया। अकबर, रहीम से इतना प्रभावित हुए कि शहजादों को प्रदान की जाने वाली उपाधि 'मिर्जा खान' से रहीम को सम्बोधित करने लगे।

रहीम का व्यक्तित्व बहुत प्रभावशाली था। वे मुसलमान होकर भी कृष्ण भक्त थे। रहीम ने अपने काव्य में रामायण, महाभारत, पुराण तथा गीता जैसे ग्रंथों के कथानकों को लिया है। इन्होंने स्वयं को 'रहिमन' कहकर भी सम्बोधित किया है। इनके काव्य में नीति, भक्ति, प्रेम और शृंगार का सुन्दर समावेश मिलता है। रहीम ने अपने अनुभवों को सरल शैली में अभिव्यक्त किया है।

कृतियाँ

रहीम के ग्रन्थों में रहीम दोहावली या सतसई, बरवै, मदनाष्टक, रास पंचाध्यायी, नगर शोभा ,खेट कौतुक जातकम्, नायिका भेद, शृंगार सोरठा, फुटकर कवित्त, सवैये, संस्कृत काव्य प्रसिद्ध हैं।

पाठ परिचय

संकलित काव्यांश में रहीम के बरवै एवं दोहों के माध्यम से भक्ति एवं नीति की भावना अभिव्यक्त की गई है। इसमे ईश्वर के रूप में प्राकृतिक शक्तियों की महत्ता तथा मनुष्य जीवन की उपयोगिता को रेखांकित किया गया है। रहीम ने परोपकार, आत्मसमर्पण एवं गरीब–असहाय जन के प्रति के अनुराग रखने का संदेश देते हुए, मानव जीवन की सार्थकता के लिए सदमार्ग पर चलने का संदेश दिया है।

बरवै

बन्दौ बिघन–बिनासन, ऋधि–सिधि–ईस।
निर्मल बुद्धि–प्रकासन, सिसु ससि सीस।। 1।।
भजहु चराचर–नायक, सूरज देव।
दीन जनन सुखदायक, तारन एव।। 2।।

ध्यावौं विपद–विदारन सुअन–समीर।
खल दानव वनजारन प्रिय रघुबीर ।।3।।
उधो भलो न कहनौ, कछु पर पूठि।
सांचे ते भे झूठे, साँची झूठि।।4।।
ज्यों चौरासी लख में, मानुष देह।
त्यों ही दुर्लभ जग में, सहज सनेह।।5।।

दोहे

कौन बड़ाई जलधि मिलि, गंग नाम भो धीम।
केहि की प्रभुता नहिं घटी पर, घर गए रहीम।।1।।
जे गरीब पर हित करैं, ते रहीम बड़ लोग।
कहा सुदामा बापुरो, कृष्ण मिताई जोग।।2।।
अब रहीम मुश्किल पड़ी, गाढ़े दोउ काम।
साँचे से तो जग नहिं, झूठे मिलैं न राम।।3।।
देनहार कोउ और है, भेजत सो दिन रैन।
लोग भरम हम पै धरैं, याते नीचे नैन।।4।।
तरुवर फल नहीं खात है, सरवर पियहिं न पान।
कहि रहिम परकाज हित, संपति सँचहि सुजान।।5।।

शब्दार्थ

बन्दौ–वंदना करना	विपद–विदारन– दुःख दूर करने वाला
पूठि–पीठ पीछे	धीम–धारण करना
केहि –किसकी	बापुरो–बेचारा
मिताई–मित्रता	जोग–योग्य
देनहार–देने वाला	याते–इससे इस कारण

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1 रहीम को अकबर ने कौनसी उपाधि प्रदान की थी ?

(क) मीर (ख) सूबेदार
(ग) मिर्ज़ा खान (घ) रहीम खान

2 मुसलमान होकर भी रहीम किसकी भक्ति करते थे ?

(क) अल्लाह की (ख) ईसामसीह की
(ग) राम की (घ) कृष्ण की

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

3. रहीम ने 'विघ्न विनासन' किसे कहा है?
4. मनुष्य जन्म कब मिलता है?
5. रहीम ने बड़ा व्यक्ति किसे माना है?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

6. रहीम ने काव्य में किन किन भाषाओं का प्रयोग किया है ?
7. पेड़ और तालाब के माध्यम से रहीम क्या सीख देते हैं ?
8. 'उधो भलो न कहनौ, कछु पर पूठि' बरवै से रहीम का आशय क्या है ?
9. रहीम ने सूरज को चराचर नायक क्यों कहा है ?

निबन्धात्मक प्रश्न–

10. 'ज्यों चौरासी लख में, मानुष देह' रहीम की इस पंक्ति का आशय क्या है?
11. 'कृष्ण मिताई जोग' के आधार पर सुदामा–कृष्ण की मित्रता को विस्तार से समझाइए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की उत्तर माला

(1) ग

(2) घ

पाठ–7

अभिलाषा

माखनलाल चतुर्वेदी

कवि परिचय

IKVH63

जन्म– 1889

मृत्यु–1968

राष्ट्रीय धारा के कवियों में माखनलाल चतुर्वेदी एक 'भारतीय आत्मा' की संज्ञा से अभिहित हैं। उनका जन्म मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले के बाबई नामक स्थान पर हुआ था। प्रभा और कर्मवीर जैसे प्रतिष्ठित पत्रों के संपादक के रूप में उन्होंने ब्रिटिश शासन के खिलाफ जोरदार प्रचार किया और नई पीढ़ी का आह्वान किया कि वह गुलामी की जंजीरों को तोड़कर बाहर आए।

प्रकृति और देश प्रेम का सम्मिश्रण आपकी रचनाओं की प्रमुख विशेषता है। त्याग और बलिदान की भावना से वे मातृभूमि को अलंकृत करने के पक्षधर थे। चतुर्वेदी के काव्य में कहीं करुणा की दर्दभरी पुकार मुखर है, तो कहीं पौरुष की हुंकार, तो कहीं ज्वालामुखी का धधकता स्वर सुनायी पड़ता है।

कृतियाँ

हिमकिरीटनी, हिमतरंगिनी, युगचरण, समर्पण, वेणुलो गूँजे धरा, मरणज्वार(काव्य) कृष्णार्जुन युद्ध, साहित्य के देवता, समय के पाँव, अमीर इरादे : गरीब इरादे (गद्य)

चतुर्वेदी की हिमतरंगिनी को प्रथम साहित्य अकादमी पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया तथा भारत सरकार ने 1963 में पद्मभूषण उपाधि से अलंकृत किया ।

पाठ परिचय

इस पाठ में कवि पुष्प एवं पर्वत के माध्यम से राष्ट्र प्रेम और परोपकार की महत्ता को प्रतिष्ठित करता है। पुष्प के द्वारा देश की रक्षार्थ तत्पर सैनिकों के पैरों से कुचलने को देवताओं के सिर पर चढ़ने से अधिक सौभाग्यशाली मानना, वीरों के प्रति सच्ची श्रद्धा का भाव उत्पन्न करता है। वहीं पर्वत की अभिलाषा में मातृभूमि को हरा–भरा करने को मणि–माणक प्रकटाने से ज्यादा महनीय बताना, पाठक के मन में परोपकारी जीवन की सार्थकता प्रमाणित करता है।

पुष्प की अभिलाषा

चाह नहीं, मैं सुरबाला के
गहनों में गूँथा जाऊँ,
चाह नहीं, सम्राटों के शव पर,
हे हरि! डाला जाऊँ,
चाह नहीं, देवों के सिर पर,
चढ़ूँ, भाग्य पर इठलाऊँ,

मुझे तोड़ लेना वनमाली!
उस पथ पर देना तुम फेंक,
मातृ भूमि पर शीश चढ़ाने,
जिस पथ पर जाएँ वीर अनेक।

पर्वत की अभिलाषा

तू चाहे हरि, मुझे स्वर्ण का
मढ़ा सुमेरु बनाना मत,
चाहे मेरी गोद–खोद कर,
मणि–माणक प्रगटाना मत,
लावण्य–लाडली वन देवी का,

लीला–क्षेत्र बनाना मत,
जगती–तल का मल धोने को,
भू हरी भरी कर देने को
गंगा–यमुना मैं बहा सकूँ,
यह देना, देर लगाना मत।।

शब्दार्थ

चाह– इच्छा,
मढ़ा– चारों तरफ से घिरा हुआ,
सुरबाला– अप्सराएँ
मणि–माणक – बहुमूल्य रत्न
इठलाऊँ– गर्व करना
लावण्य– सुन्दरता
जगती तल – मातृ भूमि के चरण
हरि – भगवान
गूँथा– एक धागे से बंधना
सुमेरु– पुराण के अनुसार पृथ्वी के मध्य का ऊँचा पर्वत

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. गंगा का पर्याय शब्द है

(क) कालिन्दी (ख) सूर्यजा

(ग) मन्दाकिनी (घ) कृष्णा

2. पुष्प का पर्यायवाची शब्द नहीं है

(क) निहार (ख) प्रसून

(ग) सुमन (घ) गुल

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

3 पुष्प किसके गहनों में गूंथे जाने की चाह नहीं रखता है?

4 देवताओं के सिर पर चढ़ पुष्प क्या नहीं चाहता है?

5 वनमाली से किस पथ पर फेंक देने का कहता है?

6. पर्वत किससे मढ़ा नहीं बनना चाहता है?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

7 पर्वत मणि–माणक क्यों प्रगटाना नहीं चाहता है?

8 पर्वत गंगा–यमुना बहा कर क्या अभिलाषा रखता है?

9 निम्न को समझाइये ।

स्वर्ण मढ़ा सुमेरू, मणि माणक, वन देवी का लीला क्षेत्र

निबन्धात्मक प्रश्न

10 पुष्प की अभिलाषा' के माध्यम से कवि क्या सन्देश दे रहा है?

11 व्याख्या कीजिए –

चाह नहीं देवों के सिर पर ....

.... जिस पथ पर जाएँ वीर अनेक।

12 कविता को कंठस्थ कर सस्वर सुनाइए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की उत्तर माला

1. **ग**

2. **क**

पाठ—8

पूजन

श्याम नारायण पाण्डेय

कवि परिचय

IM1T1K

जन्म — 1907 ई.
मृत्यु — 1991 ई.

अपनी ओजस्वी वाणी में वीर रस के अनन्य प्रस्तोता श्याम नारायण पाण्डेय का जन्म उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ में हुमराव, मऊ गाँव में हुआ। स्वभाव से सात्विक, हृदय से विनोदी और आत्मा से परम निर्भीक स्वभाव वाले पाण्डेय जी के स्वस्थ पुष्ट व्यक्तित्व में शौर्य, सत्त्व और सरलता का अनूठा मिश्रण है। लगभग दो दशकों से अधिक वे हिन्दी कवि सम्मेलनों में मंच पर अत्यन्त लोकप्रिय एवं समादृत रहे हैं।

कवि ने अपनी काव्य रचना के माध्यम से वीर प्रसूता मेवाड़ तथा वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप के शौर्य, त्याग, आत्म—बलिदान, स्वातन्त्र्य प्रेम एवं जातीय—गौरव भाव को प्रेरक आधार बनाते हुए मध्य कालीन राजपूती मूल्यों को अत्यन्त श्रद्धा, सम्मान, सहानुभूति और पूजा के छन्द पुष्प अर्पित किये हैं। इन्होंने आधुनिक युग में वीर काव्य की परंपरा को खड़ी बोली में प्रतिष्ठित किया है। मृत्यु से तीन वर्ष पूर्व आकाशवाणी गोरखपुर में अभिलेखागार हेतु उनकी आवाज़ में उनके जीवन के संस्मरण रिकार्ड किये गये हैं। पाण्डेय जी को प्रसिद्ध 'जौहर' महाकाव्य पर देव पुरस्कार प्राप्त हुआ था।

कृतियाँ

हल्दीघाटी, जौहर, तुमुल, रूपान्तर, आरती, जय हनुमान, आँसू के कण, गोरा—वध।

पाठ परिचय

संकलित काव्यांश लेखक के 'हल्दी घाटी' महाकाव्य से उद्धृत है। इसमें कवि ने देश हित उत्सर्ग करने वाले वीरों के प्रति श्रद्धा भाव अभिव्यक्त करते हुए देव तीर्थों से अधिक पुण्यदायी चित्तौड़ की भूमि को बताया है। स्वाभिमान और स्त्रीत्व की रक्षार्थ जीवित आग को समर्पित वीरांगनाओं के त्याग व बलिदान की गाथा से कवि भारतीय नारी के पूजनीया स्वरूप को प्रतिष्ठित करता है। अजेय दुर्ग चितौड़ के माध्यम से कवि ने शहीदों के प्रति आदर भाव तो अभिव्यक्त किया ही है, साथ ही उसके प्रति आस्थावान बनने का सन्देश भी दिया है।

पूजन

थाल सजाकर किसे पूजने,
चले प्रात ही मतवाले ।
कहाँ चले तुम राम नाम का,
पीताम्बर तन पर डाले ?
कहाँ चले ले चन्दन, अक्षत, बगल दबाये मृग–छाला ?
कहाँ चली वह सजी आरती, कहाँ चली जूही माला ?
ले मौंजी, उपवीत, मेखला, कहाँ चले तुम दीवाने ?
जल से भरा कमंडलु लेकर, किसे चले तुम नहलाने ?
चले झूमते मस्ती से तुम, क्या अपना पथ आये भूल ?
कहाँ तुम्हारा दीप जलेगा, कहाँ चढ़ेगी माला फूल ?
इधर प्रयाग न गंगासागर, इधर न रामेश्वर काशी ।
कहाँ, किधर है तीर्थ तुम्हारा, कहाँ चले तुम संन्यासी ?
मुझे न जाना गंगासागर, मुझे न रामेश्वर, काशी ।
तीर्थराज चित्तौड़ देखने को मेरी आँखे प्यासी ।
अपने अचल स्वतंत्र दुर्ग पर, सुनकर बैरी की बोली ।
निकल पड़ी लेकर तलवारें, जहाँ जवानों की टोली ।
जहाँ आन पर माँ–बहिनों की, जला–जला पावन होली ।
वीर–मंडली गर्वित स्वर से, जय माँ की जय जय बोली ।
सुन्दरियों ने जहाँ देश–हित, जौहर व्रत करना सीखा ।
स्वतंत्रता के लिए जहाँ के बच्चों ने मरना सीखा ।
वहीं जा रहा पूजन करने, लेने सतियों की पद–धूल ।
वहीं हमारा दीप जलेगा, वहीं चढ़ेगी माला, फूल ।
वहीं मिलेगी शांति वहीं पर, स्वस्थ हमारा मन होगा ।
वीरवरों की पूजा होगी, खड्गों का दर्शन होगा ।
जहाँ पद्मिनी जौहर व्रत कर, चढ़ी चिता की ज्वाला पर।
क्षण भर वही समाधि लगेगी, बैठ इसी मृग–छाला पर।
नहीं रही, पर चिता–भस्म तो होगा ही उस रानी का।
पड़ा कही न कहीं होगा ही, चरण चिह्न महारानी का।
उस पर ही ये पूजा के सामान सभी अर्पण होंगे।
चिता–भस्म–कण ही रानी के दर्शन हित दर्पण होंगे ।

शब्दार्थ

पीताम्बर–पीला वस्त्र, अक्षत–चावल,
मृग छाला– हरिन का चमड़ा, मौंजी–मूंज का बना वस्त्र,
उपवीत– जनेऊ, मेखला– साधु का वस्त्र,
गर्वित– गर्व से ।

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. संन्यासी का तीर्थ स्थल कौन सा है?

    (क) गंगा सागर (ख) रामेश्वरम्
    (ग) चित्तौड़ दुर्ग (घ) काशी

2. पीताम्बर शब्द में कौन सा समास है ?

    (क) बहुब्रीहि (ख) द्विगु
    (ग) द्वन्द्व (घ) कर्मधारय

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

3. कवि पूजन सामग्री किस जगह पर अर्पित करना चाहता है?
4. संन्यासी क्या–क्या पूजन सामग्री लेकर निकला है?
5. निम्न शब्द के पर्याय लिखिए

    तलवार, फूल, मृग, अक्षत, आँख

लघूत्तरात्मक प्रश्न

6. तीर्थराज चित्तौड़ देखने को 'मेरी आँखे प्यासी' पंक्ति से लेखक का आशय स्पष्ट कीजिए।
7. तीर्थ किसे कहते हैं ? धार्मिक भावना के अनुसार प्रमुख तीर्थ कौन–कौन से हैं?
8. 'क्षण भर वहीं समाधि लगेगी' में कवि समाधि लगा कर क्या प्राप्त करना चाहता है?

निबन्धात्मक प्रश्न

9. जौहर व्रत से आप क्या समझते हैं ? पद्मिनी के जौहर की कथा संक्षेप में बताइए।
10. भावार्थ लिखिए–

    (क) अपने अचल स्वतन्त्र .... जय बोली।
    (ख) सुन्दरियों ने जहाँ .... माला फूल।
    (ग) क्षण भर वहीं समाधि .... दर्पण होंगे।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की उत्तर माला

1. **ग**

2. **घ**

पाठ—9

श्री कृष्ण का दूतकार्य

IMAP38

रामधारी सिंह दिनकर

कवि परिचय

जन्म — 1908

मृत्यु — 1974

आधुनिक युग में वीर रस से सराबोर ओजस्वी कविता के प्रमुख कवियों में दिनकर का नाम अग्रगण्य है। उनका जन्म बिहार के सिमरिया में हुआ था। उन्होंने इतिहास, दर्शनशास्त्र और राजनीति विज्ञान का अध्ययन पटना विश्वविद्यालय से किया। रामधारी सिंह 'दिनकर' उपनाम से स्वतंत्रता पूर्व एक विद्रोही कवि के रूप में स्थापित हुए और स्वतन्त्रता के बाद राष्ट्र कवि के नाम से जाने गये। वे छायावादोत्तर कवियों की पहली पीढ़ी के कवि थे।

एक ओर उनकी कविताओं में ओज, विद्रोह, आक्रोश, और क्रान्ति की पुकार है तो दूसरी और कोमल श्रृंगारिक भावनाओं की अभिव्यक्ति है। इन्हीं दो प्रवृत्तियों का चरम उत्कर्ष उनकी 'कुरुक्षेत्र' और 'उर्वशी' नामक कृतियों में मिलता है। 'उर्वशी' को भारतीय ज्ञानपीठ तथा 'कुरुक्षेत्र' को विश्व के 100 सर्वश्रेष्ठ काव्यों में 74 वाँ स्थान दिया गया। वे भारतीय संसद के सदस्य भी रहे हैं। भारत सरकार ने पद्म भूषण से उन्हें विभूषित किया है।

कृतियाँ

हुँकार, रसवंती, सामधेनी, कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी, उर्वशी, परशुराम की प्रतीक्षा, कोमला और कवित्व (काव्य)

राष्ट्र भाषा और राष्ट्रीय एकता, भारत की सांस्कृतिक एकता, संस्कृति के चार अध्याय, शुद्ध कविता की खोज (गद्य)

पाठ परिचय —

सकंलित काव्यांश दिनकरजी के प्रबन्धकाव्य 'रश्मिरथी' से उद्धृत है। इसके माध्यम से कवि ने मानवीय क्षमताओं और साहस के साथ—साथ संघर्षों का जीवन निर्माण में महत्त्व रेखांकित किया है । कवि ने सामयिक सन्दर्भों में भी महाभारत के कथानक को प्रासंगिक बनाने की सूत्रात्मक अभिव्यक्ति की है। कवि ने मानव के आत्मबल से अपने नैसर्गिक गुणों को तराशने का आह्वान किया है। विपत्तियों एवं असुविधाओं में भी हिम्मत रखकर कर्म करने पर ही सफलता और समृद्धि के अनेक उदाहरण प्रस्तुत कर कर्म का सन्देश दिया है।

श्री कृष्ण का दूतकार्य

है कौन! विघ्न ऐसा जग में, टिक सके आदमी के मग में,
खम ठोक ठेलता है जब नर, पर्वत के जाते पाँव उखड़ ।
मानव जब जोर लगाता है,
पत्थर पानी बन जाता है ।
गुण बड़े एक से एक प्रखर, हैं छिपे मानवों के भीतर,
मेंहदी में जैसे लाली हो, वर्तिका बीच उजियाली हो ।
बत्ती जो नहीं जलाता है,
रोशनी नहीं वह पाता है ।
पीसा जाता जब इक्षु–दण्ड, झरती रस की धारा अखंड,
मेंहदी जब सहती है प्रहार, बनती ललनाओं का सिंगार ।
जब फूल पिरोये जाते हैं,
हम उनको गले लगाते हैं ।
कंकड़ियाँ जिनकी सेज सुघर, छाया देता केवल अंबर,
विपदाएँ दूध पिलाती हैं, लोरी आँधियाँ सुनाती हैं ।
जो लाक्षा–गृह में जलते हैं,
वे ही सूरमा निकलते हैं ।
वर्षों तक वन में घूम–घूम, बाधा विघ्नों को चूम चूम,
सह धूप घाम, पानी पत्थर, पांडव आये कुछ और निखर ।
सौभाग्य न सब दिन सोता है,
देखें आगे क्या होता है।
मैत्री की राह बताने को, सबको सुमार्ग पर लाने को,
दुर्योधन को समझाने को, भीषण विध्वंस बचाने को ।
भगवान हस्तिनापुर आये,
पांडव का संदेशा लाये ।
दो न्याय अगर तो आधा दो, पर इसमें भी यदि बाधा हो,
तो दे दो केवल पाँच ग्राम, रक्खो अपनी धरती तमाम ।।
हम वही खुशी से खायेंगे,
परिजन पर असि न उठायेंगे।
दुर्योधन वह भी दे न सका, आशीष समाज की ले न सका,
उलटे, हरि को बाँधने चला, जो था असाध्य, साधने चला।
जब नाश मनुज पर छाता है,

पहले विवेक मर जाता है।
हरि ने भीषण हुँकार किया, अपना स्वरूप–विस्तार किया,
डगमग–डगमग दिग्गज डोले, भगवान कुपित होकर बोले ।
''जंजीर बढ़ाकर साध मुझे,
हाँ–हाँ, दुर्योधन ! बाँध मुझे।''
यह देख गगन मुझ में लय है, यह देख पवन मुझमें लय है,
मुझ में विलीन झंकार सकल, मुझमें लय है संसार सकल ।
सब जन्म मुझी से पाते हैं –
फिर लौट मुझी में आते हैं ।
हित–वचन नहीं तूने माना, मैत्री का मूल्य न पहचाना,
तो ले, मैं भी अब जाता हूँ, अन्तिम संकल्प सुनाता हूँ।
याचना नहीं अब रण होगा,
जीवन, जय, या कि मरण होगा।
टकरायेंगे नक्षत्र–निकर, बरसेगी भू पर वह्नि प्रखर,
फण शेषनाग का डोलेगा, विकराल काल मुँह खोलेगा।
''दुर्योधन रण ऐसा होगा,
फिर कभी नहीं जैसा होगा ।''
भाई पर भाई टूटेंगे, विषबाण बूंद से छूटेंगे,
वायस शृगाल सुख लूटेंगे, सौभाग्य मनुज के फूटेंगे ।
''आखिर तू भू–शायी होगा,
हिंसा का परदायी होगा।''
थी सभा सन्न, सब लोग डरे, चुप थे या थे बेहोश पड़े,
केवल दो नर न अघाते थे, धृतराष्ट्र विदुर सुख पाते थे ।
''कर जोड़ खड़े प्रमुदित, निर्भय,
दोनों पुकारते थे जय–जय ।

शब्दार्थ

खम– बाहुबल, शारीरिक शक्ति	कुपित– क्रोधित
ठेलता– धक्का देकर आगे बढ़ना	जंजीर– लोहे की चेन
प्रखर– तेज	हित वचन– भला चाहने की बात
विघ्न– बाधा,	हुंकार– तेज स्वर
वर्तिका– दीपक की बाती	याचना– भीख/माँग

इक्षु दण्ड– गन्ने का टुकड़ा रण– युद्ध

सुघर– निपुण, कुशल	निकर– समूह
विपदाएँ– मुसीबतें	वह्नि– अग्नि
लाक्षा–गृह– लाख का घर	असाध्य– जिसे साधा न जा सके
विकराल – भयंकर, डरावना	सूरमा– वीर
वायस– कौवा	घाम– धूप(गर्मी)
श्रृगाल– सियार	विध्वंस – विनाश
भीषण – भयानक	परदायी – जिम्मेदार
परिजन – परिवारजन	प्रमुदित – प्रसन्न
असि– तलवार	निर्भय– भय रहित

भू–शायी – पृथ्वी पर गिरा हुआ, मृतक

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. भगवान कृष्ण पाण्डवों का सन्देश लेकर कहाँ गए थे ?

   (क) कुरूक्षेत्र (ख) हस्तिनापुर

   (ग) इन्द्रप्रस्थ (घ) मथुरा

2. संकलित काव्यांश कवि के किस प्रबन्ध काव्य से लिया गया है ?

   (क) हुँकार (ख) परशुराम की प्रतीक्षा

   (ग) रश्मिरथी (घ) कुरूक्षेत्र

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

3. 'केवल दो नर न अघाते थे' पंक्ति के आधार पर उन दोनों महापुरुषों के नाम लिखिए।
4. हस्तिनापुर जाकर कृष्ण ने दुर्योधन को पाण्डवों का क्या सन्देश दिया ?
5. भगवान कृष्ण ने कुपित होकर दुर्योधन से क्या कहा ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

6. ''थी, सभा सन्न, सब लोग डरे .... पुकारते थे जय जय।''

   इस परिस्थिति का अपने शब्दों में वर्णन कीजिये ।

7. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ स्पष्ट करते हुए सार्थक वाक्य बनाइये :–

   प्रखर, अम्बर, असाध्य, विवेक, संकल्प ।

8. ''वर्षों तक वन में घूम–घूम .... होता है ।''

   अ. पाण्डवों को वर्षों तक वन में क्यों घूमना पड़ा ?

ब. उनके सौभाग्य का कब और कैसे उदय हुआ ?

9. ''उल्टे, हरि को बांधने चला .... चला । ''

अ. दुर्योधन कृष्ण को क्यों बाँधने चला ?

ब. यहाँ कृष्ण को असाध्य क्यों कहा गया ?

10. ''जो लाक्षा–गृह में जलते है वे ही सूरमा निकलते है।'' के तात्पर्य को कथा–प्रसंग बताते हुए समझाइये।

निबन्धात्मक प्रश्न

10. निम्नलिखित की प्रसंगपूर्वक व्याख्या कीजिये –

(i) है कौन ! विघ्न ऐसा जग में .... पानी बन जाता है ।

(ii) पीसा जाता जब इक्षु–दण्ड .... हम उनको गले लगाते हैं ।

(iii) हित वचन नहीं तूने माना..........................हिंसा का परदायी होगा।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की उत्तरमाला

1. ख
2. ग

पाठ–10
मेरा जीवन

IHJK4V

सुभद्रा कुमारी चौहान
कवयित्री परिचय

जन्म– 1904

मृत्यु– 1948

सुभद्रा कुमारी चौहान राष्ट्रीय चेतना की सजग कवयित्री रही हैं, अनेक बार जेल यातनाएँ सहने के पश्चात् अपनी अनुभूतियों को कहानी में भी व्यक्त किया। सुभद्रा जी विवाहोपरान्त भी आजीवन राष्ट्र के प्रति समर्पित रहीं। गाँधी जी की विचार धारा से प्रभावित नवोढ़ा सुभद्रा जी ने अपने सारे गहने और विदेशी वस्त्रों का त्याग कर खद्दर की धोती अपना ली।

उनके पति लक्ष्मण सिंह चौहान भी स्वतन्त्रता आन्दोलन में सक्रिय थे। सुभद्रा जी ने काव्य रचना के माध्यम से जनता को स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लेने को प्रोत्साहित किया। फलतः उन्हें गिरफ्तार भी किया गया, किन्तु उनकी सक्रियता बनी रही। सुभद्रा जी की रचनाओं में प्रेम, आनन्द, उल्लास, वीरत्व, देश भक्ति अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँचे मिलते हैं। 28 अप्रैल, 2006 में उनकी राष्ट्र प्रेम की भावना के सम्मान में भारतीय तट रक्षक सेना ने अपने बेड़े के नवीन जहाज का नाम 'सुभद्रा कुमारी चौहान' रखा।

कृतियाँ

बिखरे मोती, उन्मादिनी, सीधे–साधे चित्र (कहानी), मुकुल त्रिधारा (कविता संग्रह), झाँसी की रानी, मेरा जीवन, जलियाँ वाला बाग में बसन्त (प्रसिद्ध कविताएँ)

पाठ परिचय

'मेरा जीवन' शीर्षक कविता में कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान ने आशावादी खुशहाल जीवन को जीने का आह्वान किया है। कवयित्री ने बताया है कि व्यक्ति जीवन में उत्साह, उमंग, आशा, विश्वास और प्रेम का अवलम्बन कर कितने ही कष्टों का सामना करके सुखद जीवन का अनुभव कर सकता है। आधुनिक सन्दर्भों में जीवन की छोटी–छोटी समस्याओं से हताश और निराश जन को सकारात्मक सोच के साथ आनन्दमय जीवन निर्वाह के सूत्र इस कविता के माध्यम से प्राप्त होते हैं।

मेरा जीवन

मैंने हँसना सीखा है,
मैं नहीं जानती रोना;
बरसा करता पल–पल पर
मेरे जीवन में सोना ।
मैं अब तक जान ना पाई
कैसी होती है पीड़ा;
हँस–हँस जीवन में
कैसे करती है क्रीड़ा ।
जग है असार सुनती हूँ,
मुझको सुख–सार दिखाता;
मेरी आँखों के आगे
सुख का सागर लहराता ।
उत्साह, उमंग निरन्तर
रहते मेरे जीवन में,
उल्लास विजय का हँसता
मेरे मतवाले मन में ।
आशा आलोकित करती
मेरे जीवन को प्रतिक्षण
हैं स्वर्ण–सूत्र से वलयित
मेरी असफलता के घन ।
सुख–भरे सुनहले बादल
रहते है मुझको घेरे;
विश्वास, प्रेम, साहस हैं
जीवन के साथी मेरे।

शब्दार्थ

बरसा– बरसना
सोना– स्वर्ण, आनन्द
क्रीड़ा– खेल
उमंग– मौज, आह्लाद
उत्साह – हर्ष के साथ कार्य की तत्परता
पीड़ा – दुःख
असार– व्यर्थ, महत्त्वहीन

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(1) "बरसा करता पल–पल पर मेरे जीवन में सोना"। कवयित्री का "सोना" से अभिप्राय है–

(क) स्वर्ण (ख) कंचन

(ग) आनन्द (घ) आराम

2) ''मैं अब तक जान ना पाई'' कवयित्री क्या न जान पायी ?

(क) खेलना (ख) घूमना

(ग) गाना (घ) पीड़ा

अतिलघूत्रात्मक प्रश्न

(3) 'सुख का सागर' कब लहराता है?

(4) कवयित्री ने असफलता के बादलों को किससे घेर कर रखा है?

(5) कवयित्री ने अपना जीवन साथी किसे बना रखा है?

लघूत्रात्मक प्रश्न

(6) 'आशा आलोकित करती मेरे जीवन को प्रतिक्षण' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

(7) 'मुझको सुख–सार दिखाता' सुभद्रा जी को यह अनुभूति कब होती है ? समझाइये।

(8) असफलता के घन जीवन से कब दूर किये जा सकते हैं ?

निबन्धात्मक प्रश्न

(9) 'मेरा जीवन' कविता का भावार्थ लिखिए।

(10) 'मेरा जीवन' कविता का आधुनिक समय में किस तरह उपयोग किया जा सकता है ? समझाइए।

(11) सुभद्रा कुमारी चौहान की किसी अन्य प्रमुख कविता का संकलन कर लिखिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की उत्तरमाला

1. ग
2. घ

पाठ–11
वीर नारी

सूर्यमल्ल मीश्रण

कवि परिचय

जन्म–1815 ई.

मृत्यु–1863 ई.

राजस्थान की वीर प्रसूता भूमि पर जन्म लेने वाले सूर्यमल्ल मीश्रण का जन्म चारणों की मीसण शाखा के एक प्रतिष्ठित परिवार में बूंदी में हुआ। इनके पिता का नाम चंडीदान था, जो बूंदी–दरबार के प्रधान कवियों में थे। वस्तुतः सूर्यमल्ल मीसण को काव्य प्रतिभा पैतृक परम्परा से प्राप्त हुई थी। उनके पिता ही नहीं पितामह भी डिंगल के श्रेष्ठ कवि थे।

सूर्यमल्ल हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, डिंगल और पिंगल भाषाओं में पारंगत थे। अध्यवसायी होने के कारण इन्होंने काव्य शास्त्र के साथ–साथ इतिहास, व्याकरण, मीमांसा, न्याय शास्त्र, संगीत–दर्शन और ज्योतिष का गम्भीर अध्ययन किया। इन विषयों में इनकी असाधारण पैठ का प्रभाव इनकी रचनाओं में भी यत्र–तत्र देखा जा सकता है। सूर्यमल्ल मीश्रण ओजस्वी कवि होने के साथ–साथ सत्यनिष्ठ और स्वाभिमानी व्यक्तित्त्व के धनी भी थे।

कृतियाँ

वंश–भास्कर, वीर सतसई, बलवंत विलास, राम रंजाट, छंदोमयूख, सती रासो , धातु रूपावलि एवं फुटकर कवित्त, सवैये आदि।

पाठ परिचय

संकलित काव्यांश महाकवि सूर्यमल्ल मीश्रण की लोक प्रसिद्ध कृति 'वीर सतसई' से लिया गया है। यह एक सुविदित तथ्य है कि राजस्थान के वीरों का इतिहास युद्धों और संघर्षों का इतिहास रहा है। ऐसी स्थिति में जिन परिवारों के पुरुष अपना जीवन युद्ध की विभीषिकाओं के मध्य बिताया करते थे, उनके परिवार की स्त्रियों के जीवन–व्यवहार में भी वीरोचित त्याग, स्वाभिमान, दृढ़ता, निर्भीकता आदि गुणों का होना स्वाभाविक था। संकलित दोहों में कवि ने इसी प्रकार की वीर रमणियों का वर्णन कर, राजस्थान की वीर–संस्कृति को अभिव्यक्ति प्रदान की है।

वीर नारी

नरां! न ठीणों नारियां, ईखो संगत अेह
सूरा घर सूरी महळ, कायर कायर गेह।।1।।

सहणी सब–री हूँ सखी! दो उर उळटी दाह
दूध– लजाणो पूत, तिम, बळय–लजाणो नाह।।2।।

वीर–माता

हूँ बळिहारी राणियां, जाया बंस छतीस

सेर सलूणो चूण ले, सीस करै बगसीस।।3।।

हूँ बळिहारी राणियां, थाळ वजाणै दीह
वींद जमी–रा जे जणै, सांकळ–ढीटा सीह।।4।।

हूँ बळिहारी राणिया, भ्रूण सिखावण भाव
नाळो वाढण–री छुरी, झपटै जणियो साव।।5।।

थाळ वजतां हे सखी! दीठो नैण फुळाय
वाजा–रै सिर चेतणो, भ्रूणां कवण सिखाय?।।6।।

नागण–जाया चीटला, सिंघण–जाया साव
राणी जाया नह रुकै, सो कुळ–वाट सुभाव।।7।।

इळा न देणी आप–री, रण–खेतां भिड़ जाय
पूत सिखावै पालणै, मरण–वडाई माय।।8।।

बाळा! चाल म वीसरे, मो थण जहर समाण
रीत मरंता ढील की, ऊठ थियो घमसाण।।9।।

और जहर मुख आवियां, भेजै झट पर–धाम
अतरो अंतर मूझ पै, मारै पडियां काम।।10।।

वीर पत्नी

नह पड़ौस कायर नरां, हेली! वास सुहाय
बळिहारी जिण देसड़ै, माथा मोल बिकाय।।11।।

विण मरियां, विण जीतियां, जे धव आवै धाम
पग–पग चूड़ी पाछटू, तो रावत–री जाम।।12।।

गोठ गया सब गेह–रा वणी अचाणक आय
सिंघण–जायो सिंघणी, लीधी तेग उठाय।।13।।

वीर देवरानी

घोडां चढणो सीखिया, भाभी ! किसड़ै काम?
बंब सुणीजै पारको, लीजै हाथ लगाम।।14।।

भाभी! हूँ डोढ्यां खडी, लोधां खेटक–रूक
थे मनवारो पाहुणां, मेड़ो झाल बँदूक।।15।।

शब्दार्थ

ठीणो= उपालम्भ। ईखो= देखो। सूरां= वीर। सूरी= वीरांगना। सहणी = सहन करना। दाह = जलन। वळय = कंगन। गेह= घर। नाह= स्वामी। सलूणो = नमक युक्त। बगसीस = भेंट। थाळ बजाणै दीह = पुत्र जन्म का दिन। वींद = स्वामी। सांकळ ढीटा = जंजीरों की परवाह न करने वाले। सीह = शेर। भ्रूण= गर्भस्थ शिशु। वाढण–री छुरी= काटने की छुरी।

सावः= शावक। दीठो = देखना।   नैण फुळाय = आँखें फाडकर। वाजां–रे = बाज पक्षी को। चीटला= सपोला, साँप का बच्चा। कुळ वाट = कुल परम्परा। इळा= पृथ्वी। वाळा = बच्चा, बालक। वीसरे= भूलना। म = मत, नहीं। रीत = रीति, परम्परा। ढ़ील= देरी। थियो = ठन जाना। घमसाण = भीषण युद्ध। अतरो = इतना। पडियां= पड़ने पर। नह = नहीं। वास= रहना। देसड़ै= देश पर। धव = दौड़ता हुआ। धाम= घर। पाछटूं = बिखेर दूँ। रावत–री= राजपूत की। जाम = जायी हुई, पैदा हुई। गोठ= सामूहिक भोज। गेह–रा = घर के। लीधी तेग उठाय = तलवार उठा ली। बंब= नगाड़ौ। पारको= दूरी पर से। लगाम= वल्गा, घोड़े की रास। डोढ़यां= ड्यौढ़ी। लोधां = धारण किये हुए। खेटक= ढ़ाल। रूक= तलवार। मनवारो= मनुहार, स्वागत। पाहुणां = अतिथि (यह शब्द यहाँ बिना बुलाये आये शत्रु के लिए प्रयुक्त हुआ है।)

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'वळय–लजाणो नाह' से आशय है–

   (क) दूध को लजाने वाला पुत्र
   (ख) चूडियों को लजाने वाला पति
   (ग) युद्ध से भागने वाला पति
   (घ) युद्ध में जीतने वाला पति

2. 'माथा मोल बिकाय' से कवि क्या अभिप्राय है?

   (क) सिरों का व्यापार होना
   (ख) सिर कटवा देना
   (ग) अभिमान में सिर का बलिदान कर देना
   (घ) स्वामी के अन्न का बदला सिर देकर चुकाना

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

3. वीरों और कायरों के घर की स्त्रियों के स्वभाव में अन्तर बताइये।
4. 'दूध लजाणो पूत' से कवि का क्या आशय है?
5. सिंह किस चीज की परवाह नहीं करते?
6. 'चीटला' और 'साव' में क्या अन्तर है?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

7. वीर नारी को करूँ–सी दो बातें असहनीय हैं?
8. क्षत्रिय बालक जन्म के समय नाल के काटने की छुरी की ओर क्यों झपटता है?
9. वीर माता अपने पुत्र को पालने में क्या संस्कार देती है?
10. 'वाळा! चाल म वीसरे' कहकर वीर माता ने कुल की किस परम्परा को न भूलने की बात कही है ?

निबन्धात्मक प्रश्न

11. निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

(क) 'इला न देणी आप री .... मरण–वडाई माय।''

(ख) '' विण मरियां, विण जीतियां .... रावत–री जाम।''

(ग)'' गोठ गया सब गेह–रा .... लीधी तेन उठाय।''

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की उत्तर माला:

1. (ख)
2. (घ)

कक्षा–9 सड़क सुरक्षा

सड़क सुरक्षा का ज्ञान – मिलता है जीवन दान

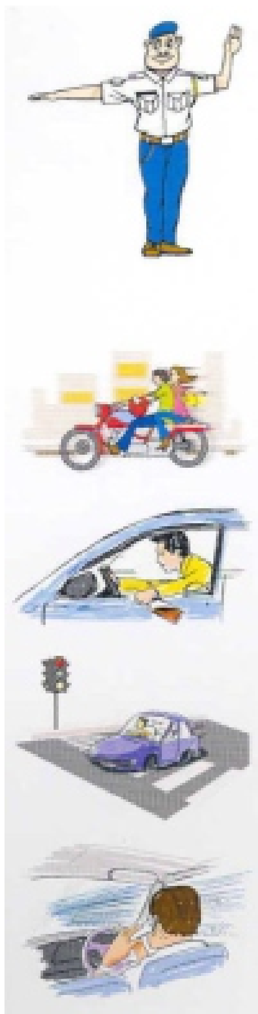

पाठ्यक्रम :

1. कक्षा आठ में सीखी गई सड़क सुरक्षा सम्बन्धित बातों को दोहरानां

2. सड़क दुर्घटनाओं के कारणों का विष्लेशण करना –
   - युवा वर्ग में तीव्र गति से वाहन चलाने की आदतं
   - षराब पीकर गाड़ी चलानां
   - लाल बत्ती की परवाह न करके आगे निकल जानां
   - मोबाइल फोन पर बातें करनां
   - गाड़ी की उचित देखभाल न करने पर उसमें खराबी होना, ब्रेक फेल होना, टायर फटना आदिं
   - बालिग होने से पहले बिना ड्राइविंग लाइसेंस के गाड़ी चलानां

3. सड़क दुर्घटना से बचने के उपाय –
   - सड़क सुरक्षा के नियम विनियमों की जानकारी का प्रचार करें
   - माता–पिता नाबालिग बच्चों को गाड़ी न चलाने दें तथा उनके द्वारा की जाने वाली गतिविधियों का ध्यान रखें
   - सड़क सुरक्षा के नियमों का उल्लंघन करने वालों को समझाएँ
   - गाड़ी की नियमित रूप से देखभाल करें
   - गाड़ी की गति पर नियंत्रण करें
   - बच्चों को प्राथमिक चिकित्सा का प्रषिक्षण दें

कहानी

राजू छुट्टी के दिन अपने पड़ोस के मित्र अरविन्द के साथ साइबर कैफ़े जाता थां वहाँ वे दोनों कार रेस लगाने वाली वीडियो गेम खेला करते थें राजू को कार चलाने का बहुत षौक थां नाबालिग होने के कार ण उसके पिता उसे गाड़ी नहीं चलाने देते थें वीडियो गेम खेलते हुए उसे लगता कि वह सचमुच कार चला रहा है और गेम में जीतने पर खुषी से चिल्लाने लगतां

एक दिन अरविन्द ने राजू से पूछा, '' क्या तुम सचमुच कार चला सकते हो?''

हाँ, मैं कार चला सकता हूं मुझे कार चलाने के बारे में सब पता हैं लेकिन पापा तो मुझे अपनी कार को हाथ तक लगाने नहीं देतें'' राजू ने लंबी साँस लेते हुए कहां ''पर राजू , तुम्हारे पापा सही करते हैं क्योंकि अभी हम इतने बड़े नहीं हुए कि कार चला सकें'' अरविंद ने उसे समझाते हुए कहां

''पर मेरे कमलेष्वर अंकल का बेटा सोमू कार चलाता हैं वह भी तो 13 वर्श का हैं मैंने उसे अपने ड्राइवर की बगल में बैठकर कार चलाते हुए देखा हैं तो फिर मैं कार क्यों नहीं चला सकता?'' राजू ने कहां '' पर राजू ड्राइवर के साथ बैठकर कार चलाने और अकेले कार चलाने में फर्क होता हैं अगर तुम चाहो तो तुम मेरे ड्राइवर से कार चलाना सीखने के लिए अपने पापा से पूछ सकते हों'' अरविंद ने कहां

''पर मेरे पापा तो ऑफिस के काम से बाहर गए हैं वे 15 दिन बाद लौटेंगें'' राजू इतना कहकर चुप हो गयां अरविंद ने राजू को चुप बैठे देखा तो बोला, ''तुम उदास न हो, हम चुपचाप मेरे ड्राइवर से कार चलाना सीखेंगें अभी तो हमारे स्कूल की भी छुट्टियाँ हैं'' अरविंद की बात सुनकर राजू बहुत खुष हो गया और बोला, ''थैंक्स यार! यह तो बहुत ही अच्छा आइडिया हैं मैं तुम्हारे ड्राइवर से कार चलाना सीख सकता हूँ''

अरविंद ने ड्राइवर से पूछा तो वे गाड़ी सिखाने के लिए तैयार हो गयां उनके हाँ करने पर राजू खुषी से फूला नहीं समा रहा था क्योंकि कार चलाने का उसका सपना पूरा होने वाला थां दोनों मित्र ड्राइवर भैया, जिनका नाम संजय था, के साथ गाड़ी सीखने के लिए मालरोड गएं ड्राइवर ने पहले उन दोनों को कार के अलग– अलग पुर्जों, जैसे– ब्रेक, गियर बॉक्स, स्टीयरिंग व्हील, सीट बेल्ट के बारे में बताया उसके बाद वह खुद कार चलाने लगा और बारी–बारी से उन दोनों को भी कार चलाने के लिए स्टीयरिंग व्हील देने लगां परन्तु उसने उन दोनों को पूरी तरह कार चलाने के लिए कभी नहीं दीं राजू ने घर में किसी को भी अरविंद के ड्राइवर से कार चलाना सीखने के बारे में नहीं बतायां

अगले दिन रविवार थां स्कूल की छुट्टियाँ भी खत्म हो रहीं थीं अरविंद का ड्राइवर काम पर नहीं आयां राजू निराष हुआ पर दूसरे ही क्षण उसने अरविंद से कहा '' चलो हम दोनों अपने आप कार चलाने चलते हैं तुम्हारे पापा अभी वापिस नहीं आए हैं और हम दोनों कार चलाना भी सीख गए हैं'' राजू ने कहां

'' नहीं, अभी हम अपने आप कार नहीं चला सकते

और हमारे पास नाबालिग होने के कारण ड्राइविंग लाइसेंस भी नहीं हैं'' अरविंद ने कहां यह सुनकर राजू बहुत उदास हो गयां राजू को उदास देखकर अरविंद ने अकेले कार चलाने के लिए हाँ कर दीं दोनों ने अपने आप कार निकाली और घर के पास सर्विस लेन में चलाने लगें पहले अरविंद ने कार चलाईं उसे कार चलाते देख राजू बोला, ''अरे वाह ! अरविंद तुम तो बहुत अच्छी कार चलाना सीख गए हों'' यह सुनकर अरविंद खुष हो गया और तेज कार चलाने लगां राजू ने स्टीयरिंग व्हील पर हाथ रखा हुआ थां षाम हो गई थी पर सड़क की बत्तियाँ अभी नहीं जली नहीं थीं कुछ लोग षाम की सैर कर रहे थें राजू ने देखा दो व्यक्ति सड़क के बीचोंबीच धीरे–धीरे चल रहे थें अरविंद ने हॉर्न दबाया, परन्तु वह नहीं बजां ''अरें ! अरविंद क्या कर रहे हो ?'' तब तक कार उन व्यक्तियों तक पहुंच गई थीं

''ब्रेक लगाओ अरविंद !'' राजू चिल्लायां

अरविंद ने नीचे देखकर ब्रेक लगाने की कोषिष की तो पैर एक्सलरेटर पर जा पड़ा और कार और तेज़ हो गईं उनमें से एक व्यक्ति जो सड़क की ओर चल रहा था कार की चपेट में आ गया और कार के पहिए के साथ घिसटता चला गयां अरविंद बौखला गयां राजू ने कार को मोड़कर सीधा करने की कोषिष की तो वह एक पीछे से आते हुए स्कूटर से टकरा गई और फिर डिवाइडर से टकराकर रुक गईं

राजू और अरविंद को गाड़ी के एयर बेग खुल जाने से ज्यादा चोट नहीं लगी, परंतु व्यक्ति को कार से टक्कर लगी थी उसकी कमर की हड्डी टूट गईं

राजू और अरविंद दोनों को पुलिस ने घटना स्थल पर आकर हिरासत में ले लियां उन दोनों के घर के लोग पुलिस थाने गए और ज़मानत पर छोड़ दियां राजू और अरविंद को इस दुर्घटना से बहुत बड़ा धक्का लगा और उन्होंने बालिग होने तक कभी भी अकेले बिना ड्राइविंग लाइसेंस के कार न चलाने का वायदा कियां

प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. साइबर कैफ़े में जाकर दोनों मित्र क्या करते थे ?
2. दोनों मित्रों का गाड़ी चलाना सही था या नहीं ? कारण सहित बताइएं
3. अरविंद समय पर ब्रेक क्यों नहीं लगा पाया ?
4. व्यक्ति के कार से टकराने पर क्या हुआ ?
5. इस कहानी से आपको क्या सीख मिलती है ?

गतिविधियाँ

1. 'सड़क सुरक्षा' पर पोस्टर बनाकर अपनी कक्षा में तथा स्कूल के प्रांगण में लगाइएं
2. बच्चों को इंटरनेट के लाभ तथा नुकसान के बारे में बताइएं
3. अपने पड़ोस तथा आस पास के इलाके में जाकर लोगों को सड़क सुरक्षा के बारे में बताइएं
4. यदि कोई भी गाड़ी चलाने का प्रषिक्षण देने वाली संस्था बिना ठीक से प्रषिक्षण दिए लाइसेंस दिलवाती है तो उसकी षिकायत करते हुए एक पत्र लिखिएं

5. अखबारों में प्रतिदिन आने वाली सड़क दुर्घटनाओं के चित्र और खबरें एकत्रित करके स्कूल और कक्षा के नोटिस बोर्ड पर लगाइएं

6. दुर्घटना स्थल पर दी जाने वाली प्राथमिक चिकित्सा के बारे में बताइए और उसका अभ्यास कराइएं

7. कक्षा को दो समूहों में बांटिएं ''पुलिस के भय से दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति की सहायता करनी चाहिए या नहीं'' विशय पर दोनों समूहों से आपस में चर्चा करके अपने विचार बताने के लिए कहिएं

अभ्यास :

(अ) निम्नलिखित का उपयोग क्यों किया जाता है ?
हैलमेट, सीट–बेल्ट, ब्रेक, डिक्की, साइलेंसर, साइड इंडीकेटर

(ब) 'कर' प्रत्यय लगाकर तीन षब्द लिखें
थककर ....
....

(स) कहानी में से क्रिया विषेशण षब्द छांटिएं

(द) निम्नलिखित षब्दों से असंगत षब्दों पर **x** का निषान लगाइएं
बौनट, दुर्घटना, सीट बेल्ट, ब्रेक, पुलिस

मोटर यान कानून 1988–धारा 4

मोटर यान चलाने के संबंध में आयु सीमा

1) कोई भी व्यक्ति, जो अठारह वर्श से कम आयु का है, किसी सार्वजनिक स्थान में मोटर यान नहीं चलाएगां परंतु कोई व्यक्ति सोलह वर्श की आयु का होने के पष्चात् किसी सार्वजनिक स्थान में (50 सी.सी. से अनधिक क्षमता वाली) मोटर साइकिल चला सकेगां

2) धारा 18 के उपबंधों के अधीन रहते हुए, कोई भी व्यक्ति, जो बीस वर्श से कम आयु का है, किसी सार्वजनिक स्थान में परिवहन यान नहीं चलाएगां

3) कोई षिक्षार्थी– अनुज्ञप्ति उस वर्ग के लिए, जिसके लिए उसने आवेदन किया है, उस यान को चलाने के लिए किसी व्यक्ति को तब तक नहीं दी जाएगी जब तक कि वह इस धारा के अधीन उस वर्ग के यान को चलाने के लिए पात्र नहीं हैं

d{kk&9 I Mel I jq{kk

I Mel I jq{kk dk Kku & feyrk gSt hou nku

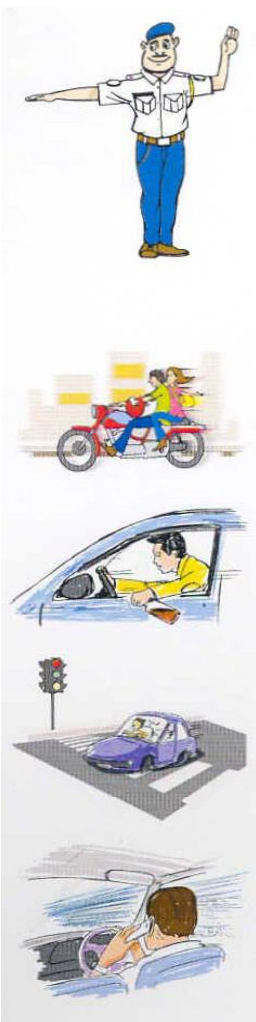

i kB; e %

1- कक्षा आठ में सीखी गई सड़क सुरक्षा सम्बन्धित बातों को दोहराना।

2- सड़क दुर्घटनाओं के कारणों का विश्लेषण करना –
- – युवा वर्ग में तीव्र गति से वाहन चलाने की आदत।
- – शराब पीकर गाड़ी चलाना।
- – लाल बत्ती की परवाह न करके आगे निकल जाना।
- – मोबाइल फोन पर बातें करना।
- – गाड़ी की उचित देखभाल न करने पर उसमें खराबी होना, ब्रेक फेल होना, टायर फटना आदि।
- – बालिग होने से पहले बिना ड्राइविंग लाइसेंस के गाड़ी चलाना।

3- सड़क दुर्घटना से बचने के उपाय –
- – सड़क सुरक्षा के नियम विनियमों की जानकारी का प्रचार करें।
- – माता–पिता नाबालिग बच्चों को गाड़ी न चलाने दें तथा उनके द्वारा की जाने वाली गतिविधियों का ध्यान रखें।
- – सड़क सुरक्षा के नियमों का उल्लंघन करने वालों को समझाएँ।
- – गाड़ी की नियमित रूप से देखभाल करें।
- – गाड़ी की गति पर नियंत्रण करें।
- – बच्चों को प्राथमिक चिकित्सा का प्रशिक्षण दें।

dgkuh

राजू छुट्टी के दिन अपने पड़ोस के मित्र अरविन्द के साथ साइबर कैफ़े जाता था। वहाँ वे दोनों कार रेस लगाने वाली वीडियो गेम खेला करते थे। राजू को कार चलाने का बहुत शौक था। नाबालिग होने के कारण उसके पिता उसे गाड़ी नहीं चलाने देते थे। वीडियो गेम खेलते हुए उसे लगता कि वह सचमुच कार चला रहा है और गेम में जीतने पर खुशी से चिल्लाने लगता।

एक दिन अरविन्द ने राजू से पूछा, '' क्या तुम सचमुच कार चला सकते हो?''

हाँ, मैं कार चला सकता हूं। मुझे कार चलाने के बारे में सब पता है। लेकिन पापा तो मुझे अपनी कार को हाथ तक लगाने नहीं देते।'' राजू ने लंबी साँस लेते हुए कहा। ''पर राजू , तुम्हारे पापा सही करते हैं। क्योंकि अभी हम इतने बड़े नहीं हुए कि कार चला सकें।'' अरविंद ने उसे समझाते हुए कहा।

''पर मेरे कमलेश्वर अंकल का बेटा सोमू कार चलाता है। वह भी तो 13 वर्ष का है। मैंने उसे अपने ड्राइवर की बगल में बैठकर कार चलाते हुए देखा है। तो फिर मैं कार क्यों नहीं चला सकता?'' राजू ने कहा। '' पर राजू ड्राइवर के साथ बैठकर कार चलाने और अकेले कार चलाने में फ़र्क होता है। अगर तुम चाहो तो तुम मेरे ड्राइवर से कार चलाना सीखने के लिए अपने पापा से पूछ सकते हो।'' अरविंद ने कहा।

''पर मेरे पापा तो ऑफिस के काम से बाहर गए हैं। वे 15 दिन बाद लौटेंगे।'' राजू इतना कहकर चुप हो गया। अरविंद ने राजू को चुप बैठे देखा तो बोला, ''तुम उदास न हो, हम चुपचाप मेरे ड्राइवर से कार चलाना सीखेंगे। अभी तो हमारे स्कूल की भी छुट्टियाँ हैं।'' अरविंद की बात सुनकर राजू बहुत खुश हो गया और बोला, ''थैंक्स यार! यह तो बहुत ही अच्छा आइडिया है। मैं तुम्हारे ड्राइवर से कार चलाना सीख सकता हूँ।''

अरविंद ने ड्राइवर से पूछा तो वे गाड़ी सिखाने के लिए तैयार हो गया। उनके हाँ करने पर राजू खुशी से फूला नहीं समा रहा था क्योंकि कार चलाने का उसका सपना पूरा होने वाला था। दोनों मित्र ड्राइवर भैया, जिनका नाम संजय था, के साथ गाड़ी सीखने के लिए मालरोड गए। ड्राइवर ने पहले उन दोनों को कार के अलग– अलग पुर्जों, जैसे– ब्रेक, गियर बॉक्स, स्टीयरिंग व्हील, सीट बेल्ट के बारे में बताया उसके बाद वह खुद कार चलाने लगा और बारी–बारी से उन दोनों को भी कार चलाने के लिए स्टीयरिंग व्हील देने लगा। परन्तु उसने उन दोनों को पूरी तरह कार चलाने के लिए कभी नहीं दी। राजू ने घर में किसी को भी अरविंद के ड्राइवर से कार चलाना सीखने के बारे में नहीं बताया।

अगले दिन रविवार था। स्कूल की छुट्टियाँ भी खत्म हो रहीं थीं। अरविंद का ड्राइवर काम पर नहीं आया। राजू निराश हुआ पर दूसरे ही क्षण उसने अरविंद से कहा '' चलो हम दोनों अपने आप कार चलाने चलते हैं। तुम्हारे पापा अभी वापिस नहीं आए हैं और हम दोनों कार चलाना भी सीख गए हैं।'' राजू ने कहा।

'' नहीं, अभी हम अपने आप कार नहीं चला सकते

और हमारे पास नाबालिग होने के कारण ड्राइविंग लाइसेंस भी नहीं है।'' अरविंद ने कहा। यह सुनकर राजू बहुत उदास हो गया। राजू को उदास देखकर अरविंद ने अकेले कार चलाने के लिए हाँ कर दी। दोनों ने अपने आप कार निकाली और घर के पास सर्विस लेन में चलाने लगे। पहले अरविंद ने कार चलाई। उसे कार चलाते देख राजू बोला, ''अरे वाह ! अरविंद तुम तो बहुत अच्छी कार चलाना सीख गए हो।'' यह सुनकर अरविंद खुश हो गया और तेज कार चलाने लगा। राजू ने स्टीयरिंग व्हील पर हाथ रखा हुआ था। शाम हो गई थी पर सड़क की बत्तियाँ अभी नहीं जली नहीं थी। कुछ लोग शाम की सैर कर रहे थे। राजू ने देखा दो व्यक्ति सड़क के बीचोंबीच धीरे–धीरे चल रहे थे। अरविंद ने हॉर्न दबाया, परन्तु वह नहीं बजा। ''अरें ! अरविंद क्या कर रहे हो ?'' तब तक कार उन व्यक्तियों तक पहुंच गई थी।

''ब्रेक लगाओ अरविंद !'' राजू चिल्लाया।

अरविंद ने नीचे देखकर ब्रेक लगाने की कोशिश की तो पैर एक्सलरेटर पर जा पड़ा और कार और तेज़ हो गई। उनमें से एक व्यक्ति जो सड़क की ओर चल रहा था कार की चपेट में आ गया और कार के पहिए के साथ घिसटता चला गया। अरविंद बौखला गया। राजू ने कार को मोड़कर सीधा करने की कोशिश की तो वह एक पीछे से आते हुए स्कूटर से टकरा गई और फिर डिवाइडर से टकराकर रुक गई।

राजू और अरविंद को गाड़ी के एयर बेग खुल जाने से ज्यादा चोट नहीं लगी, परंतु व्यक्ति को कार से टक्कर लगी थी उसकी कमर की हड्डी टूट गई।

राजू और अरविंद दोनों को पुलिस ने घटना स्थल पर आकर हिरासत में ले लिया। उन दोनों के घर के लोग पुलिस थाने गए और ज़मानत पर छोड़ दिया। राजू और अरविंद को इस दुर्घटना से बहुत बड़ा धक्का लगा और उन्होंने बालिग होने तक कभी भी अकेले बिना ड्राइविंग लाइसेंस के कार न चलाने का वायदा किया।

प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1- साइबर कैफ़े में जाकर दोनों मित्र क्या करते थे ?
2- दोनों मित्रों का गाड़ी चलाना सही था या नहीं ? कारण सहित बताइए।
3- अरविंद समय पर ब्रेक क्यों नहीं लगा पाया ?
4- व्यक्ति के कार से टकराने पर क्या हुआ ?
5- इस कहानी से आपको क्या सीख मिलती है ?

गतिविधियाँ

1- 'सड़क सुरक्षा' पर पोस्टर बनाकर अपनी कक्षा में तथा स्कूल के प्रांगण में लगाइए।
2- बच्चों को इंटरनेट के लाभ तथा नुकसान के बारे में बताइए।
3- अपने पड़ोस तथा आस पास के इलाके में जाकर लोगों को सड़क सुरक्षा के बारे में बताइए।
4- यदि कोई भी गाड़ी चलाने का प्रशिक्षण देने वाली संस्था बिना ठीक से प्रशिक्षण दिए लाइसेंस दिलवाती है तो उसकी शिकायत करते हुए एक पत्र लिखिए।

5. अखबारों में प्रतिदिन आने वाली सड़क दुर्घटनाओं के चित्र और खबरें एकत्रित करके स्कूल और कक्षा के नोटिस बोर्ड पर लगाइए।
6. दुर्घटना स्थल पर दी जाने वाली प्राथमिक चिकित्सा के बारे में बताइए और उसका अभ्यास कराइए।
7. कक्षा को दो समूहों में बांटिए। ''पुलिस के भय से दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति की सहायता करनी चाहिए या नहीं'' विषय पर दोनों समूहों से आपस में चर्चा करके अपने विचार बताने के लिए कहिए।

अभ्यास :

.v.%o निम्नलिखित का उपयोग क्यों किया जाता है ?
हैलमेट, सीट–बेल्ट, ब्रेक, डिक्की, साइलेंसर, साइड इंडीकेटर

.c%o 'कर' प्रत्यय लगाकर तीन शब्द लिखें।
थककर ....
....

.I.%o कहानी में से क्रिया विशेषण शब्द छांटिए।

.n%o निम्नलिखित शब्दों से असंगत शब्दों पर **x** का निशान लगाइए।
बौनट, दुर्घटना, सीट बेल्ट, ब्रेक, पुलिस

मोटर यान कानून 1988–धारा 4

मोटर यान चलाने के संबंध में आयु सीमा

1) कोई भी व्यक्ति, जो अठारह वर्ष से कम आयु का है, किसी सार्वजनिक स्थान में मोटर यान नहीं चलाएगा। परंतु कोई व्यक्ति सोलह वर्ष की आयु का होने के पश्चात् किसी सार्वजनिक स्थान में (50 सी.सी. से अनधिक क्षमता वाली) मोटर साइकिल चला सकेगा।

2) धारा 18 के उपबंधों के अधीन रहते हुए, कोई भी व्यक्ति, जो बीस वर्ष से कम आयु का है, किसी सार्वजनिक स्थान में परिवहन यान नहीं चलाएगा।

3) कोई शिक्षार्थी– अनुज्ञप्ति उस वर्ग के लिए, जिसके लिए उसने आवेदन किया है, उस यान को चलाने के लिए किसी व्यक्ति को तब तक नहीं दी जाएगी जब तक कि वह इस धारा के अधीन उस वर्ग के यान को चलाने के लिए पात्र नहीं है।